प्रस्तुत पुस्तक श्री सज्झाय संग्रह मे जिन महानुभावों ने द्रव्य सहायता प्रदान की उनकी शुभ नामावली

राशि	नाम			स्थान
१०१)	ज्ञान पूजन का			
१०१)	श्रीमान् गुलाबचन्दजी मुकनचंदजी गोलेछा,			फलोदी ।
१०१)	श्रीमान् जोगराजजी बडेर की धर्मपत्नी,		राजोबाई,	धुलिया ।
१०१)	,, लक्ष्मीचदजी गोलेछा की	,,	आसीबाई,	बागबहारा ।
१०१)	,, नेमीचदजी श्री श्रीमाल की	,,	ठेलाबाई,	,,
१०१)	,, राणुलालजी गोठी की	,,	जेठीबाई,	खरियार रोड ।
५१)	,, मीन्नालालजी चतुर मुहता की मातेश्वरी राजोबाई			,,
५१)	,, माणकचदजी वेद की धर्मपत्नी चम्पाबाई,			,,
३१)	,, कोठारी भाई गुजराती,			,,
२५)	,, नाथालाल भाई,			,,
४१)	श्रीमती छोटीबाई तथा उनकी मातेश्वरी पुंगलिया,			,,
२१)	श्रीमान् पेमराजजी मालु			,,
५१)	श्रीमान् दीपचदजी सीघी की धर्मपत्नी लुणीबाई,			कुसुमकसा ।
१५)	,, कन्हैयालालजी लुणीया की	,,	आसीबाई,	,,
५१)	,, वक्तावरमलजी श्री श्रीमाल की	,,	जमनाबाई,	महासमुन्द ।
२१)	,, शंकरलालजी गोलेछा,			,,
५१)	,, ताराचन्दजी बोथरा की धर्मपत्नी,			नवापारा राजिम
२५)	,, धर्मचदजी बोथरा की	,,	कमलाबाई	,,
२५)	,, जमनालालजी बोथरा की	,,	छोटीबाई	,,
२५)	,, भीखमचंदजी मोहनोत की	,,	सुखदेवबाई	खैरागढ
२५)	,, गुलाबचदजी ,, की	,,	सुरजबाई,	,,
२१)	,, पन्नालालजी ,, की	,,	जोरावरबाई,	,,
२५)	,, संपतलालजी लुणीया की	,,		राजनादगाव
२५)	,, फुलचदजी सेठीया की	,,	गोगाबाई,	फलोदी
१५)	,, मिश्रीलालजी गोलेछा की	,,	डाईबाई,	,,

॥ सुखसागर भगवत जिन हरि आनंद सद्गुरुभ्यो नमः ॥

* प्राचीन अर्वाचीन सज्झाय संग्रह *

★ संग्राहिका ★

पूज्यपाद गणाऽधीश्वर श्रीमान् सुखसागरजी महाराज
साहब के वर्त्तमान पट्टधर प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद गुरुवर्य्य
वीर पुत्र श्रीमान् जिन आनन्द सागर सूरीश्वर जी
महाराज साहब की आज्ञानुयायिनी, प्रवर्तिनी
जी श्रीमती पुण्य श्री जी महाराज साहिबा की
शिष्या श्रीमतीजी हीरश्रीजी महाराज सा०
की शिष्या रत्न विदुषी रंभाश्रीजी

प्रकाशक

संग्राहिका साध्वीजी रम्भाश्रीजी
के सदुपदेश से आर्वी
आदि शहरों के भाविक
भक्तों द्वारा प्रदत्त

द्रव्य से—

जोगराजजी गुलाबचन्दजी गुलेच्छा मु० फलोदी।

प्रथमवार
प्रति १०००

मूल्य
सदुपयोग

वीर संवत् २४८७
वि० संवत् २०१७

(१५) ❀ श्री स्थूलिभद्र की सज्झाय ❀

❀ श्री महिमा प्रभ सूरि कृत ❀

योग ध्यान ध्यान में जोडी ताली, हाथ ग्रही जय माल,
स्थूलिभद्र योगीश्वर आगे बोले कोशा बाल,
बोलो नाँजी बोलो नाँजी बोलो नांजी,
स्थूलिभद्र वालमजी प्रीतलडी खटके बोलो नांजी ॥१॥

अण बोले इहां केमज सरसे, प्रेमनो कांटो खूंचे,
आमण दामण देखी मुझने, पाडोसी सहुं पूछे
बोलो नांजी ॥२॥

मा आगल मोसाल वखाणो, हूँ गुण जाणुं तोरा,
एक घडी रिसावी रहती, त्यांरे थाता दोहिला बोलो नांजी ॥३॥

एक वांझणी ने बेटो मोटो, तो साचो केम प्रीछो,
तेम वेश्यानी संगे आवी, संयम रागने इच्छो बोलो नाँजी. ॥४॥

वाय झकोले डोले दीवो, अग्नि वी पिघलाये,
तेम नारी संगे व्रत न रहे, आखिर हांसी थाये बोलो नांजी ॥५॥

सूका पान सेवाल ने खाता, वनवासी ने योगी,
तो पण नारी दर्शन देखी, काम तणा थया रागी बोली नांजी ॥६॥

मुनिवर नी मुद्रा लेई बैठा, वली षट् रस पण खावा,

★ प्रकाशकीय निवेदन ★

प्रस्तुत संग्रह विदुषी साध्वीरत्न श्रीमती रंभाश्रीजी महाराज द्वारा संग्रहीत है। उन्होंने इसमें कई दुर्लभ सज्झायों को सम्मिलित किया है। सभी प्रकार की रुचिवालों के लिए यह संग्रह समान रूप से उपयोगी है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन महानुभावों ने द्रव्य सहायता प्रदान की है उनको मैं धन्यवाद देता हूं। मैं साध्वी श्रीमती सज्जनश्री जी महाराज का विशेष रूप से आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के प्रूफ संशोधन में अपना काफी अमूल्य समय दिया।

आशा है पाठकगण इससे लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

फलोदी
मेरुत्रयोदशी
(ऋषभ निर्वाण दिवस)

भवदीय--
गुलाबचंद गुलेच्छा

ऊंच नीच कुले भिक्षाए अटतो, लेतो शुद्ध आहार जी,
सोहनकार तणेरे घर आयो, मुनि दीठो सोनार जी
श्रेणिक ॥२॥

भावे वांदी ते ऊठीने, भला पधार्या आरज जी,
खबर देवण घरमाहीं पेठो, ऊभा रह्या ऋषि राजजी ॥३॥
सोवन जव तिहां मूक्या हूँतां, ते सहुं गीलिया कुंचजी,
सोवन जव सोनारे न देखी, एशो, थयो पर पंच जी
श्रेणिक. ॥४॥

जव पाछा आपो मुझ ऋषिजी, मकरो एवडो लोभ जी,
ऋद्धि छोडी ने तुमे व्रत लीधो, म गमो संजम शोभजी
श्रेणिक. ॥५॥

नाम प्रकाश्यो नहीं पक्षीनो, आणी करुणा साधजी,
सोनारे घर माहीं तेडी, माथ वींटाण्यो वाधजी
श्रेणिक. ॥६॥

तावडा सुं तेज सुकाणो, अति हि पीडाणो शीशजी,
ते वेदना सगली आसहीं, पिण न आणी मन रीष जी
श्रेणिक. ॥७॥

आंख पडी वेहुं धरती छिटकीने, पाम्यो केवल ज्ञान जी,
मेतारज ऋषि मुगते पेहोंता, दया तणो ए नाण जीश्रेणिक. ॥८॥
धन धन मोटा मुनी मेतारज, जीव दया प्रति पालजी,
कहे जिन हर्ष सदा पाय प्रणमुं, प्रहउठी त्रण काल जी
श्रेणिक. ॥९॥

———

★ समर्पण ★

प्रातः स्मरणीया परमोपकारिका महा महोदया सद्गुण ज्ञान सरिता अनेक गुण रत्न मंजूषा एवं परम आदरणीया दीक्षा शिक्षा दातेश्वरी मातेश्वरी मम पूज्येश्वरी श्रीमती विदुषी लाल-श्रीजी म० सा० श्रीमती रतिश्रीजी म० सा० श्रीमती राजश्रीजी म० सा० ।

पूज्ये भगवति ! अज्ञान अन्धकार पूर्ण मेरे जीवन को ज्ञान ज्योति से प्रकाशमय बनाने के लिये आपश्री ने अनुपम प्रभाव-शाली उपदेशों द्वारा मुझे ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप नौका का अमूल्य दान प्रदान कर जो असीम उपकार किया है उससे मैं भवान्तरों में भी ऋणमुक्त न हो सकूंगी ।

पूज्येश्वरि ! आपकी विद्वता, धीरता गम्भीरता, शान्तिप्रियता, मधुर भाषिता, भव भीरुता, सहिष्णुता, समयज्ञता, मितभाषिता विनयशीलता, दयालुता और कार्य दक्षता आदि अलौकिक विशद् गुणों से आकर्षित होकर यह (सज्झाय-संग्रह) नाम की लघु पुस्तक सादर सविनय आपश्री के कर कमलों में समर्पण करती हूँ । शिवम्

भवदीया चरणाश्रिता

वीर शासन सेविका रम्भाश्री

अन्न जल देवा ते मुझने, छो प्रभु दीन दयाल ।
ध्यान धरूं जिन राजनुं, छे प्रभुजी नी छाय
म्हारा मां. ॥८॥

हीर विजय गुरू हीरलो, वीर विजय गुण गाय ।
विनय विजय गुरु राजियो, तेहना वन्दुं नित्य पाय
म्हारा मां. ॥९॥

इति

---

(४१) ★ श्री जय भूषण मुनि की सज्झाय ★

※ ज्ञान विमल कृत ※

(तर्ज—नमो नमो खदक महामुनि)

नमो नमो जय भूषण मुनि, दूषण नहीं लगार रे ।
शोषण भवजल सिंधुना, पोषण पुन्य प्रचार रे नमो. ॥१॥

कीर्ति भूषण कुल अंबरी, भासण भाण समान रे ।
कोशंबी नयरी पति, माय स्वयंप्रभा नाम रे नमो. ॥२॥

परणी ने निज घर आवता, सखा सवि परिवार रे ।
जयंधर केवली वांदीया, निसुणी देशना सार रे नमो. ॥३॥

२५)	श्रीमती मचलबाई बोथरा,		रायपुर
११)	,, पानीबाई लुणीया,		राजनांदगांव
१०)	श्रीमती कमलाबाई एव ताराबाई कोठारी,		महासमु द
११)	श्रीमान् कनैयालालजी गोलेछा की धर्मपत्नी	खमाबाई,	राजनांदगाव
११)	,, हीरालालजी लुणावत की ,,	सोनीबाई,	,,
१०)	,, गुलराजजी वेद की ,,	जमनाबाई,	,,
१०)	,, राणुलालजी लुणीया की ,,	ठगियाबाई,	,,
१०)	,, वृद्धिचंदजी लुणीया की ,,		,,
६)	श्रीमती ढेलाबाई की म तेश्वरी		,,
७)	श्रीमान् लक्ष्मीलालजी गोलेछा,		,,
७)	एक गुप्त श्राविका,		,,
५)	श्रीमती जीवणीबाई बरदिया,		,,
५)	,, सुन्दरबाई गोलेछा,		,,
५)	श्रीमान् गुमानमलजी वेद की मातेश्वरी		,,
५)	,, धुड़मलजी दुगड़ की ,,		,,
५)	,, बालचदजी कोठारी की ,,		,,
२१)	श्रीमती चचल देवी बैद,		फलोदी
११)	श्रीमान् जवरीमलजी,		खैरागढ
७)	,, चपालालजी झाबख की धर्मपत्नी		,,
५)	,, विजेलालजी मोहनोत की ,,		,,
११)	,, आईदानजी,		कुसुमकसा
७)	श्रीमती आसीबाई की मातेश्वरी लूणावत,		,,
६)	श्रीमान् लुणकरणजी सींघी,		,,
११)	,, मोहनलालजी कानू गा की धर्मपत्नी	चचल देवी	रायपुर
११)	,, जीवनलालजी लोकड की ,,	अनोपी बाई,	,,
७)	,, श्रीचदजी लूणावत की मातेश्वरी,		,,
५)	श्रीमती मखाणीया बाई गोलेछा,		,,
५)	,, चपाबाई,		,,
४)	श्रीमान् सुखलालजी कानूंगा,		,,

११) ,, पुखराजजी बोथरा की धर्मपत्नी कमलाबाई, नवापारा राजिम
११) ,, जेठमलजी बंगाणी की ,, बधीबाई, ,,
११) ,, गुलराजजी गोलछा की ,, जमनाबाई, खरियार रोड
११) ,, बमीलालजी बैद की ,, ,,
११) ,, मदनचंदजी गोलेछा ,,
५) श्रीमती खमाबाई, रायपुर
५) ,, भीखीबाई कोचर दुर्ग
५) ,, गेनाबाई खेतिया

विषय-सूची

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
१ मगल व प्रार्थना	१
२ श्री धन्ना अनगारनी सज्झाय	३
३. पृथ्वीचन्द्रनी सज्झाय	६
४ श्री सुकुमालिकानी सज्झाय	१६
५ श्री सुरप्रिय मुनि की सज्झाय	२०
६ श्री कलावती का चोढालिया	२६
७ श्री नन्दीषेण मुनि की सज्झाय	३५
८. जम्बू स्वामी की सज्झाय	३८
९. प्रभजना कन्या की सज्झाय	४३
१०. खंधक मुनि की सज्झाय	५०
११ सुबाहुकुमार की सज्झाय	५२
१२. वज्रस्वामी की सज्झाय	५५
१३. स्थूलिभद्र स्वामी की सज्झाय	५७
१४ श्री स्थूलिभद्र स्वामी की सज्झाय	५९
१५ स्थूलिभद्रजी की सज्झाय	६५
१६ श्री स्थूलिभद्र की सज्झाय	६८
१७ स्थूलिभद्रजी की सज्झाय	७०
१८ स्थूलिभद्रजी की सज्झाय	७२
१९ स्थूलिभद्रजी की सज्झाय	७३
२०. श्री मेतारज मुनि की सज्झाय	७६
२१. श्री मेतारज ऋषि की सज्झाय	७७
२२. श्री भरतचक्रवर्ती की सज्झाय	७९
२३. नेम राजुल की सज्झाय	८०
२४. राजुल और रहनेमी की सज्झाय	८२

२५. श्री नेम राजुल की सज्झाय ८४
२६. अम्बिका सती नी सज्झाय ८६
२७. श्री वर्द्धमान तप की सज्झाय ८६
२८. वैराग्य पदनी सज्झाय ६०
२६. श्री नेमनाथ राजुल की सज्झाय ६१
३०. श्री वैराग्यपद सज्झाय ६३
३१. ढंढणऋषि की सज्झाय ६६
३२. अरणक मुनिनी सज्झाय ६७
३३. सीतासती की सज्झाय ६८
३४. सनत्कुमार चक्री की सज्झाय १००
३५. सुलसा सती नी सज्झाय १०२
३६. अमरकुमार की सज्झाय १०३
३७. श्री पचमआरा की सज्झाय १०६
३८. श्री छठा आरानी सज्झाय ११२
३६. श्री सिद्धनी सज्झाय ११३
४०. श्री गोतमस्वामी की सज्झाय ११५
४१ श्री मदन मजूषानी सज्झाय ११७
४२. श्री जयभूषण मुनि की सज्झाय ११८
४३. नागीला की सज्झाय ११६
४४, देवकीना छै पुत्रो की सज्झाय १२२
४५. श्री महावीर स्वामी की सज्झाय १२५
४६ पडिक्कमणनां फलनी सज्झाय १२८
४७ सोलह स्वप्न की सज्झाय १३०
४८. आठ मद नी सज्झाय १३३
४६. मृगापुत्र की सज्झाय १३५
५०. मृगापुत्र की सज्झाय १४०
५१. श्री गजसुकुमार की सज्झाय १४३
५२ श्री गजसुकुमार की सज्झाय १४५
५३ गजसुकुमार मुनि की सज्झाय १४७

५४. मेघरथ राजा की सज्झाय १४६
५५. श्री सनतकुमार चक्रवर्तीनी सज्झाय १५३
५६. श्री जम्बूस्वामी की सज्झाम १५६
५७. श्री सुभद्रा की सज्झाय १५८
५८. श्री शालिभद्रजी की सज्झाय १६२
५६. श्री नागेश्वरी ब्राह्मणी की सज्झाय १६८
६०. चन्दनबाला की सज्झाय १७४
६१. रुक्मिणी की सज्झाय १७६
६२. बाहुवलि की सज्झाय १७८
६३ श्री भरत बाहुवली की सज्झाय १८०
६४ सती चेलणा राणी की सज्झाय १८१
६५ श्री सती सुनन्दा की सज्झाय १८३
६६. श्री गौतम पृच्छा सज्झाय १८४
६७. श्री मुनि खधक कुमार की सज्झाय १८८
६८ श्री मनक मुनि नी सज्झाय १६०
६६. श्री कलावती की सज्झाय १६२
७० श्री कलावतीनी सज्झाय १६७
७१ श्री रेवतीनी सज्झाय १६६
७२. श्री अंजना सतीनी सज्झाय २०१
७३ श्री कमलावती की सज्झाय २०४
७४. नेमिनाथ भगवान नी सज्झाय २०१
७५. कामलता की सज्झाय २११
७६. पर्युषण की सज्झाय २१५
७७ ढाल दूसरी सज्झाय २१७
७८ ढाल तीसरी सज्झाय २१८
७६ श्री देवानदा की सज्झाय २२०
८० पर्यूषण की सज्झाय २२२
८१. श्री मेघकुमार की सज्झाय २२३
८२ श्री प्रसन्नचन्द ऋषि की सज्झाय २२६

८३. श्री द्विमुख राजा की सज्झाय — २२७
८४. करकंडू प्रत्येक बुद्धनी सज्झाय — २२६
८५. अष्टमी की सज्झाय — २३०
८६. दूज की सज्झाय — २३१
८७. पांच समिति की ढालो — २३२
८८. ढाल दूसरी — २३३
८६. तीजी ढाल — २३४
६०. ढाल चौथी — २३५
६१ ढाल पांचमी — २३६
६२. पाच व्यवहार की ढाल — २४२
६३ श्री क्षमाछत्रीशी प्रारम्भ — २४५
६४. क्रोध की सज्झाय — २५१
६५. श्री उपदेश सित्तरी की सज्झाय — २५२

विभाग दूसरा — २६२

१. उपदेशिक सज्झाय — २६३
२. जीवनेकायानो संवाद-सज्झाय — २६४
३. माया की सज्झाय — २६७
४. श्री कर्म ऊपर सज्झाय — २६६
५. श्री वणजारा की सज्झाय — २७०
६ मनकी सज्झाय — २७२
७. पुण्यफल नी सज्झाय — २७३
८. तेरह काठियो की सज्झाय — २७५
६. जीवको शीखामण की सज्झाय — २७७
१०. निद्रा की सज्झाय — २७८
११. इलापुत्र की सज्झाय — २७६
१२. आत्महित सज्झाय — २८०
१३. समकित की सज्झाय — २८१
१४. वैराग्योत्पादक सज्झाय — २८२

१५	कर्म की सज्झाय	२८३
१६	मान की सज्झाय	२८६
१७	माया (कपट) की सज्झाय	२८७
१८	वैराग्य की सज्झाय	२८८
१९	नवकारवालीनी सज्झाय	२८९
२०.	विणभा'ा की सज्झाय	२९०
२१.	उपदेशिक सज्झाय	२९२
२२.	उपदेशिक पद	२९३
२३.	वैराग्य की सज्झाय	२९३
२४.	एकत्व भावना सज्झाय	२९५
२५.	कर्म की सज्झाय	२९६
२६	उपदेशिक पद	२९७
२७.	वैराग्य पद	२९८
२८	वैराग्य पद	२९९
२९	वैराग्य पद	३००
३०.	काया का पद	३००
३१	चेतन की सज्झाय	३०१
३२	काया की रेल का पद	३०२
३३	उपदेशिक पद	३०३
३४.	सज्झाय	३०४
३५.	,,	३०५
३६.	उपदेशिक सज्झाय	३०६
३७	आत्मनिष्टात्मक पद	३०७
३८.	उपदेशिक पद	३०८
३९	उपदेशिक सज्झाय	३०९
४०	उपदेशिक पद	३१०
४१	कर्मपर पद	३११
४२.	उपदेशिक सज्झाय	३१२
४३.	उपदेशिक सज्झाय	३१३

४४. उपदेशिक पद ३१४
४५. अपर सज्झाय ३१५
४६. उपदेशिक पद ३१६
४७. सज्झाय ३१७
४८. आत्मस्वरूप पद ३१८
४९. सज्झाय ३१९
५०. उपदेशिक सज्झाय ३२०
५१. जीव के ऊपर पद ३२१
५२. श्री चन्दराजा अने गुणावली राणी का पत्र ३२२
५३. द्वितीय गुणावली का लिखित पत्र ३२७

ॐ अर्हम् ।

(श्रीमत् सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः)

।। नमस्ते = वीतरागाय ।।

अनेकों उत्तम कविशेखर रचित

* सज्झाय संग्रह *

मङ्गल व प्रार्थना

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

सिंदूर प्रकरस्तपः करिशिरः क्रोडे कषायाटवी–
दावार्चिर्निचयः प्रबोधदिवसप्रारम्भसूर्योदयः ।
मुक्तिस्त्रीवदनैककुंकुमरसः श्रेयस्तरो पल्लव–
प्रोल्लासः क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्वप्रभोः पातुवः ॥१॥

अर्हन्तो ज्ञान भाजः, सुरवर महिताः सिद्धिसौधस्थ सिद्धाः ।
पंचाऽचार प्रवीणाः प्रगुण गणधराः पाठकाश्चागमानाम् ।
लोके लोकेशवंद्याः सकलयति वराः, साधुधर्माभिलीनाः ;
पंचाप्यते सदाप्ता विदधतु कुशलं विघ्ननाशं विधाय ॥२॥

छे प्रतिमा मनोहारिणी दुःखहरी, श्रीवीर जिणन्दनी ;
भक्तों ने छे सर्वदा सुखकरी, जाने खिली चान्दनी ।

आ प्रतिमां नां गुण भाव धरीने, जे माणसों गायछे ;
पामी सर्वदा सुखने जगतमां, मुक्ति पुरी जाय छे ॥३॥
आयो शरणे तुमारे जिनवर ! करजो आशापूरी हमारी ;
नाऽयो भव पार म्हारो तुम विन जग में सार ले को हमारी।
गायो जिनराज आजे हर्ष अधिक थी, परम आनन्द कारी;
पायो तुम दर्श नाशे भव भव भ्रमणा, नाथ ! सर्वे हमारी ॥४॥
त्हाराथी न समर्थ अन्य दीननो, उद्धारनरो प्रभु ।
म्हाराथी नहीं अन्य पात्र जगमां, जोता जडे हे विभु !
मुक्ति मंगलस्थान ! तोय मुझने, इच्छा न लक्ष्मी तणी ;
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने, तो तृप्ति थाये घणी ॥५॥

❀ प्रार्थना ❀

ॐ अर्हम् जय हे महावीर, शासन नायक गुण गम्भीर ।
त्रिशला नन्दन श्री महावीर, शासन नायक गुण गम्भीर । टेर
जय जय शान्तिनाथ भगवान, पतित पावन तुम हो स्वाम ।
मन वांछित देवो अभिराम, विश्वशान्ति का अविचल धाम ॥१॥
घर घर वर्ते मंगल माल, हो त्रिशला के नन्दन लाल ।
काटो कर्मों की तुम जाल, शरणे आये है रखवाल ॥२॥
सद्बुद्धि देना भगवान्, करना मेरा तुम कल्याण ।
जिन अरिहंत तुम्हारा नाम, वीतराग पद पाये स्वाम ॥३॥
जय जय हो जिनवर भगवान संघ के नायक गुण मणि खाण ।
जय जय हो हरि पूज्य प्रधान, कान्तिसागर गावे गुणगान् ॥४॥

———

॥ ॐ ॥

॥ सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

सज्झाय संग्रह

श्री धन्ना अणगारनी सज्झाय

ज्ञानसागरजी कृत

दोहा

कर्म रूप अरि जीतवा, धीर पुरुष महावीर

प्रणमु तेहना पाय कमल, अे कचित साहस धीर ॥१॥

गुण धन्ना अणगारना, कहेता मनने कोड ।

सान्निध्य करजो शारदा, जापे थापे जोड़ ॥२॥

"ढाल पहली"

(राग—नणदल बिन्दली ले)

काकंदी नगरी केरो, जितशत्रु राय भलेरो हो राय जिन गुणरागी,

भुज बले करी अरीयण जीते, तेजे करी दिणयर दीपे हो रा. ॥१॥

तेह नयरी मांहे निराबाह, वसे भद्रा सार्थ वाह हो सुन्दर सोभागी,

घर सोवन बत्तीस कोड़ी, कोई न करे तेहनी जोड़ी हो सु. ॥२॥

तस सुत धन्नो इणे नामें, अनुक्रमे जोवनवय पामे हो सु.

एक लगने बत्तीश सारी, परणावी माये नारी हो सु. ॥३॥

सोवन वरणी शशिवयणी, मृगनयणी ने मन हरणी हो सु.

लही विलसे सुख संयोग, दोगुन्दकनी परे भोग हो सु. ॥४॥

अे हुवे श्रीजिन महावीर, विचरन्ता गुण गंभीर हो जिनजी सोभागी,
आव्या काकंदीनो उद्याने, पहोंत्या प्रभु निर्वद्य थाने हो ॥५॥
वनपाले विनव्यो राय, आव्या धर्मी जन सुखदाय हो जि.
त्रणलोक तणा हितकारी, भविजनने तारणहारी हो जि. ॥६॥
प्रीतिदान हरखशुं देई,
चतुरंगी दल साथे लेई हो राय जिनगुण रागी,
पांच अभिगमे जिन वन्दे, सुणे देशना मन आनंदे हो राय. ॥७॥
परिवारशुं पाले धन्नो, आव्यों वन्दण ते एक मन्नो हो सु.
सुणी देशना अमिय समाणी,
वैरागी थयो गुण खाणी हो सुन्दर सो. ॥८॥
घेर आवी अनुमति मांगे, धन्नो संयमने रागे हो कुंवर सोभागी,
इम सुणी ने मूर्छा खाई, जागी कहे भद्रा माई हो कुंवर सो. ॥९॥
तुं जोवनवय सुकुमाल, भोगव भोग रसाल कुवर सो. ।
अनुमति कोई न देशे, पाडोशी संयम लेशे हो कुवर सो. ॥१०॥
अे हवे बत्तीश तिहां आवे,
भामिनी भरी भरी आंखे हो पिउडा सोभागी ।
गद् गद् वचने कहे गुणवंती, आगल खोला नांखंती हो पिउडा ॥११॥
बखशो गुनाह अबला नार, तुमची प्रीतम प्राणाधार हो पिउडा ।
विण अपराधे व्हाला एवो, कां द्यो टाढो मारएवोहो पिउडा ॥१२॥
भर जोवन मां भमता मूको, छेहदो कुण माटे चूको हो हिउडा ।
शाने तो परणी पियु अमने,
सहु लोकतणी मली साखे हो पिउडा ॥१३॥

पद्मिनी ने पीड़ा उपाई, कोणे कहो मुगति पाई हो पिउडा ।
जो छोडो छो तो पियु अमने,
अवगुण कोइ दाखो अमनेहो पि. ॥१४॥
पालव झाली प्रेमे एह , गोरी कहे सुणो गुणगेह हो पिउडा ।
उंडो जाणी ने आदरियो एह छीलर थईने दियो छेह हो पि. ॥१५॥

"ढाल दूजी"

कहे धन्नो कामिनी प्रत्ये, काज न आवे कोय रे ।
परभव जाताँ जीवने, म्हें वात विचारी जोय रे कहे. ॥१॥
माता पिता बंधव सहु, पुत्र कलत्त परिवार रे,
स्वारथना सहु को सगा, मलिया छे संसार रे कहे. ॥२॥
नारी नरकनी दीवडी, दुर्गतिनी दातारो रे,
वीरे वखाणी वखाणमां, में आज सुण्यों अधिकारोरे कहे. ॥३॥
तिणे रति अे घरवासमां, हुँ रहेता नथी लहंतो रे,
सुख पामीश संयम थकी, अरिहंतनी आण वहंतो रे कहे ॥४॥
माता ने मानिनी हवे, वड वैरागी जाणे रे,
अनुमति आपे दीक्षा तणी, प्रीति न होय पराणे रे कहे ॥५॥

"ढाल तीजी"

(राग—वीरा चांदला)

गई भद्रा लेई भेटणुं, नृप जितशत्रु पास,
नृपति ने प्रणमी कहे, अवधारो अरदासो रे वैरागी थयो ॥१॥
म्हारो नानडियो सुकुमाल रे, वीर वचन सुणी,
चारित्र ले उजमालो रे, वैरागी थयो ॥२॥

तिणे प्रभु तुमने विनवुं, करवा ओच्छव काज,
छत्र चामर दियो राउला, वली नोवत नो साज रे वै. ॥३॥
ते निसुणी राजा कहे, सुणो भद्रा ससनेह,
ओच्छव धन्नानो अमें, करशुं दीक्षानो अेहरे वै. ॥४॥
जितशत्रु राजा हवे, आप थई असवार,
भद्रा ने घेर आवियो, जिहाँ छे धन्नोकुमार रे वै. ॥५॥
धन्ना ने न्हवरावी ने, पहेरावी शणगार,
सहस वाहन सुखपालमां, बेसार्यो वेणीवार रे वै. ॥६॥
छत्र धरी चामर करी, वाजां विविध प्रकार,
आडंबर थी आवीयो, जिन कने वनह मोभारो रे वै. ॥७॥
तिहाँ शिविका थी उतरी, कूंण इशाने आय,
आभरण देई मात ने, लोच करे चित्त लाय रे वै. ॥८॥
वांदी भद्रा वीर ने, कहे सुणो करुणावन्त,
देऊं हूँ भिक्षा शिष्यनी, बोहरो त्रिभुवन कंतोरे वै. ॥९॥
श्रीमुखे श्री जिनवीरजी, पंच महाव्रत एव,
धन्ना ने त्रिभुवन धणी, उच्चरावे ततखेव रे वै. ॥१०॥
पंच महाव्रत उच्चरी, कहे धन्नो अणगार,
आज थकी कल्पे हवे, सुणो प्रभु जगदाधार रे वै. ॥११॥
छठ तप आंबिल पारणे, करवो जावज्जीव,
ईण मांही ओछो नहीं, अे तप करवो सदीव रे वै. ॥१२॥
भद्रा वांदी ने वल्या, करता वीर विहार,
नगरी राजगृही अन्यदा, पहोंत्या बहु परिवार रे वै. ॥१३॥

भाव सहित भक्ति करी, श्री श्रेणिक भूपाल,
वांदी ने श्री वीर ने, पूछे प्रश्न रसाल रे गौ. ॥१४॥
चौद सहस अणगारमां, कुण चढते परिणाम,
कहो प्रभुजी ! करुणा करी, निरुपम तेहनुं नाम रे गौ. ॥१५॥

"ढाल चौथी"

(राग—निंद्रडी वेरण हुइ रही)

श्रेणिक ! सुण सहस चौदमां, गुणवन्तो हो गिरुश्रो छे जेह के,
चारित्रीयो चढते गुणे, तपे बलियों हो तपसी मांहि श्रेह के
ते मुनिवर जग वन्दीये ॥१॥
एक धन्नो हो धन्नो अणगार के, काया ते कीधी कोयलो,
बल्यो बावल हो जाणे हुवो छार के ते मुनिवर ।नत्य ॥२॥
छट्ठ तप आंबिल पारणे, लीये नीरस हो विरस तिम आहार के,
माखी न वंछे तेहवो, दीये आणी हो देहने आधार के ते. ॥३॥
वेलीथी नीलुं तुंबडुं, तोड़ी ने हो तड़के धर्यो जेम के,
सूकवी लीलरियो बली, ते ऋषिनुं हो माथुं थयु तेम के ते. ॥४॥
आंखो बे ऊंडी तगतगे, तारा तणी हो परे दीसे तास के,
होठ बे सूका अति घणा, जीभ सूकी हो पानडलुं पलाश के ते. ॥५॥
जूंजुई दीसे आंगुली, कोणी वे हो निसरीया तिहां हाड के,
जंघा बे सूकी कागनी, दीसे जाणे हो के जीरण ताड के ते. ॥६॥
आंगुली पगनी हाथनी, दीसे सूकी हो जिम मगनी शींग के,
गांठा गणाग्रे जुजुआ, तपसी मांही हो धोरी श्रेह धींग के ते. ॥७॥
गोचरी वाटे खडखडे, हिंडंता हो जेहना दीसे हाड के,
ऊंटना पगला सारिखां, दोय आसन हो बैठा थई खाड के ते.॥८॥

पिंडी सूकी पग तणी, थई जाणे हो धमण सरखी चाम के,
चाले ते जीव तणे वले, पण कायनी हो जेने नहीं हाम के ते. ॥९॥
परिहरी माया कायनी, सोसवाने हो रुधिर ने मांस के,
अनुत्तरोववाई सूत्रमाँ, फरी वीरे हो ऋषिनीप्रशंस के ते. ॥१०॥
गुण सुणी श्री अणगारना, देखवाने हो जाय श्री श्रेणिक राय के,
हिंडे ते वनमां शोधता, ऋषि ऊभो हो पण
नवि ओलखाय के ते. ॥११॥
जोतां रे जोतां ओलख्या, जाई वन्दे हो ऋषिना पाय भूप के,
जेवुं वीरे वखाण्युं तेहवुं, दीठुं हो तपसीनुं रूप के ते. ॥१२॥
वान्दी स्तवी राजावल्यो, ऋषि कीधो हो अणसण तिहाँ एव के,
वैभारगिरी एक मासनो, पालीने हो चवी उपन्यो देव के ते ॥१३॥

'ढाल पांचवीं"

(राग—धन धन सम्प्रति०)

धन धन धन्नो ऋषीश्वर तपसी, गुण तणो भण्डार जी,
नाम लिया थी पाप पणासे, लहीये भवनो पार जी, धन० ॥१॥
तपीया नौ जब अणशन सीधुं, भण्डो पगरण लेईजी,
साधु आवी जिनने वन्दे, त्रण प्रदक्षिणा देइ जी, धन० ॥२॥
प्रभुजी शिष्य तमारो तपसी, जे धन्नो अणगार जी,
हमणां काल कियो तिण मुनिवरे, अमें आव्या इणवार जी धन०॥३॥
सांभली वृद्ध वजीर प्रभुना, श्री गोतम गणधार जी,
पूछे प्रश्न प्रभुने वांदी, कर जोड़ी तिणवार जी धन० ॥४॥
कहो प्रभुजी धन्नो ऋषि तपसी, ते चारित्र नव मास जी,
पालीने ते किण गति पहोंतो, तेह प्रकाशो उल्लास जी धन० ॥५॥

सुण गोतम ! श्रीवीर पयंपे, जिहाँ गति स्थिति श्रीकार जी,
सर्वार्थसिद्ध नाम विमाने, पाम्यो सुर अवतार जी, धन० ॥६॥
आयु सागर तेत्रीशनुं पाली, चवी विदेह उपजशे जी,
आर्यकुल अवतरीने केवल, पामी सिद्ध निपज शेजी धन० ॥७॥
एवा साधुतणा पाय वन्दी, करीये जन्म प्रमाण जी,
जिह्वा सफल होवे गुण गातां, पामीए कल्याण जी धन० ॥८॥
रही चोमासुं सत्तर एकवीशे, खंभात गाम मोझार जी,
श्रावण वदी तिथि बीज तणे दिन, भृगुनंदन भलो वारजी धन॥९॥
मुज गुरु श्रीमुनि माणेकसागर, पामी तास पसाय जी,
इम अणगार धन्नाना हरखे, ज्ञानसागर गुण गायजी धन० ॥१॥

॥ समाप्त ॥

★ पृथ्वीचन्द्रनी सज्झाय ★

जीवविजयजी कृत

"दोहा"

शासन नायक सुख करु, वंदी वीर जिणंद,
पृथ्वीचन्द्र मुनि गाईशुं गुणसागर गुणकंद ॥१॥
उत्तमना गुण गावतां, गुण आवे निज अंग,
वात घणी वैराग्यनी, सांभलजो मनरंग ॥२॥
शंख कलावती भवथकी, भव एकवीश संबंध,
उत्तरोत्तर सुख भोगवी, एकवीश में भवे सिद्ध ॥३॥

पण एकवीशमा भव तणो, अल्प कहुं अधिकार,
सांभलजो सन्मुख थई, आतमने हितकार ॥४॥

"ढाल पहली"

(राग—कन्त तमाखू परिहरो)

नगरी अयोध्या अति भली, राज्य करे हरिसिंह मेरे लाल,
प्रिया पद्मावती तेहने, सुख विलसे गुणगेह मेरे लाल
चतुर सनेही सांभलो ।
सर्वार्थथी सुर च्यवी, तस कुखे अवतार मेरे लाल,
रूपकला गुण आगलो, पृथ्वीचन्द्र कुमार मेरे लाल चतुर० ॥२॥
समपरिणामी मुनि समो, निरागी निरधार मेरे लाल,
पिता परणावे आग्रहे, कन्या आठ उदार मेरे लाल चतुर ॥३॥
गीत विलापनी समगणे, नाटक कायकलेश मेरे लाल,
आभूषण तनु भार छे, भोगने रोग गणेश मेरे लाल चतुर ॥४॥
हुं निज तातने आग्रहे, संकट पड़ियो जेम मेरे लाल,
पणप्रतिबोधुं ए प्रिया, मात पिता पण एम मेरे लाल च० ॥५॥
जो सवि संजम आदरे, तो थाये उपकार मेरे लाल,
एम शुभध्याने गुणनिलो, पहोंच्यो भवन मोझार मेरे लाल च०॥६॥
नारी आठने इम कहे, सांभलो गुणनी खाण मेरे लाल,
भोगवता सुख भोग छे, विपाक कड़वा जाण मेरे लाल च० ॥७॥
किंपाक फल अति मधुर छे, खाधे छंडे प्राण मेरे लाल,
तेम विषय सुख जाणजो, एवी जिननी वाण मेरे लाल च० ॥८॥
अग्नि जो तृप्ति इन्धने, नदीए जलधि पुराय मेरे लाल,
तो विषय सुख भोग थी, जीव ए तृप्त थाय मेरे लाल च० ॥९॥

भव भव ममता जीवड़े, जेह आरोग्यां थान मेरे लाल,
ते सवि एकठां जो करे, तो सवि गिरीवर मान मेरे लाल च.॥१०॥
विषय सुख परलोक में, भोगविया इण जीव मेरे लाल,
तोपण तृप्तज नविथयो, काल असंख्य अतीत मेरे लाल च.॥११॥
चतुरा समजो सुन्दरी, मुंझो मत विषय ने काज मेरे लाल,
संसार अटवी उत्तरी, लहीये शिवपुर राज मेरे लाल च.॥१२॥
कुंवरनी वाणी सांभली, बूझी चतुर सुजाण मेरे लाल,
लघुकर्मी कहे साहेबा, उपाय कहो गुणखाण मेरे लाल च. ॥१३॥
कुंवरजी कहे संयम ग्रहो, अद्भुत एह उपाय मेरे लाल,
नारी कहे एम विसरजो, संयम वार न थाय मेरे लाल च. ॥१४॥
कुंवर कहे पडखो तुमे, हमणा नहीं गुरु जोग मेरे लाल,
सद्गुरु जोगे धारशुं संयम छोड़ी भोग मेरे लाल च. ॥१५॥
मात पिता मन चिंतवे, नारीने वश नवि थाय मेरे लाल,
उलटी नारी वश करी, कुंवरनुं गायुं गाय मेरे लाल च. ॥१६॥
जो हवे राजा कीजिये तो, भणशे राज्य ने काज मेरे लाल,
नरपति इम मन चिंतवी, थापे कुंवरने राज मेरे लाल च.॥१७॥
पिता उपरोधे आदरे, चिंते मोहना घाट मेरे लाल,
पाले राज्य वैरागियो, जोतो गुरुनी वाट मेरे लाल च.॥१८॥
राज सभाए अन्यदा, पृथ्वीचन्द्र सोहन्त मेरे लाल,
इण अवसर व्यवहारीयो, सुधन नामे आवंत मेरे लाल च. ॥१९॥
राजा पूछे तेहने, कोण कोण जोया देश मेरे लाल,
आश्चर्य दीठूं जे तुमे, भाखो तेह विशेष मेरे लाल च. ॥२०॥

शेठ कहे सुणो साहिबा, एक विनोदनी बात मेरे लाल,
सांभलतां सुख उपजे, भाखु ते अवदात मेरे लाल च. ॥२१॥

दोहा

कौतुक जोता बहु गयो, काल अनादि अनन्त,
पण ते कौतुक जगवडु, सुणतो आतम शान्त ॥१॥
कौतुक सुणतां जे हुए, आतमनो उपकार,
वक्ता श्रोता मन गहगहे, कौतुक तेह उदार ॥२॥

"ढाल दूजी"

(राग—सुरमणि सम०)

आव्या गजपुर नयरथी, तिहाँ बसे व्यवहारी रे लो,
रत्नसंचय तस नाम छे, सुमंगला तस नारी रे लो ॥१॥
गुणसागर तस नंदनो, विद्या गुणनो दरियो रे लो,
गोखे बैठो अन्यदा, जुए ते सुख भरियो रे लो ॥२॥
राजपथे मुनि मलपता, दीठा शम भरियो रे लो,
ते देखी शुभ चिंतवे, पूरव चरण सांभरियो रे लो ॥३॥
मात पिता ने अेम कहे, सुखियो मुझ कीजे रे लो,
संयम लेशुं हूं सही, आज्ञा मुझ दीजे रे लो ॥४॥
माता पिता कहे नानडा, संयमे उमावो रे लो,
तो पण परणो पद्मणी, अम मन हरखावोरे लो ॥५॥
संयम लेजो ते पछी, अन्तराय न करशुं रे लो,
विनयी वात अंगीकरी, पछी संयम वरशुं रे लो ॥६॥
आठ कन्याना तातने, इम भाखे व्यवहारी रे लो,
अमसुत परणवा मात्र थी, थाशे संयम धारी रे लो ॥७॥

इभ्य सुणी मन चमकिया, वर बीजो करशु रे लो,
कन्या कहे निज तातने, आभव अवर न वरशुं रे लो ॥८॥
जे करशे ओ गुण निधी, अमे तेह आदरशुं रे लो,
राग वैरागी दोय अमे, तस आणा शिर धरशुं रे लो ॥९॥
कन्या आठना वचन थी, हरख्या ते व्यवहारी रे लो,
विवाह महोत्सव मांडियां, धवल मंगल गावे नारी रे लो ॥१०॥
गुणसागर गिरुओ हवे, वरघोड़े वर सोहे रे लो,
चौरी मांहे आवीयां, कन्याना मन मोहे रे लो ॥११॥
हाथ मेलावो हर्षशुं, साजन जब सहु मलियोरे लो,
हवे कुंवर शुभ चिंतवे, धर्म ध्यान सांभरियो रे लो ॥१२॥
संयम लेई सुगुरु कने, श्रुत भणशुं सुखकारी रे लो,
समता रसमें झीलशुं, काम कषायने वारी रे लो ॥१३॥
गुरु विनय नित्य सेवीशुं, तप तपशुं मनोहारी रे लो,
दोष बैतालीश टालशुं, माया लोभ निवारी रे लो ॥१४॥
जीवित मरणे समपणुं, सम तृण मणी गणशुं रे लो,
संयम योगे थिर थई, मोह रिपुने हणशुं रे लो, ॥१५॥
गुणसागर गुणश्रेणिये, थयो केवल नाणी रे लो,
नारी पण मन चिंतवे, वरीये अमे गुण खाणी रे लो ॥१६॥
अमे पण संयम साधशुं, नाथ नगीना साथे रे लो,
ओम आठे थई केवली, ते सवि पियुडा साथे रे लो ॥१७॥
अंबर गाजे दुंदुभि, जय जय रव करता रे लो,
साधुवेष दे सुरवरा, सेवाने अनुसरता रे लो ॥१८॥

गुणसागर मुनि राजना, मात पिता ते देखी रे लो,
शुभ संवेगे केवली, घातीचार उवेखी रे लो ॥१६॥
नरपति आवे वांदवा, मन आश्चर्य आणी रे लो,
शंख कलावती भव थकी, निज चारित्र वखाणी रे लो ॥२०॥
भव एकवीश ते सांभली, बूझ्या केई प्राणी रे लो,
सुधन कहे सुणो साहिबा, अत्र आव्यो उमाही रे लो ॥२१॥
पण ते कौतुक देखीने, मनडो मुझ हरखायो रे लो,
केवल ज्ञानी मुझ कहे, शुं कौतुक उल्लसायो रे लो ॥२२॥
अेहथी अधिकुं देखशो, अयोध्या नाम ग्रामे रे लो,
तीनिसुणी मुनिपाय नमी, आव्यो इण ठामे रे लो ॥२३॥
कौतुक तुम प्रसादथी, जोशुं सुख कामी रे लो,
अेम कहीने सुधन तिहाँ, ऊभो शिरनामी रे लो ॥२४॥

दोहा

पृथ्वीचंद्र ते सांभली, वाध्यो मन वैराग,
धन धन ते गुणसागरुं, पाम्यो भवजल ताग ॥१॥
हुं निज तातने दाक्षिण्ये, पडियो राज्य मोझार,
पण हवे नीसरशुं कदा, थाशुं कव अणगार ॥२॥

"ढाल तीजी"

धन धन जे मुनिवर ध्याने रमे, करवा आतम शुद्ध मुनीसर,
राजा चिंते सद्गुरु सेवना, करशुं निर्मल बुद्ध मुनीसर
धन धन जे मुनिवर ध्याने रमे ॥१॥
कबहूँ सम दम सुमति सेवशुं, धरशुं आतम ध्यान मु.
इम चिंतवंता अपूरव गुण चढ़े, श्रेणिय शुक्ल ध्यान मु.ध. ॥२॥

ध्यान बले सवि आवरण क्षय करी, पाम्या केवल ज्ञान मु.
हर्ष धरी सोहमपति आविया, सहु वंदे बहुमान मु.घ. ॥३॥
सांभली मातपिता मन संभ्रमे, आव्या पुत्रनी पास मु.
अेशुं अेशुं अेणीपेरे बोलता, हरिसिंह हर्ष उल्लास मु.ध. ॥४॥
दयिता आठ सुणी मन हर्षथी, उलट अंग न माय मु.
संवेग रंग तरंग में भीलती, आठे केवल थाय मु. ध. ॥५॥
सारथ सुधन पण मन चिंतवे, कौतुक अद्भुत दीठ मु.
नरपति पूछे मुनि चरणे नमी, स्नेहनुं कारण जिट्ठ मु.ध. ॥६॥
केवली कहे पूरव भव सांभलो, नयरी चंपा जयराय मु.
सुन्दरी प्रियमति नामे तेहने, कुसुमायुध सुत थाय मु. ध. ॥७॥
दंपति समये पाली शुभमना, विजयविमाने ते जाय मु.
अनुत्तर सुख विलसी सुर ते चव्या, थया तुम राणी ने राय मु.ध.॥८॥
कुसुमायुध पण संयम सुर चवी, थयो तुम सुत तणे नेह मु.
मातपिता पण पृथ्वीचन्द्रना, सुणी थया केवली तेह मु.ध. ॥९॥
सारथ पूछे पृथ्वीचन्द्रने, गुणसागर तुमे केम मु.
मुनि कहे पूरव भव अम नंदनो, कुसु मकेतु तस नाम मु.घ. ॥१०॥
अेहिज दयिता दोय छे ते भवे, समये पाली ते साथ मु.
सम धर्मे सवि अनुत्तर ऊपन्या, आभव पण थई नार मु.ध. ॥११॥
सांभली सुधन श्रावक व्रतलहे, बीजा पण सहु बोध मु.
पृथ्वीचन्द्र पृथ्वी पर विचरे, सादि अनंत थया सिद्ध मु.ध. ॥१२॥
नित नित ऊठी हुं तस वंदन करुं, जेणे जग जीत्यो रे मोह मु.
चढते रंग हो समसुख सागरुं, करतो श्रेणी आरोह मु.ध. ॥१३॥

जग उपकारी हो जग हित वच्छलु, दीठे परम कल्याण मु.
विरह म पडशो हो एवा मुनितणो, जाव लहुं निर्वाण मु.ध.॥१४॥
मुनिवर ध्याने हो जिन उतमपदवरे, रूप कला गुण ज्ञान मु.
कीर्ति कमला हो विमल विस्तरे, जीवविजय धरे ध्यान मु.ध.॥१५॥

३

"श्री सुकुमालिकानी सज्झाय"

'रामविजय कृत'

"ढाल पहेली"

(तर्ज—मुनीसर धन धन ते अणगार)

वसंतपुर सोहामणुं रे, राज्य करे तिहाँ राय;
सिंहसेन नृपति राजियो रे, राणी सिंहल्या नाम रे,
प्राणी जुओ जुओ कर्मनी बात,
छांडे पण छूटे नहीं रे, कर्या कर्म विशेष रे प्राणी. ॥१॥
रसिक भसिक दोय तेहनारे, उपन्या ते बालकुमार,
बालिका एक सुकुमालिकारे, रूप तणो भण्डार रे प्राणी ॥२॥
रसिक भसिक सुकुमालिकारे, बाधे ते रूप विवेक,
अनुक्रमे मोटा थया रे, ज्ञानादि गुण सुविशेष रे प्राणी ॥३॥
साधु समीप दीक्षा ग्रहीरे, रसिक भसिक कुमार,
पछी तेहनुं शुं थयो रे, जुओ जुओ कर्म विटंबरे प्राणी ॥४॥
गाम नगर पुर विचरतारे, पाले जिनवर आण,
तप करता अति आकरां रे, तोड़े कर्म निदान रे प्राणी ॥५॥

वालिका एक सुकुमालिका रे, तेनुं अनुपम रूप;
विवरीने हुं वर्णवुं रे, जोवा आवे भूप रे प्राणी. ॥६॥
भ्राता दोय चोकी करे रे, मेली कुल आधार,
ऋतु धरी न खमविया रे, अट्ठम तप अनुसार रे प्राणी. ॥७॥
अंगोपांग हाले नहीं रे, जीव थयो असराल;
कंठे तो कांटा पडे रे; मरण जाणयुं सुकुमाल रे प्राणी. ॥८॥
मरण जाणी मेलिगया रे, थई घड़ी एक दोय;
शीतल वायो वायरो रे, प्राण सचेतन होय रे प्राणी. ॥६॥
चार दिशाये जुए वलि रे, वन मोटु विकराल;
नयणे तो आंसु भरे रे, बैठी वडतरु छाय रे प्राणी. ॥१०॥

जुवो अुवो कर्मनी बात

"ढाल दूसरी"

हवे एक समय आव्यो परदेशी, वेपारी व्हेपार रे.
पांच सो पोठ भरीने लाव्यो, सार्थवाह शिरदार रे.
जुओ जुओ जन्म जरा जग जोरो, कर्म न मेले केड़े ॥१॥
पोठ उत्तारी सरोवर तीरे, भयुं घोर गंभीर रे;
वट तले मोटी वादलनी छाया, तेमां भर्या नीर रे जुओ. ॥२॥
इंधण पानी जोवा सारु, फरे अनुचर जोता रे;
बैठी वाला वनमां देखी, त्यां कने जईप होता रे जुओ. ॥३॥
रे बाई तूं एकली वनमां, इहां केमज आवी रे;
कहे बेनी सांभल वीरा, कर्मे मुझने लावी रे जुओ. ॥४॥
अनुचरे जईने संभलावीयुं, सार्थवाहनी पासे रे;
महावनमां एक नारी अनुपम, बैठी वडतरुं छाया रे जुओ. ॥५॥

इन्द्राणी ने अपसरा सरखी, रूपा रूपी गात्र रे;
कहो तो अहियाँ तेडी लावुं, जोवा सरखी पात्र रे जुओ. ॥६॥
सार्थवाह कहे तेडी लाओ, घड़ी न लगाओ विलंब रे;
अनुचर तेडी ने लावियो, सार्थवाहनी पासे रे जुओ. ॥७॥
वात विनोदनी करी समभावी, भोलवी,ते नारी रे;
सार्थवाहे घरमां वेसाडी, कर्म तणी गती न्यारी रे जुओ. ॥८॥
कर्म करे ते कोई न करे, कर्मे सीता नारी रे,
दमयंती छोड़ी नल नाठो, जुओ जुओ वात वीचारी रे
जुओ. ॥९॥
सुकुमालिकाए मनमां विमासी, छोड्यो संजम जोग रे;
सार्थवाहना घरमां रही ने, भोगवे नित्य नवा भोग रे
जुओ. ॥१०॥
भाई पोताना संयम पाले, देश देशान्तर फरता रे;
अनुक्रमे तेना घरमां आव्या, घर घर गोचरी फरता रे
जुओ. ॥११॥
मीठा मोदक भाव धरीने , मुनि ने व्होरावी रे;
मुनि पण मनमाँ विस्मय पाम्या समता शुं मन लावी रे
जुओ. ॥१२॥
कहे वेनी सांभल वीरा, शी चिन्ता छे तुमने रे;
मनमां होय ते मुझने कहो, जे होय तुम्हारा मन में रे,
जुओ. ॥१३॥
तहारा जेवी एक वेन अमारी, शुद्ध संजम पाली रे;
मोडुं फल मरीने पामी, ते मनमाँ शुं विमाशी रे जुओ. ॥१४॥

सुकुमालिका कहे सांभलवीरा, जे बोल्या ते साचु रे:
कर्मे लख्यु ते मुझने थयु छे, तेमां नहि कांई काचु रे
जुओ जुओ कर्म तणा फल जुओ ॥१५॥

"ढाल तीजो"

(तर्ज—नदी यमुना ने तीर.)

मनमां समज्या दोय वडेरो इम कहे;
सांभल बेनी वात ते तो तूं लहे,
नहीं कांई तारो दोष, रखे कांई मन धरो
ए सहु छे कर्म नो दोष तमे इम शुं करो. ॥१॥
आगल सिद्धा अनन्त, संजम थी लडथड्या;
तप ने बले वली शिव-मन्दिर मां ते चढ्या,
आ संसार असार नाटक नवलो सही ।
ते देखी मन र'च्यो, तुमे कांए मही ॥२॥
जेवो रंग पतंग के, सुख संसारनुं;
साकल वरस्यो पान के मोती ठारनुं;
एम मीठे वचने, बेनी प्रति बूझवी;
संजम लहीं मन शुद्ध, वैरागे मन ठवी, ॥३॥
समेत शिखर गिरनार, आबूनी यात्रा करी;
वली शत्रुंजय गिरिराज तेणे फरसी करी;

वनमाँ रह्या एकाकी के, काया केलवी
वनचर जीव अनेक ने प्रति बुझवी. ॥४॥
छट्ठ अट्टम उपवास आयंबिल एकासणुं
पाले जिनवर आण के, समकित सोहामणुं
एम करन्ता केई मास, थयादिन केटला;
कर्म रूपी सुभट, हण्या तेणे तेटला; ॥५॥
एम आ घोर तप करतां काया थई दुर्बली,
तन ना लोहीं मांस के. हाड गया गली,
संलेखन एक मासनुं, अणसण आदरी,
एम करतां सुकुमालिका, आयु पूरण करी ॥६॥
एम चारित्र आराधी, त्रिकरण योगथी,
पहोंची देव लोक मांहि, अंते शिवभगती लहीं।
सुमतीविजय नो शिष्य, राज विजय [illegible]णे,
घेर घेर मंगल मालके सुख संपत्ति लहे ॥७॥

★ सुरप्रिय मुनि की सज्भाय ★

"ढाल पहली"

(अरणक मुनिवर चालया गौचरी)

(वीरपुत्र आनन्द सागर सूरि कृत)

सुरप्रिय मुनिवर नितप्रति वंदिये, करुणा रस भंडाराजी।
नगरी सुशर्मा में मुनिवर अवतरे, सुन्दर तात सुप्याराजी
सुर. ॥१॥

मात मदन श्री कूंखे उद्भवे, ज्ञान विज्ञान अपाराजी,
यौवन वय वर सुन्दरी कोवरी, तन धन जनसुख साराजी
सुर. ॥२॥

पापोदय से निर्धनता आई, सब दिन सरीखे न होतेजी,
धन के कारण देशान्तर चले, पुत्र पिता दिल रोतेजी
सुर. ॥३॥

चलत चलत अटवी बीच आचढ़े, देखी प्रपुन्नाट बेलजी,
निश्चय श्रीनीधि[1]तल में संभवे, तिल बिच जैसे तेलजी
सुर. ॥४॥

आनन्दपूर्वक सोते वटतले, जनक कपट मन धारेजी,
जो निद्रावश मम सुत हो जावे, सब धन आवे हमारेजी
सुर. ॥५॥

सुप्त तनुज जोई लक्ष्मी खोदने, चला है सुन्दर शेठजी,
ॐधरणेन्द्राय नमोमंत्र जपी, ऊर्वी[2] फाडा पेटजी, सुर. ॥६॥

लता के नीचे सुन्दर कीमती, मिला है रत्नों का हारजी,
लेकर द्रुततर[3] भूशरणे किया, गुप्त स्थान सुविचारजी
सुर. ॥७॥

जाग्रत होकर तनय भी वहीं चला, बिच में मिले निजतातजी,
लता दरस से शंकित हो गया, जानलिई सब बातजी
सुर. ॥८॥

पुत्र पिता को विनय से पूछता, कौन द्रव्य संहाराजी,

---

१ खजाना २ पृथ्वी ३ शीघ्र ।

पर नहीं कहते लोभविवश हो के पुत्र पिता को माराजी
सुर. ॥९॥

धिक् २ पामर लोभी पुत्र को, धिक् है धन अभिलाषजी,
धिक् २ सुन्दर मायाधारी को धिक् है सकल विलासजी
सुर. ॥१०॥

सुन्दर मरके चन्दनगोह हुवा, जहाँ रहा था हारजी,
नित्य विलोके सुरप्रिय ध्यान से, मिले निधान न सारजी
सुर. ॥११॥

एक दिन गोधाऽ हार वहार लेके, क्रीड़ा करे तस उपरेजी,
गोह को मारी हार ग्रहण किया, हर्ष हृदय में उछरेजी
सुर. ॥१२॥

लेकर हार को अपने घर चला, कानन विच मुनि राजजी,
काउसग्ग ध्याने देख शंका हुई, कथन किया कृत काज
सुर. ॥१३॥

सुनके ललना पति को विनवे, हार हाल मुनि जानेजी,
जो नरपति प्रति वददे मुनिवर, भूप हार को तानेजी
सुर. ॥१४॥

षट कर्णों का मंत्र भेदन होवे, शत्रु रूप मुनि वध्यजी,
कर में तीक्ष्ण असि[1] लेकर आया, मुनिमारण को सद्यजी[2]
सुर. ॥१५॥

कटुक वचन से मुनिप्रति बोलता, शीघ्र कहो मनभावजी,

---

[1] तलवार [2] शीघ्र ।

अन्यथा कबहुं न छोड़जीवता जुवोर रौद्र प्रभावजी
सुर. ॥१६॥

लाभ जान के मुनिपुङ्गाव कथे, तीन ज्ञान अधिकारीजी,
तू था हाथी तात मृगारी[1] था, इस ही वन अवतारीजी सुर. ॥१७॥

गज को मारा हरिने गतभवे, हरि अष्टापद से मराजी,
निकल नरक से सुन्दर भव पाया, गज मर नर भव तू धराजी
सुर. ॥१८॥

पूर्व वैर वश लोभ के वहाने मारी दिया गोह-तातजी,
मर के गोधा श्येन पक्षी हुआ, मुझ पर संशय जातजी सुर. ॥१९॥

मुझको मारण कारण यहां आया, कही मनोगत भावनाजी,
सकल वृतान्त मुनि मुख से सुनी, आनन्द वैरागी ध्यावनाजी
सुर. ॥२०॥

---

१ सिंह ।

"ढाल दूसरी"

(आवो आवो यशोदाना कंथ०)

वंदो वंदो सुरप्रिय संत, आनन्द पावो रे,
आतम निन्दा विचरन्त, प्रेम से ध्यावो रे-वंदो. ॥१॥

धिक् धिक् मम दुष्टावतार, हृदय विचारे रे,
दुःख नरक भंयङ्कर हाय, कैसे निवारे रे वंदो. ॥२॥

वध मारण आदि कर्म, उदय में आवे रे,
दस गुण लघु उतकृष्ट, पार न पावे रे वंदो. ॥३॥

सुरप्रिय मुनि को निर्वेद, अतिशय भावे रे,

आदेश करो ममयोग्य, दुःख सब जावे रे ॥४॥
कृपा सिंधु महामुनिराज, कृपा करि बोले रे,
स्वीकारो धर्मजिनेन्द्र, नहीं कोई तोले रे ॥५॥

राग द्वेश शत्रु दुर्जित, जीते सुख भारी रे,
इत्यादि सुनी उपदेश, मूर्छा वारी रे-वंदो. ॥६॥

गुरु वन्दन करी घर आय, बोले अतिवेगे रे,
प्रिये हार देकर भूपाल, संयम लेंगे रे वंदो. ॥७॥

चारित्र लिया गुरु पास श्रुत बहु पाया रे,
धन्य २ सुरप्रियनाम, हम मन भाया रे, वंदो. ॥८॥

निज जन्म नगरी उद्याने, एक दिन आये रे,
काउसग्ग ध्याने तल्लीन, कर्मरिपु छाये रे ॥९॥

पटरानी बिछोने हार, रख के स्नान करे रे,
बाजपक्षी उपाडी हार, मुनि के कंठ धरे रे. वंदो ॥१०॥

पूर्व वैर विरोधे पंक्षी, गजब किया सही रे,
स्नान करके देखे रानी, हार पाया नही रे. वंदो ॥११॥

दूती मुख से सुनके हाल, राजा आदेशे रे,
क्रूर पुरुष करत हैं तलाश, जानो जम जैसे रे ॥१२॥

अटवी बीच देख साधु, हार गले धरारे,
चोर यहि दिलमें ठान, नृपति पुर करारे वंदो. ॥१३॥

शुभध्याने मुनि रहे मौन, राजा बहु रूठा रे.
कंठ पाशदिया बहुवार, तंतुसम तूटारे वंदो. ॥१४॥

आश्चर्य व्याकुल राय, हुकुम शूली करारे,
आदेशी कदर्थना कारी, शीघ्र शूली धरारे–वंदो–वंदोरे. ॥१५॥
पूर्व कर्म विपाक विचारी, क्षमा गुण खरारे,
शुक्ल ध्यान से केवल ज्ञान, आनन्द मुनि वरारे वंदो. ॥१६॥

ढाल तीजी

(हवे शक्र सुघोषा बजावे०)

धन्य धन्य मुनि जयकार, वन्दन से लाभ अपार,
देवताने किया शूली पद्म, रहीन सफा एक पद्म. ध. ॥१॥
सावना करे बहु भक्ति, धरणी धरकी गइ शक्ति,
अहो मैंने किया है अनर्थ, निर्दोष यतिका कदर्थ. ध. ॥२॥
और कंलक दिया हाय हाय ! शुभ गति अहो नहीं आय,
निज निन्दा करत है नरपति, अपराध क्षमावे मुनिप्रति–ध. ॥३॥
कर जोड़ पूछे मुनिराय, हार हाल कहो दुख जाय,
वृत्तांत सकल कह डाला ,श्येन पक्षी सुना तत्काला ध. ॥४॥
सुन के पक्षी को भान, हुवा जातिस्मरण ज्ञान,
अपने जाने भव तीन, आतम निन्दा लयलीन- ध. ॥५॥
पार्श्व वर्ती वृक्ष के नीचे, उतर के मुनि क्रम बीचे,
दुख करते हृदय कल कलता, नेत्रे नीर अविरल झरता. ध. ॥६॥
उतम मानव भव खोया, चिन्तामणि अब्धि डूबोया,
अब जीवन व्यर्थ है धारी,अनशन धारा सुखकारी. ध. ॥७॥
काल करके गया सौधर्मे, हलकाहु व पक्षी कर्मे,

नर देव पूछे मुनिराज, कहे तात जीव यह आज-ध. ॥८॥
धर्मशास्त्रे कही कर्म गति, विचित्रा सुनो तुम भूपति,
सुनके वैराग्ये भीना, संयम लेइ श्रुत पीना-ध. ॥६॥
चारित्र पाली ब्रह्मलोके, पहुँचे कृतकर्मो को धोके,
अन्ते सुरप्रिय सुखकार, पहुँचे मोक्ष नगर जयकार-ध. ॥१०॥
सुनके सुरप्रिय चरित्र, भवि करना हृदय पवित्र,
आनन्द बधाई बाजे, वीतराग वचन विश्व गाजे. ध. ॥११॥
सुखनाथ जगत सुखकारी, भगवान त्रैलोक्य आधारी,
आनन्द रत्नाकर गाया, आनन्द दिल में उछलाया-ध. ॥१२॥

॥ समाप्त ॥

---

(५) "श्री कलावती का चोढालिया"

मालवदेश मनोहरू, तिहां नयरी उज्जेनी नाम हो नरिन्द,
शंख राजा तिहाँ सोभतो, सहु शुभ गुणकेरो धाम हो नरिन्द
शियल तणा गुण सांभलो ॥१॥
शियले लहिये बहुमान हो नरिन्द, शियले सतीये कलावती,
जेमपामी सुख प्रधान हो नरिन्द ॥२॥
अ[illegible] साठमांहे वडी, लीलावती पटराणी कहाय हो नरिन्द,

नेपाल देशनो नरपति, नामे जितशत्रु राय हो नरिन्द-शि. ॥३॥
जयसेन विजयसेन सुत भला, कलावती पुत्री उदार हो नरिन्द,
मालवपति शंखराय ने, परणावी प्रेम अपार हो नरिन्द शि. ॥४॥
पंच विषय सुख विलसतां, कलावती राय संघात हो नरिन्द,
गर्भ रह्यो पुण्य योगथी, हरख्यो नृप सात हाथ हो नरिन्द
शियल तणा. ॥५॥
आघरणी ओच्छव मांडियों, गीत गावे बहु मलीनार हो नरिन्द,
पेटी आवी पियर थकी, कलावती ने तेणी वार हो नरिन्द
शियल तणा. ॥६॥
शंकाती बहु शोक्यथी, लेई गोपावी गोठण हेठ हो नरिन्द,
एकांते उकेलतां, दोय बेरखा दीठा दृष्टि हो नरिन्द
शियल तणा. ॥७॥
नंग जड्या मांहे निरमलां, अंधारे करे उजवास हो नरिन्द,
नामांकित बेहुं भ्रातनां, पहेरीने पामी उल्लास हो नरिन्द
शियल तणा. ॥८॥
खाट हिंडोंले हींचतां, बेरखा झबूके जेम बीज हो नरिन्द,
दासी लीलावती तणी, देखी धरे दिलमां खीज हो नरिन्द
शियल तणा. ॥९॥
कहो बाई ए केणे दिया, आभूषण दोय अमूल्य हो नरिन्द,
मुझने जे घणो वाहलो, तेणे दिधा बहु मूल हो नरिन्द
शियल तणा. ॥१०॥

दासी लीलावती भणी, भांख्यों ते सघलो भेद हो नरिन्द,
सांभली क्रोधातुर थई, उपन्यो चित्तमां बहु खेद हो नरिन्द

शियल तणा. ॥११॥

राणी प्रति महीपति कहे, केणे दहव्यां तुमने आज हो नरिन्द,
बहुमूल्या तुमने बेरखा, केम किधा कलावती काज हो नरिन्द

शियल तणा. ॥१२॥

मैं न घडाव्या बेरखा, तस खबर नहीं मुझने कांय हो नरिन्द,
पूछी निरती करो तुमे, सुणी लीलावती तिहां जाय हो नरिन्द

शियल तणा. ॥१३॥

राय छानो उभो रह्यो, तब पूछे लीलावती नेह हो नरिन्द,
साचूं कहो बाई कलावती, केणे दिधा बेरखा एह हो नरिन्द

शियल तणा. ॥१४॥

हुं घणी जेहने व्हाली, तेणे मोकल्या मुझने एह हो नरिन्द,
रात दिवस मुझ सांभरे, पण भाई न कहयो तेह हो नीरन्द

शियल तणा. ॥१५॥

राजा क्रोधातुर थयो, सुणी कलावती ना वचन हो नरिन्द,
प्रीति पूरवला पुरुष शुं, मूक्या ए तेणे प्रच्छन्न हो नरिन्द

शियल तणा. ॥१६॥

कौल दियो लीलावती भणी, दोय बेरखा सेती बांह हो नरिन्द,
छेदावी तुमने देऊं, सुणी पामी परम उत्साह हो नरिन्द

शियल तणा. ॥१७॥

"ढाल दूजी"

(तर्ज–सुग्रीव नयर सोहामणो जी)

राय हुकम एहवो कह्योजी, चंडाल ने तेणीवार,
कलावती कर कापीने जी, आणीयो एणी वार सुण सुण रे,
प्राणी कर्मतणा फल एह ।
जन्मांतर जीवे कियाजी, आवे उदय सहु तेह सुण २ प्राणी
कर्म. ॥१॥
साँभली अंत्यज थरहर्योजी, चंडाली ने कहे तेह,
राय हुकम रुडो नहीं जी, मुकिये नगरी एह सुण सुण. ॥२॥
पापीणी कहे तूं शूंबीहेजी, एछे मारूं काम,
शिर नामी उभी रहीं जी, राय खड्ग दियो तामरे सुण. ॥३॥
रथ जोडी रंडा कहे जी, वेसो बाईजी इणी मांय,
पियर तुझने मोकले जी, राय घर बहु चाय सुण. ॥४॥
गलीयल गाभा केहवाजी, श्याम ऋषभ वलिकेम,
पुत्र रहे नहीं रायने जी, किधो कारण एम. सुण. ॥५॥
रथमां बेसाडी राणीनेजी, चाली ऊजड वाट,
सूके वन रथ छोडियो जी, राणी पामी उचाट. सुण. ॥६॥
पियर मारग एह नहीं जी, चंडाली कहे ताम,
राये मुझने मोकली जी, कर कापण ने काम. सु. ॥७॥
जमणो पोते छेदियो जी, डाबो चंडालिय दीध,
बेरखा सहित वेहुकर ग्रहीजी, आणी रायने दीध. सुण. ॥८॥

नारी भ्रात नाम निरखताँजी, मूर्च्छाणो ततकाल,
शीतल वाये सज्ज कर्योजी, रोवे तव महिपाल सुण. ॥९॥
किसी कुमती मुझ उपनीजी, कीयो सबल अन्याय,
ए जीव्युं कोण कामनुंजी, राज रमणी न सुहाय. सुण. ॥१०॥
चय रचावे चन्दनेजी, बलवाने तिहां जाय,
लोक मली वारे घणुजी, वचन न माने राय सुण सुण रे
प्राणी. ॥११॥

✻ढाल तीजी✻

कलावती ने जे थयो, ते सुण जो अति कार, भवि प्राणी,
कर छेदन भेदन वेदन थकी, सुत जनम्यो तेणी वार
भवि प्राणी. ॥१॥
शियलनो महिमा जाणिये, शियले संपती थाय भवि प्राणी,
विघन विषय दूरे टले, सुर नर प्रणमें पाय भवि प्राणी
शियलनो महिमा जाणिये ॥२॥
पुत्र प्रत्ये कहे पदमणी, शुं करुं ताहरी सार भवि प्राणी,
माहरी कुखे अवतर्यो, तूं निर्भाग्य कुमार भवि प्राणी शि. ॥३॥
अशुचि पण केम टालशुं पालशुं ए केम बाल भवि प्राणी,
शोच करे रोवे वली, वन म्होर्यो ततकाल भवि प्राणी
शियल. ॥४॥
शियले सूकी नदी नहीं प्राणी आव्युं नजदीक भवि प्राणी,
जाणे के जल लेई जाशे, बच्चे बेठी निर्भीक भवि प्राणी
शियल. ॥५॥

आंटो देई चिहुँ दिशे, नदी वही दोय धार भवि प्राणी,
बोले बांह निची करी, जल मांहे तेणी वार भवि प्राणी
शियल. ॥६॥

नव पल्लव नवली थई,बेरखा सेती बांह भवि प्राणी,
वीजी पण तिम हीज थई, पामी परम उत्साह भवि प्राणी
शियल. ॥७॥

अचरिज देखी आवियो, तापस एक तेणीवार भवि प्राणी,
जनक नो मित्र जाणी करी, बोलावे सुविचार भवि प्राणी
शियल. ॥८॥

रे पुत्री ! तापस कहे, एकली अटवी मझार भवि प्राणी,
केम आवी मुझने कहो, तव भाख्यो सघलो विचार भवि प्राणी
शियल. ॥९॥

कोप्यो तापस इम कहे, राजा ने करूं उतपात भवि प्राणी,
कलावती तव विनवे, कोप म करो मुझ तात भवि प्राणी
शियल. ॥१०॥

तापसे तिहां विद्यावल्ले, अवल रच्यो आवास भवि प्राणी,
कलावती सुत सूं तिहां, अहोनिश रहे उल्लास भवि प्राणी
शियल. ॥ १॥

कठियारा तेणे अवसरे, देखी एह विचार भवि प्राणी,
दोड्या देवा वधा मणी, राजाने तेणी वार भवि प्राणी
शियल. ॥१२॥

मंत्री अरज करे तिसे, सुणो राजन सुकुमार भवि प्राणी,
अवधि दियो एक मासनी, खबर करूं ततकाल भवि प्राणी
शियल. ॥१३॥

एम कही शोध करन चले, एहव आव्या कठियार भविप्राणी,
राणी विगत कही सवे, हरख्यो चित्त मझार भवि प्राणी
शियल. ॥१४॥

सुकुं वन सर्व मोरियुं, सुकी नदी वहे पूर भवि प्राणी,
राणी ए सुत तिहां जनमीयो, कर उग्या ससनूर भवि प्राणी
शियल. ॥१५॥

राजने आवि विनव्यो, पाम्यो हरख विशाल भवि प्राणी,
राणीने तेडवा मोकल्यो, मंत्री ने ततकाल भवि प्राणी
शियल. ॥१६॥

राय राणी रंग मनशुं, आव्या नगर मझार भवि प्राणी,
उच्छव रंग वधामणां, हुवो ते जय जय कार भवि प्राणी
शियल. ॥१७॥

ढाल चोथी

एक दिन राय राणी मन रंगे, वनमां खेलण जावेजी,
तव तिहां साधु धर्म धुरंधर, तेहना दर्शन पावेजी ॥१॥
भवियण धर्म करो शुद्धे, धर्मे मन वंछित सवि होवे,
धर्मे पाप पलाय जी, भवियण धर्म करो मन शुद्धे ॥२॥
पाय प्रणमी साधुने पूछे, भगवन मुझने भाखोजी,

राणी कर छेद्या किण कारण, तेहनो उत्तर दाखोजी
भवियण धर्म. ॥३॥

साधु ज्ञानी इणी पर बोले, महा विदेह मां रहतां जी,
माहेन्द्र पुरी नयरी विक्रम, लीलावती विलसंतां जी
भवियण धर्म. ॥४॥

पुत्री प्रसवी रूप अनोपम, सुलोचना गुण खाणी,
विद्यावंत विदेसी सूडो, वदतो अमृत वाणीजी
भवियण धर्म. ॥५॥

सुलोचना सोवन्न पिंजरमां, सूडो घाली राखेजी,
गायन गूढा नवला गावे, मनोहर मेवा चाखे जी
भवियण धर्म. ॥६॥

मनमां कीर विमासे एहवुं, पिंजर बंधन रहेवोजी,
आश पराई करवी अहो निश, परवश सुखन लहेवोजी
भवियण धर्म. ॥७॥

एक दिन पिंजर बार उघडियो, पोपट तव निकलियोजी,
वनमां तरु शाखा ए बेठो, मन वंछित सवि फलियोजी
भवियण धर्म. ॥८॥

सुलोचना सूडाने विरहे, तत्क्षण मूर्छित थावेजी,
राजा पास नखावी सुडो, बंधावी ने लावेजी
भवियण धर्म. ॥९॥

रीसाणी सुवडां शुं कुंवरी, पांखों वेहु तस छेदेजी,

सुडो पण तनु मोह तजीने, भूख तृषा बहु वेदेजी
भवियण धर्म. ॥१०॥

शुभ परिणामे सूडो चविन, सुर लोके सुर थावेजी,
कंवरी तस विरहे तनु तजीने, देवांगना पद पावेजी
भवियण धर्म. ॥११॥

सुरलोके सुर सुख विलसीने, इहां कणे राजा हुवोजी,
देवी पणते त्यांथी चवीने, हुई कलावती जुओजी
भवियण धर्म. ॥१२॥

पूरव वैर तुझ इहां प्रगट्यो, तिण कारण कर छेद्याजी,
जन्मांतर किधाँ जे जीवें, नव छूटे विण वेद्याजी
भवियण धर्म. ॥१३

राजा राणी सुणीने तत् क्षण, जाती स्मरण ज्ञाने जी,
पूरव भव संपूरण पेखे, तहत्ति करीने माने जी
भवियण धर्म. ॥१४॥

करम तणी गती विरुई जाणी, वैरागे मन भीनोजी,
राजा राणी निर्मल भावे, संयम मारग लीनोजी
भवियण धर्म. ॥१५॥

तप बल ध्यान शुकल आराधी, भव बंधन सवि छेद्याजी,
राजा राणी केवल पामी, शिव रमणी सुख वेद्या जी
भवियण धर्म. ॥१६॥

* कलश *

इम दुरित खंडन शियल मंडण आराधी शिव पद लह्यो,
संवत अठार पांत्तीश, श्रावण शुकल पंचमी, दिन कह्यो ।
लोंका ऋषि श्री करमशी तस शिष्य रंगे उच्चरे,
भुज नगर भावे रही चोमासो, मानसिंह जय जय वरे ।

इति

———

(६) ❀ श्री नन्दीषेण मुनि की सज्झाय ❀

* मेरु विजय जी कृत *

"ढाल पहली"

राजगृही नगरी नो वासी, श्रेणिक नो सुत सुविलासी हो
मुनिवर वैरागी,
नन्दीषेण देशना सुणि भीनो, ना ना करतां व्रत लीनो हो
मुनिवर वैरागी ॥१॥
चारित्र नित्य चोखोपाले, संयम रमणीसुं माले हो मुनि.,
एक दिन जिन पाय लागी, गोचरी नी आज्ञा मांगी हो
मुनिवर. ॥२॥

पांगरियो मुनि वोहरेवा, छुधा वेदनी कर्म हणेवा हो मुनि
ऊंच नीच मध्यम कुल मोटा, अटतो संजम रस लोटा हो
मु. ॥३॥

एक ऊंचो धवल घर देखी, मुनिवर पेठो शुद्ध गवेखी हो मु,
तिहां जई दीधो धर्मलाभ, वेश्या कहे इहां अर्थलाभ हो
मु. ॥४॥

मुनि मन अभिमान ज आण्यो, खंड करी नाखशों तिण ताण्यो
हो मु.,
सोवन वृष्टि हुई साढ़ो बारे क्रोड, वेश्या वनिता कहे कर जोड हो
मुनिवर वैरागी ॥५॥

* ढाल दूसरी *

थे तो उभा रहीने अरज हमारी, सांभलो साधुजी,
थे तो मोटा कुलना जाण, मुकि दो आमलो साधु जी ॥१॥

थे तो लई जावो सोवन कोडी, गाडा ऊंटे भरी साधुजी,
थारे केसरिये कश बीने, कपडे मोही रही साधुजी ॥२॥

थारी मुर्ति मोहनगारी, जगत मे सोहिनी साधुजी,
थारे आंखडियारो नीको, पाणी लागणो साधुजी ॥३॥

थारो नवलो जोवन वेप, विरह दुःख भांजणो साधुजी,
ए तो जंत्र जडित कपाट, कूंची मैं कर ग्रही साधुजी ॥४॥

मुनि वलवा लाग्या जाम के, मैं आडी उभी रही साधुजी,

मैं तो ओछी स्त्रीनी जाति, मति कहीं पाछली साधुजी ॥५॥
थे तो भोग पुरंदर हूं, पण सुन्दरी ताहरी साधुजी,
थें तो पेहरो नवलो वेश, गेणा घणा जडावका साधुजी ॥६॥

मणि मुक्ता फल मुकुट, विराजे हेम का साधुजी,
अमे सजीये सोलह सिणगार, के पियुरस अंगना साधुजी ॥७॥

जे होवे चतुर सुजाण के, कदिय न चूकशे साधुजी,
एहवो अवसर साहब कदियन आवशे साधुजी ॥८॥

इम चिंतवे चित्त मझार, नंदिसेण बावलो हो साधुजी,
रहेवा गणिका ने धाम, के थई ने नाहलो साधुजी ॥९॥

"ढाल तीसरी"

भोग कर्म उदय तस आव्या, शासन देवी संभलाव्या हो
मुनिवर वैरागी,
रहेवा बारे बर्ष तस आवासे, वेष लई मुक्यो एक पासे हो
मुनिवर वैरागी ॥१॥

दश नर दिन प्रति बूजे, दिन एक मूर्ख नहि बूझे हो मु.,
बूझवां हुई बहु वेला, भोजन नी हुई अवेला हो
मुनिवर. ॥२॥

कहे वेश्या उठो स्वामी, आज दशमां तुमहीज कामी हो. मु.,
वेश्या वनिता कहे धममसती, आज दशमो तुमहीज हसती
हो मुनिवर ॥३॥

एह वयण सुणीने चाल्यो, फिर संजम में मन वाल्यो हो. मु.,
फिर संजम लियो उल्लासे, वेष लई गयो जिन पासे हो
मुनिवर वैरागी. ॥४॥

चारत्र नित्य चोखो पाली, देवलोगे गयो दई ताली हो. मु.,
तप जप संयम क्रिया सोधी, घणां जीवाने प्रतिबोधी हो
मुनिवर वैरागी ॥५॥

जय विजय गुरु शिष्य, तस हर्ष नमे निशदीश हो. मु.,
मेरुविजय इम बोले, एहवा गुरु ने कोण तोले
हो मुनिवर वैरागी ॥६॥

---

(७) ★ जम्बू स्वामी की सज्झाय ★

राजगृही नगरी का वासी घर में लीला विलासी,
ऋषभ दत्त तो तात जम्बूजी का, धारिणी ज्यारी माया
तुम पर वारी, वारी हो जम्बूजी वैरागी ॥१॥
आठ सगाई करी रे कुंवर की, सुन्दर रूप रसाला,
हाथ काम जब लियारे कुंवरका, शुभ मुहुर्त सावो दिखायो
तुम पर वारी, वारी हो ॥२॥
वंदोला खावेने गुडिया उडावे, नारी मंगल गावे,
सुधर्मा स्वामी राजगृही नगरी पधार्या, लोक वन्दन कुं चाल्या,
तुम पर वारी, वारी हो. ॥३॥

जम्बू कंवर तो वन्दन कुं चालया, गुरु वन्दन चित लाया,
सुधर्मा स्वामी उपदेश सुणायो, जग सुपना की माया।
तुम पर वारी, वारी हो ॥४॥

वाणी सुणी ने भिना रे कुंवरजी, शियल रुची ने घर आया,
कहे माताजी ने मैं तो संयम लेसुं, आज्ञा दीजे ढील न कीजे
तुम पर वारी, वारी हो. ॥५॥

अपूर्व वचन जब सुण्या रे कुंवरका, माताजी बहू मूछार्या,
दिक्षा की बात मती काढोरे जाया, नार्यां परणी ने घेर लावो
तुम पर वारी, वारी हो. ॥६॥

हाथ जोडी ने कहे रे कुंवर जी, सांभल जो मोरी माजी,
तन मन में म्हारे शियल रुच्यो छे, परणाई ने कई होंशो राजी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥७॥

माता पिताजी के वचनसुं परण्या, नार्यां आईने पाय लगी,
आज्ञा लेईने जम्बू महल पधार्या, नार्या ने कहे रहो आगी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥८॥

छपन्न कोड सोनैया घर में, निनाणु क्रोड म्हेलाई,
रत्न जटित को महल पियुजी, फुलडा सेज बिछाई
तुम पर वारी, वारी हो. ॥९॥

इन्द्र धनुष ज्यूं जोवन उलटे, नयणे काजल रल के,
हो प्रीतमजी मांसु हंसकर बोलो, गांठ हियाकी खोलो
तुम पर वारी, वारी हो. ॥१०॥

बादला दाई रूप विलाये, नदिया जल जोवन जावे,
काल अण चिंत्यो पकड ले जासी, कुण राजा कुण रावे
तुम पर वारी, वारी हो ॥११॥

चन्द्र वन्दनी मृग लोचनी वाला, सुन्दर रूप रसाला,
केलि गर्भसी हुई सुकमाला, हर्ष धरी ने मुखड़े बोलो
तुम पर वारी, वारी हो ॥१२॥

"ढाल दूसरी"

एकरस्यां तो मांसु हंसकर बोलो, पीछे लीजो जी धर्म को ओलोरा,
पियुजी वाणी सुणो
थेतो होगया धर्म ना रागी मने उभाही करदी त्यागी ग
पियुजी वाणी सुणो ॥२॥

थाने सुधर्मा स्वामी भरमाया, सासु धारिणि राणी मा जायारा,
पियुजी वाणी सुणो ॥३॥

माने राते परणी ने आणी, म्हैं तो नहीं घाल्यो मुखड़े में पाणीरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥४॥

मैं तो रमणी गमणी ठमणी, मैं तो आठुं हीं केसर वरणीरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥५॥

मैं तो आठूं ही ऊभी ढोल्या दोलो, मांसु हंसकर मुखडे बोलोरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥६॥

मैं तो आठुं ही लागो थाने खारी, माने जहर जड़ी जिम जाणीरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥७॥

मैं तो कब लग भरमाइ ने राखो थाने, नहीं तो लारे ले
चालो म्हाने रा,
पियुजी वाणी सुणो ॥८॥

ढाल तीसरी

आठ कथा तो कहे रे सुन्दरीया, आठु ही जम्बू कुमारा,
काम भोग है महादुःख दाई, फल किंपाक अनुहारा
तुम पर वारी, वारी हो. ॥१॥

शियल रत्न मैं तो परख लियो है, काच मणि कुण लेवे,
दाख अमृत रस मेवा तजी ने, निंबोला कौन खावे
तुम पर वारी, वारी हो. ॥२॥

नारी जमारो दोहिलो पियुडा, पियु बिना कौन आधार,
लोग हंसे ने मुझ जोवन चेरे, भलो नहीं रे घरवार
तुम पर वारी, वारी हो. ॥३॥

किस्यो पियर ने किस्योजी सासरियो, पियु विना कौन आधारी,
इण संसार में पियु विना नारी, सब को लागे खारी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥४॥

सजोडा से जम्बु महल पधार्या; प्रभव आयो रे धन लेवा,
धन भाले तब उणारा पावन ऊपड्या, आवे जम्बूजी ने केवा
तुम पर वारी, वारी हो. ॥५॥

प्रभव कहे म्हांकने दोय छे विद्या, एक विद्या माने दीजे,

जम्बू कहे म्हांकने विद्या नहीं छे, संसार में कुण रींजे
तुम पर वारी, वार हो. ॥६॥

राते परण्या थे आठुं ही नार्यां, कांई छोडोरे भोला भाई,
घर में माया ने कोमल काया, कांई छोडो रे निरधारी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥७॥

आउखो रे भाई अंजली को पाणी, काया काचकी शीशी,
इम जाणी हम हुआ रे वैरागी, दीनो संसार त्यागी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥८॥

वात सुणीने बूझया हो प्रभवजी, हाथ जोडीने इम कहतां,
पाप कर्म मैं तो कीधांरे घणेरां, थॉ साथे संयम लेता
तुम पर वारी, वारी हो. ॥६॥

पांच से चोर सत्ताईस जणासुं, संजम लियो सुखकार,
चरम केवली हुआ रे जम्बूजी, तज दीनो संसार
तुम पर वारी, वारी हो. ॥१०॥

शिवरमणी तो वर्याजी जम्बूजी, सादी अनन्ती वार,
ऐसा मुनि ने होज्यो जी वदना, नित्य उठी प्रभात
तुम पर वारी, वारी हो. ॥११॥

इति

———

(८) ❀ प्रभंजना कन्या की सज्झाय ❀

—देवचन्द्रजी महाराज कृत—

❀ढाल पहली❀

गिरि वैताढ्य ने ऊपरे, चक्राङ्का नयरी रे लो अहो च.,
चक्रायुध राजा तिहां, जीत्या सब नयरी रे लो अहो जीत्या
सब वैरी रे लो ॥१॥

मदनलता तस सुन्दरी, गुणशील अचंभा रे लो अहो गु.,
पुत्री तास प्रभंजना, रूपे रति रम्भा रे लो अहो रु. ॥२॥

विद्याधर भूचर सुता, बहु मली एक पंते रे लो अहो व.,
राधावेध मंडावियो, वर वरवा खंते रे लो अहो व. ॥३॥

कन्या एक हजार थी, प्रभंजना चाली रे लो अहो प्र.,
आर्यखंडमां आवतॉं, वन खंड विचाली रे लो अहो व. ॥४॥

निग्रंथी सुप्रतिष्ठिता, बहु गुरुणी संगेरे लो अहो व.,
साधु विहारे विचरंती, वन्दे मन रंगे रे लो अहो व. ॥५॥

आर्या पूंछे एव डो, उमावो श्यो छेरे लो अहो उ.,
विनये कन्या विनवे, वर वरवा इच्छे रे लो अहो व. ॥६॥

ऐस्यों हित जाणो तुमे, एहथी नवि सिद्धी रे लो अहो ए.,
विषय हलाहल विष तिहां: शी अमृत बुद्धि रे लो अहो शी. ॥७॥

भोग संग कारमा कह्या जिन राज सदाई रे लो अहो जिन.,
राग द्वेष संगे वधे, भव भ्रमण सदाई रे लो अहो भ. ॥८॥
राजसुता कहे साच ए, जो भाखो वाणी रे लो अहो जी.,
पण ए भूल अनादिनी, किम जावे छंडाणी रे लो अहो किम. ॥९॥
जेह तजे ते धन्य छे, सेवक जिन जीना रे लो अहो से.,
अमे जड़ पुद्गल रस रम्या. मोहे लयलीना रे लो अहो मो. ॥१०॥
अध्यातम रस पान थी, भीना मुनि राया रे लो अहो भी.,
ते पर परिणति रति तजी, निज तत्व समाया रे लो अहो
नि. ॥११॥
अमने पिण करवो घटे, कारण संयोगे रे लो अहो का.,
पण चेतनता परिणमें, जड़ पुद्गल भोगे रे लो अहो
ज. ॥१२॥
अवर कन्या पण उच्चरे, चिंतित हवे कीजे रे लो अहो चि.,
पछी परम पय साधवा, उद्यम साधी जे रे लो अहो उ. ॥१३॥
प्रभंजना कहे हे सखी, ए कायर प्राणी रे लो अहो ए.,
धर्म प्रथम करवो सदा, देवचन्द्रनी वाणी रे लो अहो
देवचन्द्रनी वाणी रे लो ॥१४॥

"ढाल दूसरी"

कहे साहुणी सुन कन्यकारे धन्या, ए संसार क्लेश,
एहने जे हितकारी गणेरे धन्या, ते मिथ्या आदेश रे
सु ज्ञानी कन्या सांभल हित उपदेश,

जग हितकारी जिनेश छेरे सु. कन्या, कीजे तसु आदेश रे
सुज्ञानी कन्या सांभल. ॥१॥

खरडी ने वली धोववु रे कन्या, तेह न श्रेष्ठाचार,
रत्न त्रयी साधन करो रे कन्या, मोहाधीनता वार रे सु ज्ञानीं
कन्या सांभल हित उपदेश. ॥२॥

जेह पुरुष वरवा तणी रे कन्या, इच्छे छे ते जीव,
स्यो संबंध पणे भणो रे कन्या, धारी काल सदीव रे
सु ज्ञानी कन्या सांभल. ॥३॥

तब प्रभंजना चिन्तवेरे अप्पा, तूं छे अनादि अनन्त,
ते पण मुझ सत्ता समोरे अप्पा, सहज अकृत सुमहन्त रे
सु. सा. ॥४॥

भव भमतां सवी जीवथी रे अप्पा, पाम्या सवि सम्बन्ध,
माता पिता भ्राता सुता रे अप्पा, पुत्र वधु प्रबंध रे
सु. सा. ॥५॥

स्यो सम्बंध कहुं इहांरे अप्पा, शत्रु मित्र पण थाय,
मित्र शत्रुता वली लहेरे अप्पा, इम संसार स्वभाव रे
सु. सा. ॥६॥

सत्ता सम सवी जीव छेरे अप्पा, जोता वस्तु स्वभाव,
एह माहरो एह पारकोरे अप्पा, सवि आरोपित भावरे
सु. सा. ॥७॥

गुरुणी आगल एहवु रे अप्पा, झूंठ केम कहेवाय,

स्वपर विवेचन कीजतारे अप्पा, महारो कोई न थाय रे
सु. सा. ॥८॥

भोग्य पणुं पण भूलथी रे अप्पा, माने पुद्गल खंध,
हूँ भोगी निज भावनो रे अप्पा, परथी नहीं प्रतिबंध रे
सु. सा. ॥९॥

सम्यक् ज्ञाने वहेंचतारे अप्पा, हूँ अमूर्त चिद्रूप,
कर्त्ता भोक्ता तत्वनो रे अप्पा, अक्षय अक्रिय अरूप रे
सु. सा. ॥१०॥

सर्व विभाव थकी जुदो रे अप्पा, निश्चय निज अनुभूत,
पूर्णानन्दी परिणामेरे अप्पा, नहीं पर परिणती रीत रे
सु. सा. ॥११॥

सिद्ध समो ए संग्रहरे अप्पा, पर रंगे पलटाय,
संभागी भावे करी रे अप्पा, अशुद्ध विभाव अपाय रे
सु. सा. ॥१२॥

शुद्ध निश्चय नये करीरे अप्पा, आत्म भाव अनन्त
तेह अशुद्ध नये करी रे अप्पा, दुष्ट विभाव महन्त रे
सु. सा. ॥१३॥

द्रव्य कर्म कर्त्ता थयो रे अप्पा, ते अशुद्ध व्यवहार,
तेह निवारो स्वपदे रे अप्पा, रमतां शुद्ध व्यवहार रे
सु. सा. ॥१४॥

व्यवहारे समरे थके रे अप्पा, समरे निश्चय तिंवार,

प्रवृत्ति समारे विकल्पनेरे अप्पा, तेह स्थिर परिणति सार रे
सु. सा. ॥१५॥

पुद्‌गलने पर जीवथी रे अप्पा, कीयो भेद विज्ञान,
बाधकता दूरे टली रे अप्पा, हवे कुण रोके ध्यान रे
सु. सा. ॥१६॥

आलंबन भावन वसे रे अप्पा, धर्म ध्यान प्रगटाय,
देव चन्द्र पद साधवा रे अप्पा, एहिज शुद्ध उपाय रे
सु. सा. ॥१७॥

ढाल तीजी

(तर्ज—धन्या श्री तूठो २ रे मुझ साहिब जगनो तूठो)

आयो आयो रे अनुभव आतम् चो आयो, शुद्ध निमित आलंबन
भजतां, आत्मालम्बन पायोरे ॥१॥

आत्मा क्षेत्री गुण पर्याय विधि, तिहाँ उपयोग रमायो,
पर परिणति पर रीते जाणी, तास विकल्प गमायो रे
आयो. ॥२॥

पृथक्त्व वितर्क शुक्ल आरोही, गुण गुणी एक समायो,
परजय द्रव्य वितर्क एकता, दुद्धर मोह खपायोरे
आयो. ॥३॥

अनन्तानुबंधी, सुभटने काढ़ी, दर्शन मोह गमायों।

तिरिगति हेतु प्रकृतित्तय करी, थयो आतमरस रायो रे
आयो. ॥४॥

द्वितीय तृतीय चोकड़ी खपावी, वेद युगल त्तय थायो,
हास्यादिक सत्ता थी ध्वंसी, उदय वेद मिटायो रे
आयो. ॥५॥

थई अवेदी ने अविकारी, हएयो संज्वल नो कपायो,
मार्यो मोह चरण त्तायक करी, पूर्ण समता समायो रे
आयो. ॥६॥

घन घाति त्रिक योधा लड़िया, ध्यान एकत्व ने ध्यायो,
ज्ञानावरणादिक भट पड़िया, जीत निशान घुरायो रे
आयो. ॥७॥

केवल ज्ञान दर्शन गुण प्रगट्या, महाराज पद पायो,
शेष अघाति कर्म त्तीण दल, उदय अबंध दिखायो रे
आयो. ॥८॥

सयोगी केवली थया प्रभंजना, लोकालोक जणायो,
तीन काल की त्रिविध वर्तना, एक समय उलखायो रे
आयो. ॥९॥

सर्व साध्वीये वंदना कीधी, गुणी विनय उपजायो,
देव देवी तत्र स्तवे गुण स्तुति, जय जय पड़ह वजायो रे
आयो. ॥१०॥

सहस कन्या दीत्ता लीधी, आश्रव सर्व तजायो,

जग उपगारी देश विहारी, शुद्ध धर्म दिपायो रे
आयो. ॥११॥

कारण योगे कारज साधे, तेह चतुर गाईजे
आतम साधन निर्मल साधे, परमानन्द पाईजे रे
आयो. ॥१२॥

एह अधिकार कह्यो गुण रागे, वैरागे मन भावी,
वसुदेवहिंडी तणे अनुसारे, मुनि गुण भावना भावी रे
आयो. ॥१३॥

मुनि गुण थुणतां भाव विशुद्धे, भाव विच्छेद न थावे,
पूर्णानन्द इहाँ थी उलसे, साधन शक्ति जमावे रे
आयो. ॥१४॥

मुनि गुण गावो भावना भावो ध्यावो सहज समाधि,
रत्न त्रयी एकत्वे खेलो, मेटी अनादि उपाधि रे
आयो. ॥१५॥

राज सागर पाठक उपगारी, ज्ञान धर्म दातारी,
दीपचन्द्र पाठक खरतरवर, देवचन्द्र सुखकारी रे
आयो. ॥१६॥

नगर लींबडी, माहीं रहने, वाचंयम स्तुति गाई,
आत्म रसिक श्रोता जन मनने, साधन रुचि उपजाई रे,
आयो. ॥१७॥

इम उत्तम गुण माला गावो, पावो हर्ष वंधाई,

जैन धर्म मार्ग रुचि करतां, मंगल लीला सदाई रे
आयो. ॥१८॥

इति

---

(७) ❀ खंधक मुनि की सज्झाय ❀

(मोहन सागर जी कृत)

नमो नमो खंधक महा मुनि, खंधक क्षमाता भण्डार रे,
उग्र विहारे मुनि विचरंतां, चारित्र खड्गनी धाररे
नमो नमो खंधक महा मुनि. ॥१॥

सुमति गुप्तिने धारतो, जित शत्रु राजानो नन्द रे
धारिणी उदरे जनमियो, दर्शन परमानन्द रे नमो. ॥२॥

धर्म घोप मुनि देशना, पामियो तिण प्रति बोध रे,
अनुमति लई मात तातनी, कर्म शुं युद्ध थयो यो योद्ध रे
नमो. ॥३॥

छठ अट्ठम आदि करी, दुष्कृत तपे तनु शोप रे,
रात्रि दिवस परिषह सहे, तो पिण मन नहीं रोष रे नमो. ॥४॥

दव दीधा खेजड़ा देहमां, चालता खड खड़े हाडरे,
तो पिण तप तपे आकरां, जाणतो अथिर संसार रे नमो. ॥५॥

इक समें भगिनी पुरी प्रते, आविया साधुजी सोय रे,
गोख बैठी चिंते बेनडी, ए मुझ बांधव होय रे नमो. ॥६॥

बेनने बांधव सांभर्यो, उलट्यो विरह अपार रे,
छातडी लागी छे फाटवा, नयणे वहे जिम नीर रे नमो. ॥७॥

राय चिंते मनमां इश्यो, ए कोई नारीनो यार रे,
सेवक ने कहे साधुनी, ल्यावो जी खाल उतार रे नमो. ॥८॥

"ढाल दूजी"

राय सेवक कहे साधुने, लाकडीथी जीव हणसुं रे,
अम ठाकुरनी एछे, आणा ते अमें आजे करशुं रे
अहो अहो साधुजी समता वरिया ॥१॥

मुनिवर मन मांहि आणंद्या, परिषह आव्यो जाणीरे,
कर्म खपावा अवसर एहवो, वली नहीं आवे प्राणी रे अहो. ॥२॥

एतो वलीय सखाई मलियो, भाई थकी भलेरो रे,
प्राणी, कायर पणो परिहरो, जिम न थाये भव फेरोरे अहो. ॥३॥

राय सेवक ने तव कहे मुनिवर, कठिन फरस मुझ काया रे,
वाधा रखे तुम हाथे थाये, कहो तिम रहिये भाया रे अहो. ॥४॥

चार शरण चतुर करीने, भव चरम आवंते रे,
शुक्ल ध्यान सुं तान लगाव्युं, काया वोसिराई अंते रे अहो.॥५॥

चड चड चामडी तेह उतारे, मुनि समता रस भीले रे,

क्षपक श्रेणी आरोहण करीने, कर्म कठिन ने पीले रे अहो. ॥६॥
चोथो ध्यान धरन्ता अन्ते, केवल लई मुनि सिद्धा रे,
अजर अमर पद मुनिवर पाम्या, कारज सगला सिद्धारे अहो. ॥७॥

हवे मुहपति लोहिये खरडी, पंखिये आमिष जाणी रे,
राजद्वारे ते लेई नांखी, सेवक लीधी ताणी रे अहो. ॥८॥

सेवक मुखथी वात सुणीने, बहिने मुहपति दीठी रे,
निश्चय भाई हणियो जाणी, हीये उठी अंगीठी रे अहो. ॥९॥

विरह विलाप करे राय राणी, साधुनी समता वखाणी रे,
अथिर संसार स्वरूप तेजाणी, संयम ले राय राणी रे अहो. ॥१०॥

आलोई पातिक सवि छंडी, कर्म कठिन ने निंदी रे,
तप दुक्कर करी काया गाली, शिव सुख लहें आणंदीरे
अहो. ॥११॥

भवियण एहवा मुनिवर वंदी, मानव भव फल लीजे रे,
कर जोडी मुनि मोहन विनवे, सेवक सुखियो कीजे रे
अहो अहो साधुजी समता वरिया. ॥१२॥

(१०) ❀ सुबाहु कुमार की सज्झाय ❀

हवे सुबाहु कुंवर इम विनवे, अमे लेशुं संयम भार माडी मोरीरे,
माँ मैं वीर प्रभुनी वाणी सांभली, तेणे मैं जाण्यो अथिर संसार
माडी मोरीरे हवे हुं न राचुं संसारमां ॥१॥

हांरे जाया तुझ विना सुना मन्दिर मालिया,
जाया तुझ विना सूनो संसार जाया मोरा रे,
माणक मोती ने मुद्रिका कांई ऋद्धि तणो नहीं पार जाया मोरारे,
तुझ विना घड़िय न नीसरे ॥२॥

हांरे माजी तन धन जोबन कारमों, कारमो कुटुम्ब परिवार
माडी मोरी रे,
कारमां सगपणमां कुण रहे, मैं तो जाण्यो अथिर संसार
माडी हवे. ॥३॥

हांरे जाया संजम पन्थ घणो आकरो, व्रत छे खांडानी धार जाया.
बावीस परिसह जीतवा, रहेवुं छे वनवास धार जाया मोरा रे
तुझ. ॥४॥

हांरे माजी वनमां रहे छे जिम मृगलो, तेहनी कोण करे छे
संभार माडी,
वन मृगनी परे चालस्युं, अम्हे एकलडाँ निरधार मां हवे. ॥५॥

हांरे माजी नरक निगोदमां उपनो, अनन्ती अनन्ती वार माडी,
छेदन भेदन बहु सह्या, कहतां नावे पार मा. हवे. ॥६॥

हांरे माजी काची ते काया कारमी सडी पडी विणासी जांय मा,
जीव जास्ये ने काया पडी रहेसी, मुवा पीछे बाली करे राख
मा. हवे. ॥७॥

हांरे जाया पॉचसौं नारियां, रूपे ते रम्भा समान जाया,

ऊंचाते कुलनी उपनी, रहेवा पांचसो पांचसो महेल जा. ॥८॥

हांरे माजी घरमां निकले एक नागिनी, सुखे निद्रा न विआय मा.
तो पांचसौं नागिणियों में किम रहुं, मारु मनड़ुं आकुल व्याकुल
थाय मा. हवे. ॥९॥

हांरे जाया एटला दिवस हुँ जाणती, रमाड़ीश वहु केरा बाल जाया,
पिण दिवस अटारो अवियों, तूं ले छे संयम भार जाया.
तुम. ॥१०॥

हांरे माजी मुसाफिर आव्यो कोई परुणलो, फरी भेगो थाय न
थाय मा.,
एम मानव भव पामवो दोहिलो, धर्म विना दुर्गति थाय
मा. हवे. ॥११॥

हवे पांचसौं नारियाँ इम विनवे, तेमाँ वडोडी करे रे विचार,
वालम मोरा हो,
स्वामी तमे तो संयम लेवा संचर्या. वालम अमने कोणे आधार वालम
मोरारे वालम विना किम रही सकुं. ॥१२॥

हांरे माजी मात-पिताने भाई वेनडी, नारी कुटुम्ब परिवार मा.,
अन्त समय अलगा रहे, एक जैन-धर्म तारण हार मा. हवे. ॥१३॥

हवे धारणी माता इम विनवे, सह पुत्र न रहे घरवास भविक जनरे,
एक दिवस नो राज भोगवी, संयम लीधो महावीर स्वामी पास
भविकजन रे सोभागी कुंवर संयम आदर्यो. ॥१४॥

तप तज करी काया सोखवी, आराधी गया देव लोक भविक जनरे,
पनरहे भव पूरा करी, महाविदेह क्षेत्रमां जासी मोक्ष भविक जनरे
सोभागी कुंवर समय आदर्यो. ॥१५॥

इति

★ (११) वज्र स्वामी की सज्झाय ★

✽ पद्मविजय जी कृत सज्झाय ✽

सांभल जो तुमे अद्भुत वातां, वयर कुंवर मुनिवरनी रे,
षट् महिना ना गुरु-झोलीमां, आंवे केली करन्ता रे,
तीन वर्षना साध्वी मुख थी, अंग इग्यारे भणन्ता रे सां. ॥१॥

राजसभामां नवि क्षोभाणा, मात सुखडली देखी रे,
गुरुए दीधो ओघो मुंहपति, लीधां सर्वे उवेखी रे सा. ॥२॥

गुरु संगाते विहार करे मुनि, पाले शुद्ध आचार रे,
बालपणा थी महा उपयोगी, संवेगी सिरदार रे सां. ॥३॥

कोला पाकने घेवर भिक्षा, दोय ठामे नवि लीधी रे,
गगन गामिनी वैक्रिय लब्धि, देवे जेने दीधी रे सा. ॥४॥

दश पूर्व भणिया जे मुनिवर, भद्रगुप्त गुरु पास रे,
क्षीरास्त्रव प्रमुख जे लब्धि, प्रकट जास प्रकाश रे सा. ॥५॥
कोडी सैंकडा धनने संचे, कन्या रुक्मणी नाम रे,
सेठ धन्ना वह दीये पण न लिये, वधते शुभ परिणामरे सां. ॥६॥
देई उपदेश ने रुक्मणी नारी, तारी दीक्षा आपी रे,
युग प्रधान जे विचरे जग में, सूरज तेज प्रतापी रे सां. ॥७॥
समकित शियलतुम्ब धरी करमां, मोह सागर कर्यो ओछोरे,
ते किम डूवे नार-नदीमां एह तो मुनिवर मोटोरे सां. ॥८॥
जेणे दुर्भिक्षे संग लेईने, मूक्यो नगर सुकाल रे,
शासन सोभा उन्नति कारण, पुष्प पद्म सुविशाल रे सां. ॥९॥
बौद्ध रायने पण प्रतिबोध्यो, कीधो शासन रागी रे,
शासन सोभा जयपताका, अम्बर जईने लागी रे सां. ॥१०॥
विसर्यो सूंठ गांठियो काने, आवश्यक वेला जाणी रे,
विसरे नहीं पण एह विसर्यो, आयु अल्प पिछाणी रे सां. ॥११॥
लाख सौनैये हॉडि चढे जिम, बीजे दिवस सुकाल रे,
इम संभलावी वीरसेन ने, जाणी अणसण काल रे सां. ॥१२॥
रथावर्त गिरी जई अण सण कीधो, सोहम हरि तिहां आवेरे,
प्रदक्षिण पर्वत ने देईने, मुनिवर वन्दे भावेरे सां. ॥१३॥
धन्नसिंह गिरी सूरि उत्तम, जेहना एह पट धारी रे,
पद्म विजय कहे गुरु पद पंकज, नित्य नमिये नर नारी रे सां ॥१४॥

इति

(१२) ★ स्थूलिभद्र स्वामी की सज्झाय ★

(ऋषभ दास कृत)

श्री स्थूलि भद्र मुनिगण में सिरदार जो चोमासो आयोने
कोश्या घरें जो,
चित्रामण शालाए तप जप आदर्यो जो, आदरियां व्रत आव्या छे
अम घेरजो
सुन्दर सुन्दरी चम्पक वरणी देहजो, हम तुम सरिखो मेलो
आसंसार मांजो ॥१॥
संसार में जोयो सकल स्वरूप जो, दर्पणनी छायामें जेहवो रूप जो,
सुपनानी सुखडली भूख भांगे नहीं जो ॥२॥
ना कहे शो तो नाटक करशुं आज जो, बारह वर्षनी माया छे
मुनिराज जो,
ते छोडी किम जाऊं हुँ आशा भरी जो ॥३॥
आशा भरियो चेतन काल अनादिजो, भमियो धर्म ने हीन थयो
प्रमादीजो,
न जाणी मैं तो सुखनी करणी जोगीनी जो ॥४॥
जोगी तो जंगल में वासो वसियो जो, वेश्याने मंदिरे भोजन
रसिया जो,
तुमने दीठा एहवा संयम साधतां जो ॥५॥

साधु सो संजम इच्छारोध विचारी जो, कुर्मा पुत्र थया नाणी
घर वारी जो,
पाणी मांहि कोरो पंकज जाणिये जो ॥६॥

जाणी येतो सघली तुमारी वात जो, मेवा मीठा रसवंता
बहु जात जो,
अमर भूषण नित नवली भांते लावताजो, ॥७॥

लावतां तो देती आदर मान जो, काया जाणे रंग पतंग समान जो,
ठाली ने शी करवी एहवी प्रीतडलीजो ॥८॥

प्रीतलडी तो करतां रंगभर सेज जो, रमताने देखाडतां बहु हेज जो,
रीसाणी मनावी मुझने सांभरे जो ॥९॥

सांभरे तो मुनिवर मनडुं वाले जो, ढांकी अग्नि उघाडे पर जाले जो,
संजम मांहीं एह छे दूषण मोटको जो ॥१०॥

मोटकुं तो आव्युं नन्दन तेडुं जो, जाते ने कहि वहे तुम्हारो
मनडुं जो,
मैं तुमने तिहां कौल करने मोकल्या जो ॥११॥

मोकल्या तो मार्ग मांही मलिया जो, संभूति आचारज ज्ञानी
बलियाजो,
संयम दीध समकित तेणे शीखव्युं जो ॥१२॥

शीखव्युं तो कही देखाडो हमने जो, धर्म करतां पुण्य बडेरो
तुमने जो,

समताने घर आवी कोश्या एम वदे जो ॥१३॥

वदे मुनिवर शंकाने परिहार जो, समकित मूले श्रावकनां व्रत बार जो,
प्राणातिपातादिक थूलथी उच्चरे जो ॥१४॥

उच्चरे तो वीत्यो छै चौमासो जो, आणालईने आव्या गुरुने पासजो,
श्रुतनाणी कहेवाणा चउदे पूर्वी जो ॥१५॥

पूर्वी थई ने तार्या प्राणी थोक जो, उज्वल ध्याने तेह गया देवलोक जो,
ऋषभ कहे नित तेहने हो जो वन्दना जो ॥१६॥

इति

---

(१३) ★ श्री स्थूलिभद्र स्वामी की सज्झाय ★

(राग—भरतरी)

सूर इन्दु—कृत

कोशा—वेश जोई स्वामी आपनो, लागी तनडामां लायजी,
अण धायु स्वामी आशुं कर्यो, लाजे सुन्दर कायजी
कोण धूतारे तमने भोलव्या ॥१॥

(

आवी खबर होत तो, जावा देत नहीं नाथ जी,
छेतरी छेह दीधो मने, पण छोडुं नहीं साथजी
कोण. ॥२॥

स्थूलिभद्र—बोध सुणी सुगुरु तणो, लीधो संयम भारजी,
मात-पिता परिवार सहु, जूठो आल पंपाल जी
नथी रे धुतारे मने भोलव्यों ॥३॥

एवुं जाणी कोशा सुन्दरी, धर्यो साधु वेशजी,
आव्यो गुरुनी आज्ञा लई, देवा तुंने उपदेश जी
नाथी. ॥४॥

कोशा—काल सवारे भेगा रही, लीधा सुख अपारजी,
ते मने बोध देवा आवीया, जोग धरी आवार जी
जोग स्वामी आंहीं नहीं रहे ॥५॥

कपट करी मने छोडवा, आव्या तमे निरधारजी,
पण छोडुं नहीं कदी नाथजो, नथी नारी गमारजी
जोग स्वा. ॥६॥

स्थूलिभद्र—छोड्या मातपिता वली, छोड्या सहु परिवार जी,
ऋद्धि सिद्ध मैं तजी दीधी, मानी सघलुं असारजी
छेटी रही कर वात तूं ॥७॥

जोग धर्यो अमैं साधुनो, छोड्यो सघलानो प्यारजी,
मात समान गणुं तने, सत्य कहुँ निरधार जी
छेटी रही ॥८॥

कोशा—बार वरषनी प्रीतडी, पलमां तूटी न जायजी,
पस्तावो पाछल थी थसे, कहुँ लागी ने पाय जी
जोग स्वामी. ॥९॥

नारी चरित्र जोई नाथजी, तुरत छोडशो जोगजी,
माटे चेतो प्रथम तुमे, पछी हसस सहु लोकजी
जोग स्वामी. ॥१०॥

स्थल भद्र—चाला जोई तारा सुन्दरी, डगु' नहीं हूं लगारजी,
काम शत्रु मैं कबजे कर्यो, जाणी पाप अपार जी
छेटी, ॥११॥

छेटी रही गमेते करे, मारे माटे उपायजी,
पण तारा सामु' जोउं नहीं, शाने करे हाय हाय जी
छेटी. ॥१२॥

कोशा—मांछी पकडेछे नालमां, जलमां थी जेम मीनजी,
तेम मारा नेत्रना बाण थी, करीश तमने आधीनजी.
जोग. ॥१३॥

ढोंग करवा तजी दई, प्रीते ग्रहो मुज हाथ जी,
कालजुं कपाय छे माहरुं, वचन सुणने नाथ जी
जोग स्वामी ॥१४॥

स्थूलि भद्र—बार वरस तुज आगले, रहयो तुज आवासजी,
विध विध सुख मैं भोगव्या, कीधा भोग विलासजी
आशा तजो हवे माहरी ॥१५॥

त्यारे हतो अज्ञान हूं, हतो कामनो अंधजी,
पण हवे ते रस में तज्यो, सुणी शास्त्रनां बंधजी
आशा ॥१६॥

कोशा—ज्ञानी मुनिने ऋषिओ, मोटा विद्वान् भूप जी,
ते पण दासबनी गया, जोइ नारीनु रूपजी
जोग. ॥१७॥

साधु पणो स्वामी नहीं रहे, मिथ्या वदुं नहीं लेशजी,
देखी नाटरंभ माहरो, तजशो साधुनो वेश जी
जोग. ॥१८॥

स्थूलि भद्र—विध विध भूषणो धारीने, सजी रूड़ा शणगारजी,
प्राण काडी नाखे ताहरो, कुदी कुदी आवारजी,
आशा. ॥१९॥

तोपण सामु जोऊं नहीं, गणुं विष समानजी
सूर्य उगे पश्चिम कदी, तोपण छोडुं न मानजी
आशा. ॥२०॥

कोशा—भिन्न भिन्न नाटक मै कर्या, स्वामी आपनी पासजी,
तोपण सामु जोइ तमै, पूरी नहीं मन आशजी
हाथ ग्रहो हवे माहरो ॥२१॥

हस्त जौड़ी हवे वीनवुं, प्यारा प्राण जीवनजी,
बार बरसनी प्रीतडी, याद करो तमे मनजी
हाथ. ॥२२॥

स्थूलिभद्र—चेत चेत कोशा सुन्दरी, शुं कहूँ वारंवारजी,
आ संसार असार छे, नथी सार लगार जी
सार्थक करो हवे देहने ॥२३॥

जन्मधरी संसार मां, नहीं ओलख्यो धर्मजी,
विध विध वैभव भोगवी, कीधा घणा कुकर्मजी
सार्थक. ॥२४॥

ते सहु भोगवव पड़े। मुआ पछी तमामजी,
अधर्मी प्राणीने मले नहीं शरणुं कोई ठामजी
सार्थक ॥२५॥

सिंधुरूपी संसारमा, मानव मीनरूप धारजी,
जंजाल जालरूपी डगडगे, कालरूपी मछी मारजी
सार्थक. ॥२६॥

कोश—विपय रसवाली गणी, कीधा भोग विलास जी,
धर्मना कार्य कर्या नहीं, राखी भोगनी आशजी
उद्धार करो मुनि माहरो ॥२७॥

व्रत चुकाववा आपनु, कीधा नाचने गानजी,
छेड़ करी मुनी आपनी वनी छेक अज्ञानजी
उद्धार. ॥२८॥

वार वरस सुख भोगव्युं, खरच्या खूव दीनार जी,
तोए हूँ तृप्त थइ नहीं, धिक धिक मुज धिकार जी
उद्धार ॥२६॥

श्रेय करो मुनिवर माहरू, बतावी ने शुभ ज्ञानजी,
धन्य धन्य छे आपने, दीसो मेरू समानजी
उद्धार ॥३०॥

स्थूलि भद्र—छोड़ी मोह संसार नो, धारो शीलव्रत सारजी,
तो सुख शान्ति सदा मले, पामो भवजल पारजी
सार्थक. ॥३१॥

कोशा—धन्य मुनिवर आपने, धन्य सकडाल तातजी,
धन्य शंभूति विजय मुनि, धन्य लाछादे माताजी
मुक्त करी मोह जालथी ॥३२॥

स्थूलि भद्र—आज्ञा दीओ हवे मुझने, जाऊं मुज गुरु पासजी,
चौमासुं पुरुं थया पछी, साधु छोड़े आवास जी
रुडी रीते शीलव्रत पालजो ॥३३॥

कोशा—दर्शन आपजो मुझने, करवा अमृत पानजी,
सुर इन्दु कहे स्थूली भद्रजी, थयासिंह समानजी
धन्य छे मुनिवर आपने ॥३४॥

इति

———

(१४) ★ स्थूलिभद्रजी की सज्झाय ★

※ माणक विजय जी कृत ※

(तर्ज—पार्श्व तोरी निरखण दो असवारी)

नर भव रत्न चिन्तामणी जाणी, जाणी अथिर संसार,
संयम लेई स्थूलिभद्रजी आव्या, कोश्याने आगार
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१॥

कोश्या कहे स्थूलिभद्र ने रे, ए शुं कीधूं काज,
कोण मल्यो तुमने धुतारो, कोणे भोलविया आज
वालमजी नहीं छोडू हवे साथ ॥२॥

गुरु वयणे असार संसार ने, जाणी छोड्यो परिवार,
नरक नी खाण ने मूत्र नी क्यारी, जाणी ने छोडी नार-
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥३॥

गुरु आणा लेई तुम घेरे, प्रति बोधवा हूं आयो,
सुख संसारी दुःख देनारा, मृग जल जेम जीव धायो
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥४॥

मोहे भान भूलेलो ज्यारे, तुम आवासे वसियो,
तुम सामु हवे नहीं जोऊं वैरागे मन धसियो
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥५॥

काम शत्रु में कब्जे किधो, मात समान तुझ जाणी,

तारा चरित्र थी नहीं चलूं, पाप घणुं दुःख खाणी
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥६॥

भोग ने विष किंपाक थी अधिक, जाण्या अति दुःख दाय,
हवे हूँ नथी भान भूलेलो, जाण्यो में धर्म सवाय

कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥७॥

विषय रावण ने राज्य गुमाव्यां, पद्मोत्तर राज्य भ्रष्ट,
चन्द्र प्रद्योतन दासी माँ मोह्यो, नरके मणिरथ दुःष्ट
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥८॥

शियले यश कीर्ति होय जगमां. संकट सवि दूर जाय,
अग्नि जल जेम शीतल होवे, सर्प कुसुमनी माल
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥९॥

सुदर्शन नी आपदा नाठी, शूली सिंहासन थाय,
नर राय देव गंधर्व गुण गावे, चरणों में शीश नमाय
कोश्याजी विषय थी. ॥ ०॥

वात विषयनी दूर निवारी, धर समकित सुखकार,
व्रतो श्रावकना बारे पाली, कर सफल अवतार
कोश्याजी विषयथी मनडो वार ॥११॥

विषय मां अंध बनी हूँ स्वामी, नाच गान बहु कीध,
षड् रस भोजन लीया तोये, आंख ऊंची नवि कीध
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥१२॥

क्षणिक सुखमां जन्म गुमायो, धर्म न कीधो लगार,
साचो राम बतावी तुमे, कीधो मम उपगार
कोश्याजी विषय थी मनडो वारो. ॥१३॥

भव समुद्र पडंती मुझने, समकित नाव देई तारी,
धर्म जिनन्द नो पालीश प्रीते, तुमे खरा उपकारी
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१४॥

प्रतिबोधी कोश्या वेश्याने, पाली संयम सार,
स्वर्ग मांहिं मुनिवर जी पोच्या, जाशे मुक्ति मोझार
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१५॥

शियल व्रते थई सुखी कोश्याजी, निशदिन मुनि गुण गाय,
चौरासी चौवीसी नामज रहेशे, नामे नव निधि थाय
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१६॥

विजय मोहन सूरि राय प्रतापे, माणेक विजय पंन्यास
निशदिन ए मुनिवर ने गावे, तन मन धरी उल्लास,
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१७॥

इति

———

कीलीना टोलामां कुशले, रत्न बांछे लई जावा बोलो नांजी ॥७॥

* स्थूलिभद्र नो जवाब *

स्थूलिभद्र कहे सुण रे कोश्या, कही ते साची वाणी,
मा मोसाल ए पदने अर्थे, तूं मुझ मात समाणी,
छोडो नांजी, छोडो नाँजी छोडो नाँजी,
विषय ना वयणा विरुंआ छोडो नांजी. ॥१॥

घटता बोल कह्या ते सगला, उथाप्यां नवि जाये,
नव विध वाड राखे ते, मुनिवर जिनागम कहेवाये छोडो. ॥२॥

चित्र लिखित पूतलडी ने पण, निरखे नहीं सोभागी,
तो किम निश दिन नारी संगे, राचे वड वैरागी, छोडो. ॥३॥

सरस आहार नवि खावे मुनिवर, तप जप क्रिया धारी,
वन मृगनी परे ममता मूकी, विचरे मुनि ब्रह्मचारी छोडो. ॥४॥

कोइक भावी पदार्थ थी हूँ, गुरु आज्ञा लेई आव्यो,
पण एम न रहेवुं घटे मुनिने, मुझ मन अर्थे ए भाव्यो बोलो. ॥५॥

विषय विपाक तणा फल जाणी, कोशा कीधी दूरे,
सरल स्वभाव सही गुण आवे, तरीया भवजल पूरे बोलो. ॥६॥

मीठी वाणी मुनिवर नी झिली, वेश्याने मन भेदी,
शीलव्रत अंगे अजवाली, विषय वेलिने छेदी बोलो. ॥७॥

धन धन शकडालनो नन्दन धन लाछां दे माय,
श्री महिमाप्रभ सूरि नो, भाव नमे मुनि पाय छोडो. ॥८॥

इति

---

(१६) ❀ स्थूलिभद्र जी को सज्झाय ❀

❀ उ० क्षमा कल्याण जी म० कृत ❀

(तर्ज—तीरथ ते नमूरे, ए देशी)

श्री महावीर जिनेसरु, त्रिभुवन गुरुजी,
तसु आठम पटधार, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१॥

पाटली पुरी सोहामणु, महि मंडणु जी,
तिहां पायो अवतार, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥२॥

नंद नरिंद मंत्रीश्वरू, गुण आगरुजी,
श्री सकडाल सुपुत्र, श्रीस्थूलिभद्र नमो ॥३॥

लाछना दे नन्दन भलो, मुनि गुण निलोजी,
नागर द्विज कुलदीप, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥४॥

श्री संभूति विजय गुरु, पूरब धरुजी,
व्रत लीधा तसु पास, स्थूलिभद्र नमो ॥५॥
कोशा वेश्या प्रति बोध, श्री सद् गुरु स्तवे जी,
दुक्कर दुक्कर काम, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥६॥
चौद पूरब शिख्यो वली, श्रुत केवली जी,
श्री भद्रबाहु समीप, श्री स्थूलिभद्र नमो. ॥७॥
संयम पाल्यो निर्मलो, त्रिविधें भलोजी,
जंगम युग प्रधान, श्री स्थूलिभद्र नमो. ॥८॥
पांच मास पंच दिन सही, उपर कहीं जी,
वरस नवाणु आय, श्री स्थूलिभद्र नमो. ॥९॥
करि अणसण आराधना, शुभ वासना जी,
पोहतो स्वर्ग मोझार, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१०॥
चुलसी चोवीसी लगें, जस जग मगे जी,
रहसे तेहनो नाम, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥११॥
वसु युग वसु चन्द्र वत्सरे, १८२८ पाटली पुरे जी,
जसु पद थापना कीध, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१२॥
वाचक अमृत धर्म नो, थुणे शुभ मनो जी,
शिष्य क्षमा कल्याण, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१३॥

इति

———

(१७) ❁ श्री स्थूलिभद्रजी की सज्झाय ❁

❁ खुशाल विजयजी कृत ❁

(तर्ज—महावीर प्रभु घर आवे)

एक दिन कोरश चित्र अंगे वैठी छे मनमां उछरंगे,
चार पांच सहेली संगे रे, स्थूलिभद्र मुनि घर आवे,
आवे आवे लाछन देनो नन्दरे स्थूलिभद्र मुनि. ॥१॥

मारे आज मोतीडे महेवूठा, देव देवी सर्वे मुझ तूठा,
मेतो जीवन नयने दीठा रे स्थूलि. ॥२॥

आवी उतर्या चित्रशाला, रुडी रत्ने जड़ी रढियाला,
माहे मूंगिया मोती सुरसालारे स्थूलि. ॥३॥

पकवान जमिया बहुभांत, उपर चोशठ शाकनी जात,
तेतो न धरी विषयनी वातरे स्थूलिभद्र मुनि घर. ॥४॥

कोशा सजती सोले शणगार, काजल कंकुने गले हार,
अणवट अंगूठी विछिया साररे स्थूलि. ॥५॥

द्वादश थप मप मादल वाजे, भेरी भूंगल वीणा गाजे,
एम रूपे अपसरा विराजे रे स्थूलि. ॥६॥

कोशा ए वात विषयनी वखाणी, स्थूलिभद्र ए हृदय नवि आणी,
हूँ तो परण्यो शिव पटराणी रे स्थूलि. ॥७॥

एवा बहुविध नाटक करिया, स्थूलिभद्र ए हृदय नवि धरिया,
साधु समता रसना दरिया रे स्थूलि. ॥८॥

सुख एणे जीव अनुभवियो, काल अनन्तो एम गमियों,
तोंय तृप्ती जीव न पामियो रे स्थूलि. ॥९॥

वेश्याने कीधी समकित धारी, विषय रस सुखने निवारी,
एहवा साधुनी जाऊं बलिहारी रे स्थूलि. ॥१०॥

एहवो पूरो थयो चोमासो, स्थूलिभद्र आव्या गुरुपासो,
दुःक्कर दुःक्कर व्रत उलासोरे स्थूलि. ॥११॥

नाम रख्यो छे जगमांहे, चोरासी चोवीसी त्याहें,
साधु पोंहता देवलोक मांहे रे स्थूलि ॥१२॥

पण्डित हस्ति विजय कविराया, एहवा सुगुरु तणे सुपसाया,
शिष्य खुशाल विजय गुण गायारे स्थूलिभद्र. ॥१३॥

इति

★ स्थूलिभद्र जी की सज्झाय ★

* पूजानी देशी *

आज सखी जाण्युं आवशे रे, निश्चय स्थूलिभद्र मारो नाथ,
आज निशा में सुपन लह्यु रे, मन्दिर पधारे म्हारे साथ
आज मारे मन्दिर पधारे मारो नाथ ॥१॥

हरखे मुज हैडुं थयुं रे, रोम रोम विकस्यो मारो गात,
रसीयो मारो संगथीरे, प्रेम मलशे मुझने प्रांत आज. ॥२॥

एहवे गुरु आणा लई रे, स्थूलिभद्र मुनिवर चतुर चोमास,
कोशा मन्दिर आवीयारे, आदरी पूरण जोग अभ्यास. ॥३॥

कोशा कर जोडी रही रे, लली लली करती लागे पाय,
प्रभु भले पधारीया रे, मुज दासी पर करीय पसाय आज. ॥४॥

आज मारे आंगणे रे, मीठा दधडे वूठा मेह,
घर आंगण गंगा वहीरे, प्रगट्या पूरण सुकृत स्नेह आज. ॥५॥

करुणा निधी करुणा करीरे, मन्दिर पावन मारो कीध,
दुःखडा सहु दूरे गयांरे, में आज संपूर्ण अमृत पीध आज. ॥६॥

चित्रशालामां चूंपशुं रे, रंगे नित प्रत्येरहीये स्वाम,
भगति युगति सहु साचवुं रे, प्रेम धरी हुं करी प्रणाम आज. ॥७॥

स्थूलभद्र कहे कोश्या ! सुणोरे, नहिं हवे नवलो तेहज स्नेह,
हुॅं साधु थयो संयमी रे, रंगभर राग न राखुं रेह आज. ॥८॥

अलगी रहेजे मुजथीरे, उठ हाथ मूकी इला (भूमि) अेह,
चाला करजे चूंप शुं रे, जिम जाणे तिम मनथी जेह आज. ॥९॥

हवे व्रत चुकाववा रे, कोशा रंगे रचीयो रास,
नाटक मांडया नवा नवारे, उलटे जेहथी मदन उल्लास आज. ॥१०॥

घघरीनां घम कारमां रे, झांझरना तिम झण कार,
पाय तरना पड छंदमां रे, ठमके विन्छीयाना ठमकार आ. ॥११॥

धपमप मादल वाजतारे, वीणा शब्द तणा रणकार,
ताल तान तूटे नहीं रे, एणी परे नाचे नृत्य अपार आ. ॥१२॥
फुंदडी नी परे फरे रे, लटके नमती अंग न माय,
मुखडाना मटका करे रे, खलके चूडीना खणकार आ. ॥१३॥
ये नेत्र कटाक्ष निहालतारे, पडे पतंग वर प्रेमने पास,
स्थूलिभद्र चित चूके नहींरे, कोशा मन थी थाय निराश आ. ॥१४॥
कोशा पद प्रणमी करीरे, धन धने मुनिवर तुज अवतार,
शियल शिरोमणि सुंदररे, जीत्यो जालिम मदन विकार ॥१५॥
हवे तारो मुज स्वामी जी रे, दाखो मुझने धर्म दयाल,
श्रावक व्रत समजावीने रे,साधी समकित दीधी कृपाल आ. ॥१६॥
चोथो व्रत चोखूं करीरे, मुनिवरे त्यांथी कीधो विहारे,
आर्य संभूति गुरु उच्चरे रे, आवो दुक्कर २ करनार आ. ॥१७॥
अेम कोशा प्रति बुझवी रे, स्थूलिभद्र नाम रह्यो निर धार,
संप्रति सुर पद भोगवेरे, आगे लेशे भवनो पार आ. ॥१८॥
एहवा गुणी गुण गावतारे, लहीये लीला लाभ अपार,
चहुंगति चूरीने रे, मुक्ति महानन्द पदमन धार आ.
आज मारे मन्दिर. ॥१६।

इति

---

(१६) ❀ श्री मेतारज मुनि की सज्झाय ❀

❀ राज विजयजी कृत ❀

(तर्ज —झाझरिया मुनिवर)

सम दम गुणना आगरुजी, पंचमहा व्रत धार,
मांसखमणने पारणे जी, राजगृही नगरी मोझार
मेतारज मुनिवर ! धन धन तुम अवतार ॥१॥

सोनी ने घर आविया जी, मेतारज ऋषि राय,
जवला घडतो ऊठियोजी, वन्दे मुनिनो पाय मेताराज. ॥२॥

आज फल्यो घर आंगणोजी, विण काले सहकार,
ल्यो भिक्षा छे सूजती जी, मोदक तणो आहार मेता. ॥३॥

क्रोंच जीव जवला चुग्याजी, पहोरी गया मुनिराज,
सोनी मन शंका थई जी, साधु तणो एह काज मेतार. ॥४॥

रीस करी ऋषिने कहेजी, द्यो जवला मुज आज,
वाध्रे शीश विंटीयु जी, तडके नांख्यो मुनिराज मेता. ॥५॥

फट फट फूटे हांडकांजी, तट तट तूटे रे चाम,
सोनीये परिषह कियोजी मुनि राख्यो मन ठाम मेता. ॥६॥

धन्य धन्य ते मोटा मुनि, मन मां न आण्यों रोष,
आतम निन्दा मुनि करेंजी, सोनी तणो नहीं दोष मेता. ॥७॥

गज सुकुमाल संताविया जी, बांधी माटीनी पाल,
खैरअंगार शिर धर्याजी, मुगते गया तत्काल मेतार. ॥८॥

वाघरणे शरीर विलुरियुं जी, साधु सुकोमल देह,
केवल लई मुक्ते गयाजी, इम अरणिक अणगार मेतार. ॥९॥
पालक पापी पीलियाजी, खंधक सूरिना शिष्य,
अंबड चेला पांचसो जी, नमो नमो ते जगदीश मेतार. ॥१०॥
एवा ऋषि संभारतांजी, मेतारज ऋषि राय,
अंतगड़ हुआ केवलीजी, हुं प्रणमुं तस पाय मेतार. ॥११॥
भारी काष्टनी स्त्री तिहांजी, लावी नाखी तेणी वार,
धमके पंखी जागियो जी, जवला नाख्या तेणी वार मेतार. ॥१२॥
जवला देखी बींटमांजी, मनमां डर्यो रे सोनार,
ओघो मुहपत्ति साधुना जी, लेई थयो अणगार मेंतारज. ॥१३॥
चारित्र पाली निर्मलोजी, थिरकरी मन वच काय,
राज विजय रंगे भणेजी, साधु तणी रे सज्झाय मे तारज. ॥१४॥

इति

---

(२०) ★ श्री मेतारज ऋषि की सज्झाय ★

※ हर्ष सूरिजी कृत ※

श्रेणिक राजा तणो रे जमाई, जाती नो साहूँ कार जी,
मेतारज संयम आदरीयो, क्षमा तणा भण्डार जी श्रेणिक, ॥१॥

(२१) ❀ श्री भरत चक्रवर्ती की सज्झाय ❀

आभरण अलंकार सवला उत्तारी, मस्तक सेती पागी,
आपो आपथइ ने बैठो, तब देह दीसे छे नागी
भरतेश्वर भूपति भयो रे वैरागी ॥१॥

अनित्य भावना ऐसी रे भावी, चार कर्म गया भागी,
देवता ए दीधो ओघो मुहपति, जिन शासन ना रागी भरते. ॥२॥

स्वांग देखी भरतेश्वर केरो, सहियर हसवा ने लागी,
हसवानी अबखबर पड़ेगी, रहेजो अमशुं आगी भरते. ॥३॥

चोराशी लाख हयवर गयवर, छन्नुक्रोड़ है पागी,
चोराशी लाख रथ संग्रामी, ततक्षण दीधा छे त्यागी भरते. ॥४॥

चार क्रोड मण अन्न नित्य सीझे, दश लाख मण लूण लागी,
चौसठ सहस अन्ते उरी प्यारी, सुरता मोक्ष सें लागीभरते, ॥५॥

अडतालीश कोशमां लश्कर पड़ेछे, दुश्मन जाय छे भागी,
चौद रत्न तो अनुमती मांगे, ममता सहु शुं भागी भरते. ॥६॥

तीन क्रोड गोकुल धण दुझे, एक क्रोड हल सागी,
चोसठ सहस अंतेउरी त्यागी, ममता सहुं शुं भागी भरते. ॥७॥

भरीरे सभामां भरतेश्वर बोल्या, उठो खडा रहो जागी,
आ लोक उपर नजर न देशो, नजर देजो तुमे आगी भरते. ॥८॥

वचन सुणी भरतेश्वर केरां, दश सहस्त्र ऊठ्या छे जागी,
कुटुंब कबीलो हाट हवेली, ततक्षण दीधां छे त्यागी भरते. ॥९॥

एक लाख पुरब लगे संयम, पाली केवली सार,
शेष अघाती कर्म खपावी, पहोंत्यां मोक्ष मोझार भरते. ॥१०॥

१. पयदल—सेना

इति

---

(२२) "नेम राजुल की सज्झाय"

※ रूपविजयजी कृत ※

(तर्ज—नदी जमुना के तीर उडे दोय पंखीया)

पीयुजी पीयुजी रे नाम, जपुं दिन रातियां, पीयुजी चाल्या परदेश,
तपे मोरि छातियां, पग पग जोतीवाट व्हालेश्वर कब मिले,
नीर विछोयां मीन, के ते ज्युं टलवले, ॥१॥
सुन्दर मन्दिर सेज साहिब विण नवि गमे, जिहां रे व्हालेश्वर नेम,
तिहाँ मारुं मन गमें, जो होवे सज्जन दूर, तोही पासे वसे,
किहां पंकज किहां चन्द, देखी मन उल्लसे ॥२॥
निः स्नेही शुं प्रीत, म करजो को सही,
पतंग जलावे देह, दीपक मन में नहीं,

वहाला माणसनो वियोग, म होजो केहने,
सालेरे साल समान, हैयामां तेहने ॥३॥
विरह व्यथानी पीड, जोबन वय अति दहे,
जेनो पियु परदेश, ते माणस दुःख सहे,
झुरि झुरि पंजर कीध, काया कमलज जिसी,
हजीय न आव्यो नेम, मली न नयणे हसी ॥४॥
जेहने जेहशुं राग, टाल्यो ते नवि टले,
चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसे मले,
आंबा केरो स्वाद, लींबु ते नवि धरे,
जे नाह्या गंगा नीर, ते छिल्लर किम तरे ॥५॥
जे रम्या मालती फूल, धतूरे किम रमे,
जेहने घृत शुं प्रेम, ते तेले किम जिमे,
जेहने चतुर शुं नेह, ते अवरने शुं करे,
नव जोवन तजी नेम, वैरागी थई फरे ॥६॥
राजुल रूप निधान, पहोंती सहसावने,
जई वांद्या प्रभु नेम, संजम लेई एकमने,
पाम्या केवल ज्ञान, पोंहती मननी रली,
रूप विजय प्रभु नेम, भेट आशा फली ॥७॥

इति

———

(२३) ❀ राजुल और रहनेमी की सज्झाय ❀

(तर्ज–भेखरे उतारो राज भरथरी)

धिग मुनि धिग तुमने, धिग तुम्हारा वेणजी,
चारित्र तुमारुं अे ले गयुं, कूडा तमारा केणजी
मोहरे उतारो मुनिराज जी ॥१॥

मात पिता कुल बोलीयुं, बोल्युं चारित्र आजजी,
विषय कारण मोह लाविया, कूडा कृत्यने काजजी मोहरे. ॥२॥

तप जप करवो छोडी दीयो, राणी राजुल नारजी,
संसारनां सुख भोगवो, करो सफल अव[illegible]जी प्रीतीरे धरो.
प्रमदया मुझ थकी ॥३॥

मेवा फल फूल लाव तो, हूँ तमारे आवास जी,
होश धरीने लेतां तमें, तेथी थई बहु आशजी प्रीतीरे धरो. ॥४॥

वस्त्र भूषण लिधां प्रेमथी, जाणी देवर जातजी,
व्रत लईने जेखो भांगीयां, थयो नरकनो पात्र जी मोहरे. ॥५॥

रेवत नाथ निहालतां, तुम हम दोनुं ने आज जी,
निलज्ज लाज किहां गई, गयुं ज्ञान महाराज जी मोहरे. ॥६॥

एथी अधिक कहो तुमने, राजुल प्राण आधार जी,
व्हाल तमारूं नवि वीसरे, सुणो राजुल नार जी प्रीतिरे धरो. ॥७॥

पिऊ वि[illegible] राजुल एकली, जाणी तमारी दाझजी,
होश धरीने अमे आवता, करवा तमारा काज जी प्रीतिरे धरो. ॥८॥

तारण तंत्र तोडी कर्यो, मोह मंत्रनो संगजी,
मोक्ष पदवी तमे खोईने, कर्यो संयम भंग जी मोहरे. ॥९॥

संसार असार छोडी तमे, लीधो संजम भारजी,
उत्तम पुरुष वंछे नहीं, फिर संसार असार जी मोहरे. ॥१०॥

माया करीजे मिले नहीं, ते मूरखनी रीत जी,
संसार मां शुं लई जवुं, एक पुरण प्रीत जी प्रीतीरे. ॥११॥

कुंवारी कन्या ने कंथ केटला, सुण सुण राजुल भांमजी,
एकनी उपर राग नवी घटे, करो मुझने स्वाम जी
प्रीती रे धरो प्रेमदा मुझ थकी ॥१२॥

अमीरस मुकी कां पीयो, नारी अवगुण वीखजी,
संसारमाँ सार कांई नथी, धरो संजम शीख जी मोहरे. ॥१३॥

दीक्षा लई प्रभु पास थी, पालो शुद्ध आचार जी,
विष फल खावा वांछां करी, लेवा पृथ्वी नो भारजी मोहरे. ॥१४॥

मे जाण्युं राजुल एकली, पति विना मुंझाय जी,
परणीने सुख आपशुं, नहीं लेवा देऊं दीक्षायजी प्रीतरे. ॥१५॥

पुण्य प्रतापे में भेटियां, आज केटले मासजी,
चालो घरे जाईये आपणे, करवा भोग विलासजी प्रीतिरे. ॥१६॥

बंधु तमारे परि हरी, जाणी अस्थिर संसार जी,
श्वान परे इच्छा कांई करो, जमवा वमन विकार जी मोहरे. ॥१७॥

श्वान कियो तुमे मुझने, तो शो तुमथी संसार जी,
दीक्षा आपी सारी साधवी, कर्यो तमे उपकार जी क्षमा,
रे करो मोरी मातजी ॥१८॥

इति

---

(२४) ★ श्री नेम राजुल की सज्झाय ★

(तर्ज—भेखरे उत्तारो राजा भरथरी)

* मुनि सुन्दर विजयजी कृत *

राणी राजुल करजोडी कहे, जादव कुल शणगार रे,
आठे रे भवनो नेहलो, तमे केम मूको विसार रे
हूँ तो वारी रे जिनवर नेमजी ॥१॥

हूं तो वारी रे जिनवर नेमजी, मोरी विनतडी अवधार रे,
सुरतरु सरिखो साहिबो, नित नित कहुं दिलधार रे हूं. ॥२॥

प्रथम धनपति ने भवे, तूं धन नामे भरतार रे,
वेंवि शाल मलतां मुजने, छानो मोकल्यो मोती नो हार रे हूँ. ॥३॥

लेई चारित्र सौधर्ममां, देव तणो अवतार रे,
क्षण विरहो खमता नहीं, त्यॉही पण धरता प्यार रे हुँ. ॥४॥

त्रीजे भवे विद्याधरु, चित्रांगद राजकुमार रे,
भोगवी पदवी भूपनी, हूँ रत्नवती तुज नार रे हूँ. ॥५॥

महाव्रत पाली साधुना, पाम्या ऋद्धि अपार रे,
माहेन्द्र सुरलोक मां, चोथे भवे सुविचार रे हूँ. ॥६॥

पांचमे भवे अति दीपतो, नृप अपराजित सार रे,
प्रीतिमती हुं ताहरी, थई प्रभु हैडानो हार रे हूँ. ॥७॥

ग्रही दीक्षा हरखे करी, छट्ठे भवे उदार रे,
आरण्य देवलोके बिहुँजणां, सुख विलस्या सुखकार रे हूँ. ॥८॥

शंख राजा भव सात में, जसुमती प्राण आधार रे,
वहाला ! विश स्थानक सेविया, ते कीधो जय जय कार रे हूँ ॥९॥

आठमे भवे अपराजिते वरस बत्तीश हजार रे,
इच्छा रे उपजे आहारनी, पूरव पुण्य प्रकार रे हूँ. ॥१०॥

हरि वंश मांहे उपन्या, शिवा देवी सासु महार रे,
नवमे भवे कांई परिहरो, राखो जी लोक विचार रे हुं. ॥११॥

ए संबंध सुणी पाछलो, भणे जी नेम ब्रह्मचारी रे,
तो तुजने साथे तेडवा, आव्यो जी ससराने द्वारी रे हूं. ॥१२॥

एम सुणी राजीमती, गई पीउडाजी नी लार रे,
अविचल कर्यो इणे साहिबो, नेहलो मुक्ति नो सार रे हूँ. ॥१३॥

धन धन जिन बावीशमो, जेणे तारी पोता नी नार रे,

धन धन उग्रसेन नंदिनी, जे सती मांहे शिरदार रे हूँ. ॥१४॥

संवत सत्तरे एकाणु रे, शुभ वेला शुभ वार रे,
मुनि सुन्दरे राजुल ना, गुण गाया सुखकार रे हूँ. ॥१५॥

इति

---

(२५) ★ अम्बिका सती नी सज्झाय ★

※ वीर विजय जी कृत ※

अम्बिका ते बादल उगियो सूर, अम्बिका ए पानी संचर्या रे,
सामा ते मलिया दोय मुनिराय, मास क्षमणना पारणा रे ॥१॥

बेडुं ले मेल्यो सरोवर्या पाल, अम्बिकाएं मुनि ने वान्दियारे,
चालो मुनिराय आपणे घेर, मास क्षमणना पारणा रे ॥२॥

त्यांरे ढलाऊं सोवन पाट, चावल चाखला अति घणारे,
आछला मांडीने खोलवे खांड, लापसड्या घी लचपचारे ॥३॥

ल्यो ल्यों मुनिराय मकरो ढील, अमघर सासुजी खीजसे रे,
बाई रे पाडोसण तूं मारी वेन, मारी सासु आगल न करीश
वातडी रे ॥४॥

तने आलु मारी काननी झाल, हार आलु हैया तणो रे,

काननी झाल तारे काने सोहाय, हीरो रा हार मारे अति
घणारे ॥५॥

मारे छे वात करवानी टेव, बात कर्या विना नहीं रहूँ रे,
पाडोसण बाई खिडकी रे माय, बाई रे पाडोसण सामीगई रे ॥६॥

बाई रे पाडोसन कहुं एक बात, तारी बहु मुनिने वहोरावियो रे,
नथी उग्यो हजी तुलछी नो छोड, ब्राह्मणे नहीं कर्यो पारणोरे ॥७॥

सोहन सोहन मारो पूत, घरमाँ थी काढ़ो धर्म गेलडी रे,
लातो मारी गडदा मोरॉरे मांय, पाट्ठ ए परिसह कर्यो रे ॥८॥

बे बालक गोरी ए लीधा साथ,अम्बिका जी बारणे निसर्या रे,
नाना ऋषभजी केडमां लेई, मोटा ऋषभजी नो हाथ झालियों
रे ॥६॥

गायना गोवाल गायोंना चारण हार, कोई वतावो महियर वाटडीरे,
डावी दिशे डुंगरियानी हेठ, जमणी दिशे महियर वाटडीरे ॥१०॥

आणा विना किम महियर जाऊं, भोजाईयाँ मेणां मारसे रे,
डावी दिशे डुंगरिया नी हेठ, ऊज्जड वाटे जई वसे रे ॥११॥

सुका सरोवर लहरे जाय, वांझियों आंबो त्यां फल्यो रे,
नाना ऋषभ जी तरसाजी थाय, मोटा ऋषभ जी भूखा
थयारे ॥१२॥

नाना ऋषभ जी ने पानी पाय, मोटा ऋषभ जी ने फल आपियारे,
सासुजी जोवे ओरडा खोल, बहु विना सूंना ओरडा रे ॥१३॥

सासुजी जोवे पड साला मांहे, पुत्र विना सूंना पालणारे,
सासुजी जोवे रसोडा मांहे, रांधी रसोइयां सेगे भरीरे ॥१४॥

सासुजी जोवे मांडला मांहे, लाडु तणा ढगला वल्यारे,
सासुजी जोवे छावडा खोल, खाजाना खडका थयारे ॥१५॥

सोहन सोहन मारो पुत, तेडी लावो धर्म गेलडी रे,
गायाना गोवाल गायाना चारणहार, किहां वस धर्म गेलडीरे ॥१६॥

डावी दिशे डुंगरियानी हेठ, जमणी दिशे धर्म बेलडीरे,
चालो गोरा दे आपणे घेर, तुम विना सूंना ओरडा रे ॥१७॥

चालो ऋषभजी आपणे घेर, तुम विना सूंना पालणा रे,
सासुजी फिटीने मातज थाय, तोय न आऊं तुम घरे रे ॥१८॥

पाडोसन फिटीने वेनज थाय, तोय न आऊं तुम घरे रे,
फणीधर फिटीने, फूल माल थाय, तोय न आऊं तुम घरेरे ॥१९॥

कांकरो फिटीने रत्नज थाय, तोय न आऊं तुम घरे रे,
वाई रे पाडोसण तूं मारी वेन, घर भंग वायां मलियोरे ॥२०॥

वे वालक गोरीये लिधा छे साथ, अम्बिका ए जलमां भ्रुकिया रे,
वे वालक गोरी नो पडियो रे वियोग, घर जाईने हवे शुं
करुं रे ॥२१॥

सगा संबंधि रुससे रे लोग, पितराई मेणा वोलसे रे,
पछवाडे थी, पछ्यो वाई नो कन्त, तेमरी थयो काचवोरे ॥२२॥

आल दिधानां ए फल होय, तेह मरी थयो भेंसलोंरे,
हीर विजय गुरु हीरलो, वीर विजय गुण गावता रे ॥२३॥

इति

---

(२६) ★ श्री वर्द्धमान तप की सज्झाय ★

प्रभु तुज शासन अति भलुं, तेमां भलुं तप अेह रे,
समता भावे सेवतां, जलदी लहे शिव गेह रे प्रभु. ॥१॥
षट् रस तजी भोजन करे, विगय करे षट् दूर रे,
खट पट सघली परिहरी, कर्म करे चकचूर रे प्रभु. ॥२॥
पडिक्कमणा दोय टंकनां, पोषध व्रत उपवासरे,
नियम चितारे सर्वदा, ज्ञान ध्यान सुविलास रे प्रभु. ॥३॥
देहने दुःख देवा थको, महा फल प्रभु भाखे रे,
खड्ग धारा ए व्रत सही, आगम अंतगड़ साखे रे प्रभु. ॥४॥
चौदह वर्ष अधिक होवे, ए तपनुं परिमाण रे,
देहनां दंड दूरे करे, तप चिंता मणी जाण रे प्रभु. ॥५॥
सुलभ बोधी जीवने, ए तप उदये आवे रे,
शासन सुर सांनिध्य करे, धर्म रत्न पद पावे रे प्रभु. ॥६॥

इति

---

(२७) ★ वैराग्य पदनी सज्झाय ★

तुने संसारी सुख किम सांभले रे लो, दुःख विसर्यो गरभावासनांजो,
नव मास रह्यो तूं माता उदरे रे लो, मल मूत्र अशुधि वासमां जो
तुने संसारी सुख किम. ॥१॥

तिहां हवा पवन नहीं संचरे रे लो, नहि सेज तलाई पलंगियो जो,
तिहां लटकी रह्यो ऊंधे शिरे रे लो, दुःख सहत अपार अनंत जो
तुने संसारी सुख. ॥२॥

ऊंठ कोडी सुई ताती करी रे लो, समकाले चुभोवे कोई राय जो,
तेथी अनंत गुणो तिहां कने रे लो, दुःख सहत विचार तब थाय जो
तुने संसारी सुख. ॥३॥

हवे प्रसवे जो मुज मायडी रे लो, तो हूं करूं तप जप ज्ञान ने
ध्यान जो,
हवे सेवुं सदा जिन राजने रे लो, मूं कुं कुदेव कुगुरुने अज्ञानजो
तुने सांसारी सुख. ॥४॥

ज्यारे जन्म्यो त्यारें तूं भूलि गयो रे लो, ऊंहारह्यो करे एम
पुकार जो,
तिहां लागी लालच रमवा तणी रे लो, आयु अंजली जल सम
जाय जो तुने संसारी सुःख. ॥५॥

गम्यो बालक वय रमतां थका रे लो, थयो जोबन मकर ध्वज सहायजो,

प्रीति लागी तदा रमणी सुखे रे लो, पुत्र पौत्र देखी हरखाय जो
तूने. ॥६॥

थई चिंता विवाहथा तेहने रे लो, धन कारण ध्यावे निश दिसजो,
पुण्य हीण थको पामे नहिं रे लो, चिंते चोरी करूं के लूंटुं देशजो
तुने संसारी सुख. ॥७॥

घरे कह्यु कोई माने नहीं रे लो, पड्यो पुकार करे नहीं धीरजो
तुने संसारी सुख. ॥८॥

इम काल अनन्तो वही गयोरे लो, अब चेत मूर्ख शिरदार जो,
जिन दास कहे जुग एहवोरे लो, मलवों छे महा मूशकिल जो
तुने संसारी सुख किम साभले रे लो. ॥९॥

इति

---

(२८) ★ श्री नेम नाथ राजुल की सज्झाय ★

* रत्न विजय जी कृत *

(तर्ज—चेते तो चताऊ तने रे)

नेम नेम करती नारी, कोइनी न चाली कारी,
रथ लिधो पाछो वाली रे, साहेली मोरी करमे
कुंमारा रह्यां रे साहेली मोरी. ॥१॥

मन थी ते माया मूकी, सूनी तो दीसे सेजडली,
हवे मारों कोण बेली रे साहेली. ॥२॥

चित्त मारूं चोरी लीधू, प्रीति थी पर वार कीधुं,
दुःखडो तो हमने दीधुं रे साहेली. ॥३॥

जावामां जादव राया, आठे भवनी मुकी माया.
आवो शिवा देवी जाया रे साहेली. ॥४॥

आज तो वनी उदासी, तुम दरिसन दो प्यासी,
परणवानी होती आसी रे साहेली. ॥५॥

माछली तो विण नीर, वचली तो राखी खीण,
दाडा केम जाशे पीरे रे साहेली ॥६॥

जोता नवि मली जोडी, आठे भवनी प्रीत तोडी,
बाल पणे गया छोडी रे साहेली. ॥७॥

जोवनीयो तो केम जाशे, स्वामी विना केम रहेवासे,
दुःखडा कोने कहे वासे रे साहेली. ॥८॥

देही तो दाभे छे मारी, स्वामी शुं विसारी मेली,
तमे जीत्या मने तारी रे साहेली. ॥९॥

पशुडा छोडवी लीधा, प्रभु अभय दान दीधा,
उदासी तो अमने कीधारे साहेली. ॥१०॥

राजुल विचारे एवुं, सुख हो स्वपना जेवुं,
हवे प्रभु नेम सेवुं रे साहेली. ॥११॥

मनमां वैराग्य आणी, सहसा वन गया चाली,
संयम लिधो मन वाली रे साहेली. ॥१२॥

करम नो करीने नाश, जई पहुँच्या शिवपुर वास,
रत्न विजय कहे शाबाश रे साहेली. ॥१३॥

इति

---

(२६) ★ श्री वैराग्य पद सज्झाय ★

※ वीर पूत्र आनन्द सागर सूरि कृत ※

(तर्ज—चेते तो चेताऊ तने रे)

रहे नेमी राजुल संवाद, दिल धरी करी, स्थिर चित्त सुनो,
प्यारे रे भविक प्राणी विषय विषम विषरे भ. ॥१॥

रहे नेमी भिक्षाचरी, गया प्रभु आणा धरी, विचमे वर्षा की-
झरीरे भविक प्राणी विषय. ॥२॥

गुफा मे प्रवेश किया, शुभ ध्यान धर लिया, मानो सुख वर लियारे,
भविक प्राणी विषय. ॥३॥

नेमी नाथ वन्दी करी, राजूल वापिस फरी विचमें वर्षा से डरीरे,
भविक प्राणी विषय. ॥४॥

उसही गुफा में गई, भीने वस्त्र खोले सही, नग्न अवस्था रहीरे,
भविक प्राणी विषय. ॥५॥

चन्द्र सम देह जोई, रहे नेमी ध्यान खोई, संजम प्रभा को खोईरे,
भविक प्राणी विषय. ॥६॥

रहे नेमी–राजुल प्रति बोले ऐसा–व्यभिचारी वदे जैसा,
आनन्द करो हमेशा रे भविक प्राणी. ॥७॥

जोवन रस किम खोवो, हृदय से अब जोवो,
प्रेम माला तुम पोवो रे भविक प्राणी. ॥८॥

रहे नेमी–अनुपम नारी प्यारी, अमित सुखों की क्यारी,
कबुहूँ न होवे न्यारी रे, भविक प्राणी विषय. ॥९॥

अमृत रस पीवे जैसा, नारी संग सुख तैसा,
जोवे प्रेम रंग कैसा रे भविक प्राणी विषय. ॥१०॥

राजुल–विष्टादिका भराकुंड, कीड़े बिल बिले झुंड नारी सेवे कुण,
मूढ़ रे भविक प्राणी विषय. ॥११॥

रहेनेमी–राजूल तेरी बात खोटी, उमर है तेरी छोटी विषय की-
लहर मोटी रे भविक प्राणी विषय. ॥१२॥

तेरी छबी मोहन गारी, स्थान सुन्दर मनोहारी, विषय सुख करो-
जारी रे भविक प्राणी विषय. ॥१३॥

राजुल–चित्त पूरी चमकी, मानो देह दामिन दमकी,
वाणी सुणी काम जमकी रे भविक प्राणी. ॥१४॥

राजुल करुणा दिल धारी, प्रति बोधे सुख कारी,
रहे नेमी तजो नारी रे, भविक प्राणी. ॥१५॥

यादव कुल दीपे भारी, कुल की लज्जा क्यों हारी,
त्यागो पर न्यारी यारी रे भविक प्राणी. ॥१६॥

तुमरे सहोदर भ्राता, नेमी नाथ जगत्राता, अन्तर इतना-
क्यों दिख लाता रे भविक प्राणी. ॥१७॥

प्राणी परदारा सेवे, नरक में जाई रेवे, परमा धामी
दुःख देवे रे भविक प्राणी. ॥१८॥

साधवी संगम करी, भमे बहु भव फेरी, सांची बात-
जानो मेरी रे भविक प्राणी विषय. ॥१६॥

मधुर वचन सुणी, बूझ्या रहे नेमी मुनि, संजम में लागी-
धुनी रे भविक प्राणी विषय. ॥२०॥

धन्य धन्य राजुल सती, धन्य निरमल मती, दूर करी-
दुर्गती रे भविक प्राणी विषय. ॥२१॥

प्रभु के निकट होकर, पापरूपी मेल धोकर, दृढ हुए-
शुद्ध होकर रे भविक प्राणी. ॥२२॥

अनुक्रमे शिव पाया, धन धन मुनि राया, आनन्द-
करो तवाया रे भविक प्राणी. ॥२३॥

सुख दाता शुध ध्यान, सेवो सदा भगवान,
त्रैलोक्य आधार जाण रे भविक प्राणी. ॥२४॥

मोहन संवाद गाया, आनन्द आनन्द पाया, आनन्द-
रत्नाकर ध्याया रे भविक प्राणी. ॥२५॥

इति

---

(३०) ❀ ढंढणऋषि की सज्झाय ❀

❀ श्री जिनहर्ष सूरि कृत ❀

ढंढणरिष जीने बंदणा, हुंवारी, उत्कृष्टो अणगार रे, हुंवारीलाल,
अभिग्रह लीधो आकरो, हुं, लेश्युं शुद्ध आहार रे, हुं. ढं. ॥१॥

नित प्रति उठे गोचरी, हुँ, नमिले शुद्ध आहार रे, हूं,
मूल न ले अण सूझतो, हुँ, पिंजर कीधो गातरे, हुं. ढं. ॥२॥

हरि पूछे श्रीनेमने, हुं, मुनिवर सहस्र अढार रे, हुँ,
उत्कृष्टों कुण एह में, हुं, मुझजे कहो कृपालरे, हूँ. ढं. ॥३॥

ढंढण अधिको दाखियो, हुँ, श्री मुख नेमि जिणंद रे, हुँ,
कृष्ण उमाह्यो वांदवा, हुं, धन जादव कुलचंदरे, हुं. ढं. ॥४॥

गलिया रे मुनिवर मिलिया, हुँ, वांद्या कृष्ण नरेस रे हुँ,
किण ही मिथ्यात्वी देखने, हुँ, आण्यो भावविसेसरे, हुं. ढं. ॥५॥

माता कहे तने सुं करुं, महारे मन तुं मुवो रे,
काम काज करे नहीं, खावाने जोईजे सारो रे कर्म. तणी ॥१२॥

आंखे आंसु नांखतो, बोले बाल कुंमारो रे,
सांभलो मोरा तातजी, तमे मुजने राखो रे कर्म. ॥१३॥

तात कहे हूं शुं करुं, मुझने तो तूं प्यारो रे,
माता वेचे ताहरी, महारे नहीं उपाय रे कर्म. ॥१४॥

काको पण पासे हतो, काकी मुझने राखो रे,
काकी कहे हूँ शुं जाणु, महारे तूं शुं लागे रे कर्म. ॥१५॥

बालक रोतो सांभली, मासी फुवा ते आवे रे,
बहेन पण तीहाँ बेठी हती, किणही मुझने राखो रे कर्म, ॥१६॥

जो जो धन अनरथ करे, धन पडावे वाटे रे,
चोरी करे धन लोभीयो, मरीने दुरगती जाय रे कर्म. ॥१७॥

हाथ पकडीने लई चाल्या, कुंवर रोवण लाग्यो रे,
मुझने राजा होम से, इम बालक बहु झूरे रे कर्म. ॥१८॥

वालक ने तब लेई चाल्या, आव्या भरे बजारो रे,
लोक सहु हा हा करे, वेच्यो बाल चंडाल रे कर्म. ॥१६॥

लोक तिहां बहुला मल्या, जोवो बाल कुमारो रे,
वाल कहे मुझ राखिल्यो, थाशुं दास तुम्हारो रे कर्म. ॥२०॥

शेठ कहे राखुं सही, धन आपी मुंह माँग्यों रे,
राये मंगव्यो होमवा, ते तो नहीं रखाये रे कर्म. ॥२१॥

बालक ने ते लई गया, राजाजी ने पास रे,
भटजी पण बेठा हता, वेद शास्त्र ना जाणो रे कर्म. ॥२२॥

भटजी ने राजा कहे, देखो बाल कुमारो रे,
बालक ने शो देखवो, काम करो महाराज रे कर्म. ॥२३॥

बालक कहे करजोडी ने, सांभलो श्री महाराज रे,
प्रजाना प्रीअर तुमे, मुझने किमद्दो मीजे रे कर्म. ॥२४॥

राजा कहे मूल्ये लियो, महारो नही अन्याय रे,
माता पिता तूं ने वेचियो, में होमवा आणयो रे कर्म. ॥२५॥

गंगोदके नवरावी ने, गले घाली फूलनी माला रे,
केसर चन्दन चरचीने, ब्राह्मण भणता तव वेदोरे कर्म. ॥२६॥

अमर कुमर इम चिंतवे, मुझने सिखा वीयो साधु रे,
नवकार मन्त्र छे मोटको, संकट सहु टली जाशे रे कर्म. ॥२७॥

नव पद ध्यान धरतां थकां, देव सिहासण कंप्योरे,
चाली आव्यो उतावलो, जिहां छे बाल कुमारो रे कर्म. ॥२८॥

अग्नि ज्वाला ठंडी करी, कीधो सिंहासण चंगोरे,
अमर कुंवर ने बेसारी ने, देव करे गुण ग्रामोरे कर्म. ॥२९॥

राजा ने ऊंधो नाखियो, मुखे छुट्यां लोही रे,
ब्राह्मण सहु लांवा पड्या, जाणे छका काष्ट रे कर्म. ॥३०॥

राज सभा अचरीज थई, ए बालक कोई मोटो रे,
पग पूजी जे एहना, तो ए मुवा उठे रे कर्म. ॥३१॥

वालके छांटो नाखियो, उठ्यो श्रेणिक राजा रे;
अचरिज दीठो मोटको, आ शुं हुओ काजो रे कर्म. ॥३२॥

ब्राह्मण पडिया देखीने, लोक कहे पाप जुवो रे;
वालहत्या करतां थकां, तेहनां फल छे एहा रे कर्म. ॥३३॥

ब्राह्मण सहु भेला थया, देखे यम तमासो रे;
कनक सिंहासन उपरे, बेठो अमर कुमारो रे कर्म. ॥३४॥

राजा सहु परिवार शुं, उठयो ते तत कालो रे;
कर जोडी कहे कुमरने, ए राजऋद्धि सहु ताहारी रे-
कर्म. ॥३५॥

अमर कहे सुणो राजवी, राज शुं नहीं मुझ काजोरे;
संयम लेशुं साधुनो, सांभलो श्री महाराज रे कर्म. ॥३६॥

राय लोग सहु इम कहे, धन धन बाल कुमारो रे;
भटजी पण राजी हुआ, लाज्या ते पण मांहो रे, कर्म. ॥३७॥

जय जय कार हुवो घणो, धर्म तणे परसादे रे;
अमर कुमर मन साधतो, जाती स्मरण ज्ञानो रे कर्म ॥३८॥

अमर कुमार संजम लियो, करे पंच मुष्टि लोचरे;
बाहीर जाई समसाणे, काउस्सग्ग रह्यो शुभ ध्याने रे-
कर्म. ॥३९॥

मात पिता बहिर जईने, धन धरती माहीं घाल्यो रे;
कांइक धन वेची लियो, जाणे निवाह मेडाणों रे कर्म ॥४०॥

एटले दोडतो आवीयो, कोईक बाल कुंमारो रे;
माता पिता ने इम कहे, अमर कुमरनी वातो रे, कर्म. ॥४१॥

मात पिता विलखां थया, मुंडो थयो एकामो रे:
धन राजा लेशे सहु, कांईक करीये उपायो रे कर्म. ॥४२॥

चिंतातुर थई अतिघणी, राते नींद न आवे रे;
पुरव वैर संभालती, पापीणी उठी तेणी वारो रे कर्म. ॥४३॥

शस्त्र हाथ लेई करी, आवी बालक पासेरे;
पालीये करीने पापीणी, मार्यो बाल कुंमारो रे कर्म. ॥४४॥

सुकल ध्यान साधतो, शुभ मन आणी–भावो रे;
काल करीने अवतर्यो, बारमां स्वर्ग मझारो रे, कर्म. ॥४५॥

बावीस सागर आउखो, भोगवी वंछीत भोगो रे;
महाविदेहमां सीजसे, पामसे केवल नाणो रे कर्म. ॥४६॥

हवे ते माता पापणी, मन मांही हरखी अपारो रे;
चाली जाय आनंद में, वाघणी मली ते वारो रे कर्म. ॥४७॥

फफेडी नाखी ते वारे, पापणी मुई तीण वारो रे;
छठी नरके उपजीं, बावीश सागर आयु रे कर्म. ॥४८॥

जुवो जुवो मंत्र नव कारथी, अमर कुमर शुभ ध्यानो रे;
सुर पदवी लही मोटकी, धरम तणे परसादो रे कर्म. ॥४९॥

नरभव पामी जीवडा, धरम करो शुभ ध्यानो रे;
तो तमे अमर तणी परे, सिध्र गती लेसो सारी रे कर्म. ॥५०॥

कर जोडी कवियण भणे, सांभलो भविजन लोको रे;
वेर विरोध कोई मत करो, जिम पामो भव पारो रे कर्म. ॥५१॥

श्री जिन धर्म सुरतरु समो, जेनी सीतले छांया रे;
जेह आराधे भाव शुं, सीजे वंछति काजो रे,
कर्म तणी गती सांभलो. ॥५२॥

---

(३६) ★ श्री पंचम आरा की सज्झाय ★

※ जिन हर्ष सूरी कृत ※

(राग भरतरी)

वीर कहे गोतम सुणो, पंचम आराना भाव रे ।
दुखिया प्राणी अति घणा, सांभल गोतम स्वामी रे वीर. ॥१॥

शहर होशे ते गामडा, गांमडा होशे शमशान रे ।
विन गोवाले रे धेनु चरे, ज्ञानी नहीं निर्वाण रे वीर. ॥२॥

मुझ केडे कुमती घणां. होशे ते निर्धार रे ।
जिनमतनी रुची नहीं, थापसे निजमती सार रे वीर. ॥३॥

कुमती घणा कदा ग्रही, थापसो आपणा बोल रे ।
शास्त्र मार्ग सवि मूक से, करशे जिन मत मोल रे वीर. ॥४॥

पाखंडी घणा जाग से, भांग से धर्म ना पंथ रे ।
आगम मत मरडी करी, करशे वली ग्रंथ रे वीर. ॥५॥

चालणी नी पेरे चालशे, धर्म न जाणे लेशरे ।
आगम शाखाने ढालशे, पालशे निज उपदेश रे वीर. ॥६॥

चोर चरड बहु लाग से, बोली न पाले बोल रे ।
साधु जन सीदायशे, दुर्जन बहुला मोल रे वीर. ॥७॥

राजा प्रजाने पीडशे, हिंडशे निर्धन लोकरे ।
मँग्या न वर्षशे मेहला, मिथ्या होशे बहु थोकरे वीर. ॥८॥

संवत् उगणोसे चोहुत्तरे, होशे कलंकी राय रे ।
मात ब्राहमणी जाणीये, बाप चंडाल कहेवाय रे वीर. ॥९॥

छयासी वर्षनो आडखो, पाटली पुरमां होशे रे ।
तसु सुत दत्तनामे भलो, श्रावक कुल शुभ पोषे रे वीर. ॥१०॥

कौतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ।
चौथ लेशे भिक्षा तणी, महा आकरा कर होय रे वीर. ॥११॥

इन्द्र अवधिये जोवतां, देखशे एह स्वरूप रे ।
द्विजरूपे आवी करी, हणशे कलंकी भूप रे वीर. ॥१२॥

दत्तने राज्य थापी करी, इन्द्र सुर लोके जाय रे ।
दत्त धर्म पाले सदा, भेटशे शत्रुंजय गिरीराज रे वीर. ॥१३॥

पृथ्वी जिन मंडित करी, पामशे, सुख अपार रे ।
देव लोके सुख भोगवे, नामे जय जय कार रे वीर. ॥१४॥

पांचमां आराने छेहडे, चतुर्विध श्री संघ होशे रे ।
छठो आरो बेसतां, जिन धर्म पहेलो जाशे रे वीर. ॥१५॥

बीजे अग्नि विणशसे, त्रीजे राय ने कोय रे ।
चोथे प्रहर लोपना, छठे आरे ते होय रे वीर. ॥१६॥

इति

दोहा

छट्ठे आरे मानवी, बिलवासी सवि होय ।
वीस वर्षनो आउखो, षट वर्षे गर्भज होय ॥१७॥

सहस चोरासी वर्ष पणे, भोगवशे भवि कर्म ।
तींर्थकर होशे भलो, कोणिक जीव सुधर्म ॥१८॥

तस गणधर अति सुन्दरु, कुमारपाल भूपाल ।
आगम वाणी जोयने, रचिया रयण रसाल ॥१९॥

पंचम आराना भाव ए, आगसे भाख्या वीर ।
ग्रंथ बोल विचार कह्या, सांभल जो भवि धीर ॥२०॥

भणतां समकित संपजे, सुणतां मंगल माल ।
जिन हर्ष कही जोडए, भांख्या वयण रसाल ॥२१॥

इति

(३७) ★ श्री छठा आरानी सज्झाय ★

※ कान्ति विजयजी कृत ※

(तर्ज—धर्म मंगल माही)

छट्टो आरो एवो आवसे, जाणशे जिनवर देव ।
पृथ्वीमां प्रलय थाशो, वरषशे विरुवा मेह रे
जीव जिन धर्म कीजिये ॥१॥
तावडे डूँगर तरड से, वायु उडी उडी जाय ।
त्यां प्रभु गोतम पूछियो, पृथ्वी वीजे केम थाय रे जीव. ॥२॥
वैताढ्य गिरी नामे शाश्वती, गंगा सिंधु नदी नाम ।
तेणे बेके बहुं सेखडा, वहोत्तेर वीलनी खाण रे जीव. ॥३॥
सर्व मनुष्य तिहाँ रहसे, मनखा केरी खाण ।
सोल वरसनुं आऊखो, मुँडा हाथनी काय रे जीव. ॥४॥
छः वरसनी स्त्री गर्भ धरे, दुःखी महा दुःखी थाय ।
राते चरवा निकले, दिवसे विल मांहे जाय रे जीव. ॥५॥
सर्व भक्षी सर्व मांछलां, मरी मरी दुर्गती जाय ।
नर नारी हशे वहुँ, दुरगंधित सकाय रे जीव. ॥६॥
प्रभु बालक परे विनऊं, छठे आरे जन्म निवार ।
कान्ति विजय कवि रायनो, देव भणे सुख माल रे जीव. ॥७॥

इति

———

(३८) ★ श्री सिद्धनी सज्झाय ★

* नय सागर जी कृत *

श्री गोतम पृच्छा करे, विनय करी शीष नमाय हो प्रभु जी ।
अविचल स्थानक मैं सुण्यों, कृपा करी मोय बतायो हो प्रभु जी
शिवपुर नगर सोहा मणो ॥१॥

आठ कर्म अलगा करी, सार्या अतम काज हो प्रभु जी ।
छुट्या संसारना दुःख थकी, एने रहेवा नो कुण ठाम हो प्रभु जी
शिवपुर० ॥२॥

वीर कहे उर्ध्वलोकमां, मुगति शिला एण ठाम हो गोतम ।
स्वर्ग छव्वीसने उपरे, तेहना बारे नाम हो गोतम
शिवपुर० ॥३॥

लाख पिस्ता लीसा जोयणे, लांनी पहोली जाण हो गोतम ।
आठ जोजन जाडी वच्चे, छेड़े पातली तंत हो गोतम
शिवपुर० ॥४॥

उज्ज्वल हार मोती तणो, गाय दुध शंख वखाण हो गोतम ।
एहथी उजली अति घणी, सम चोरस संस्थान हो गोतम
शिवपुर० ॥५॥

स्फटिक रतन सम निरमली, सुँवाली अत्यन्त वखाण हो गोतम ।
सिद्ध शिला ओलंगी गया, अर्थ रह्या छे विराज हो गोतम
शिवपुर० ॥६॥

सिद्ध शिला ओलंगी गया, अर्थ रह्या छे विराज हो गोतम ।
अलोक शुं जई अड्या, सार्या अन्तिम काज हो गोतम
शिवपुर० ॥७॥

जिहाँ जन्म नहीं मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम ।
शत्रु नहीं मित्र नहीं, नहीं संयोग वियोग हो गोतम
शिवपुर० ॥८॥

भूख नहीं तृषा नहीं, नहीं हरख नहीं शोक हो गोतम ।
कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषय रस भोग हो गोतम
शिवपुर० ॥९॥

शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो गोतम ।
बोले नहीं चाले नहीं, मौन जिहां नहीं खेद हो गोतम
शिवपुर० ॥१०॥

गाम नगर तिहां को नहीं, नहीं वस्ती नहीं उजाड हो गोतम ।
काल सुकाल वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथीवार हो गोतम
शिवपुर० ॥११॥

राजा नहीं प्रजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो गोतम ।
मुगतिमां गुरु चेला नहीं, नहीं लहोड वडाई वास हो गोतम
शिवपुर० ॥१२॥

अनुपम सुखमां झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो गोतम ।
सघला ने सुख सारिखो, सहु कोने अविचल वास हो गोतम
शिवपुर० ॥१३॥

केवल ज्ञान सहित छे, केवल दरिशन पास हो गोतम।
क्षायिक समकित दीपतो, कदियन होवे उदास हो गोतम
शिवपुर० ॥१४॥

ओर जग्या रूंधे नहीं, ज्योतीमां ज्योति समाय हो गोतम।
अनन्त सिद्ध मुगति गया, फेर अनन्ता जाय हो गोतम।
शिवपुर० ॥१५॥

ए अर्थ रूपी सिद्ध कोई ओलखे, आणी मन वैराग्य हो गोतम।
शिव सुन्दरी सहैजे वरे, "नय" पामे सुख अथाग हो गोतम
शिवपुर० ॥१६॥

इति

---

(३९) ★ श्री गोतम स्वामी की सज्झाय ★

※ करण सागर कृत ※

(तर्ज—सुग्रीव नयर सोहामणो जी)

समव सरण सिंहासने जी, वीरजी करे रे वखाण।
दशमां उत्तराध्ययन में जी, दीये उपदेश सुजाण
समय गोयम मकर प्रमाद
वीर जिनेश्वर सीखवे जी, परिहर मद विखवाद समय. ॥१॥

जिम तरु पंडुर पादडो जी, पडतां न लागे जी वार,
तिम ऐ माणस जीवडो जी, स्थिर न रहे संसार समय. ॥२॥

डाभ अणी जिम ओसनो जी, क्षण एक रहे जलबिंद ।
तिम ए चंचल जीवडो जी, न रहे इन्द्र नरीन्द्र समय. ॥३॥

सूक्ष्म निगोद भमी करीजी, राशि चढ्यो व्यवहार ।
लाख चोरासी जीव योनि मांजी, लाध्यो नर भव सार–
समय. ॥४॥

शरीर जराये जरजयु जी, शिर पर पीलाजी केश ।
इन्द्रीय बल हीणा पड्याजी, पग पग पेखे कलेश समय. ॥५॥

भव सायर तरवा भणी जी, चारित्र प्रवहण मूल ।
तप जप संयम आकरा जी, मोक्ष नगर छे दूर समय. ॥६॥

इमनि सुणी प्रभु देशना जी, गणधर थया सावधान ।
पाप पडल पाछा पड्या जी, पाम्या केवल ज्ञान समय. ॥७॥

गोतमनां गुण गावतां जी, घर २ संपत्ति क्रोड ।
वाचक श्री "करण" इम गणे जी, वन्दु बेकर जोड समय
गोयम मकर प्रमाद ॥८॥

(४०) ★ श्री मदन मंजूषानी सज्झाय ★

*** वीर विजय जी कृत ***

(तर्ज—भेखरे उतारो राजा.)

वहाणमां रूवे रे मदन मंजुषा, करती अतिशय विलाप ।
पियुजी पियुजी ए जंपे घणुं, धरती मनमां संताप
व्हाण मां रोवे मदन. ॥१॥

मध्य दरीये वहाण चलावतां, उदय सर्वे थया आज ।
पडता पियुं आ समुद्रमां, अबला थई आपो आप व्हाण मां ॥२॥

खरो वेरी थयो अणाणियों, जेणे कोधो कालो केर ।
निराधार मुकी ते मुझने, लीधु किहाँ कर्मनो वेर ॥ व्हाण. ॥३॥

मुझ रूपे ते मोह्यो पापियो, कुबुद्धि नो करनार ।
काली राते मुझ कंथ ने, नाख्यो समुद्र मोझार व्हाण मां ॥४॥

ऊंचो आभो छे नीचे नीर छे, अंधारी छे तेमज रात ।
नजरे न देखुं म्हारा नाथ ने, पाम्या समुद्र विघात
व्हाण मां. ॥५॥

दूर रह्या पियर सासरा, खूटी वैठो जन्म दुवार ।
प्रभुजी विना मारो कोई नथी, छो तुम जगनाथ आधार
व्हाण मां. ॥६॥

कुशल होजो मुझ कंथ ने, आजनी छे अशराल ।
बेला पडी विप दुःखनी, हूँ छु अज्ञानीज वाल व्हाण मां. ॥७॥

पूरव भवनी मातडी, परणी ते गुण गेह रे ।
जयसुन्दरी ये स्वयंवरा, आणि अधिक स्नेह रे नमो. ॥४॥
ते निसुणी ने पामियो, जातीस्मरण तेह रे ।
संयम ले सहस पुरुष शुं, वनिता साथे अछेह रे नमो. ॥५॥
एक अनन्त पणे होई, संबन्ध संसार रे ।
इण परि भावना भावतां, विचरे पूरव धार रे नमो. ॥६॥
घाती कर्म क्षये उपन्यु, केवल ज्ञान अनन्तरे ।
इम उपगार करे घणा, सेवे सुर नर सन्तरे नमो. ॥७॥
इम विरमे जे विषययी, विष सम कटु फल जाणी रे ।
ज्ञान बिमल चढती कला, थाये ते भवि प्राणी रे नमो. ॥८॥

---

(४२) ★ नागीला की सज्झाय ★

※ गणि समय सुन्दर जी म. कृत ※

भवदेव भाई घर आवियारे, प्रति बोधवा मुनि राज रे ।
हाथमां ते लीधो घृतनु पातरूं रे, भाई मने आगे रो बलावरे
नवीरे परण्याथा गोरी नागिलारे,

साले माहरा हैडारे माय रे, खटके मारा कालजारे मायरे
नवीरे परण्याथा. ॥१॥

इम कही गुरूजी पासे आवियारे, गुरूजी पूछे दिक्षाना कही भावरे।
लाजे नाकारों तेणे नवि कर्यो रे, दीक्षा लिधी भाई नी पास रे ॥
नवीरे परण्याथा. ॥२॥

वारे वरस संजम मां रह्या रे, हैये धरता नागीला नो ध्यान रे।
हा ! हा ! मूर्ख में आ शुं कर्यो रे, नागीला तजी ते जीवन प्राणरे
नवीरे परण्याता. ॥३॥

मात-पिता एहने नहीं रे, एकली ते अबला नार रे।
मुझ ऊपरे अनुरागिणी रे, हवे करवी नेहनी संभाल रे
नविरे परण्याथा. ॥४॥

शशिवयणी मृगालोचनी रे, विलविलती मेली घरनी नार रे।
सोल वरसनी सा सुन्दरी रे, सुन्दर तनु सकुमार रे
नविरे परण्याथा. ॥५॥

उमर पुष्प तजी करीरे, अलख ग्रहीं कर माहीं रे।
पाम्या सुख में तजी करीरे, पडीयुं दुःख जंजाल रे
नविरे परण्याथा. ॥६॥

भवदेव भोग चित्त आवियोरे, अण ओलखी पूछे घरनी नार रे।
कोइ ए दिठी गोरी नागीलारे, अमे आव्या व्रत छोडण हार रे
नविरे परण्याथा. ॥७॥

नारी कहे सुणो साधुजी रे, वम्यो न लिये कोई आहार रे।
हस्ती चढीने खर पर कोण चढे रे, तमें छो ज्ञानना भण्डार रे
नविते परण्याथा. ॥८॥

उदकीय वम्यो आहार जे करे रे, ते नवि मानवनो आचार रे।
तमे जे घर घरणी तजी रे, शीह करीये तेहनी संभाल रे
नविते परण्याथा. ॥९॥

धन्य सुबाहु धन्य शालीभद्रजी रे, धन २ मेघ कुमार रे।
नारी तजी ने संजम लियो रे, धन धन्नो अणगार रे
नविरे परण्याथा. ॥१०॥

देवकी सुत सुलसा तणा रे, नेमतणी सुणी बात रे।
बत्तीस २ प्रिया तणो रे, परिहर्‌यो भोग विलास रे
नविरे परण्याथा. ॥११॥

नरकनी खाण नारी अछेरे, नरकनी देवण हार रे।
ते तमे तजो मुनि राजजी रे, जिम पामो भव जल पार रे।
नविरे परण्याथा. ॥१२॥

नागीलाए नाथ ने समजावियोरे, पछी लिधो संजम भार रे।
भवदेव देवलोके गया रे, हुआ हुआ शिवकुमार रे
नविरे परण्याथा. ॥१३॥

पांचमें भवे जंबु स्वामी जी रे, परण्या २ पदमणी नार रे।
कोडी नवाणु कंचन लावीया रे, एछे सिद्धान्त नो पाठ रे
नवि रे परण्याथा. ॥१४॥

प्रभावक साथे चोर पांचसो रे, पदमणी आठे नार रे ।
कर्म खपावी मुक्ति गया रे, समय सुन्दर गुण गाय रे
नवि ते परण्याथा गोरी नागीला. ॥१५॥

इति

---

(४३) ★ देवकी ना छ पुत्रों नी सज्झाय ★

※ धर्मसिंह मुनि कृत ※

मनडुं ते मोह्यु मुनिवर माहरू रे, देवकी कहे सुविचार रे ।
त्रीजे ते वार आव्या तुमेरे, महारो सफल कर्यो अवतार रे
मनडुं ते. ॥१॥

साधु कहे सुण देवकी रे, अमो छीये छए भ्रात रे ।
त्रीहि संघाड़े घर ताहरे रे, अमे लेवा आव्या आहारनी दातरे
मनडु ते. ॥२॥

सरखी वय सरखी कलारे, सरखा रूप शरीर रे ।
तन वान शोभे सारिखारे, जे देखी भूली भान रे
मनडु ते. ॥३॥

पूर्व स्नेह धरी देवकी रे, पूछी साधुनी बात रे ।
कोण गामे वसता तुमेरे, कोण पिता कोण मात रे
मनडुं ते. ॥४॥

भद्दिल पुरे वसे पिता रे, नाम गाथापति सुलसा नाम रे ।
नेम जिणन्द वाणी सुणी रे, पाम्या वैराग्य विख्यात रे
मनडुं ते. ॥५॥

बत्तीस कोडी सोवन तजी रे, तजी बत्तीसे नार रे ।
एक दिन संयम लियो रे, जाणी अथिर संसार रे
मनडुं ते. ॥६॥

पूर्व कर्म ने टालवा रे, अमे तप धर्यो छठ उदार रे ।
आज ते छठने पारणेरे, आव्या नगर मोझार रे—
मनडुं ते. ॥७॥

माना मोटा बहु घरे रे, फरता आव्या तुझ आवास रे ।
एम कही साधु वल्यारे, चाल्या नेम जिणंदनी पास रे—
मनडुं ते. ॥८॥

साधु वचन सुणी देवकी रे, चेत्या हृदय मोझार रे ।
बाल पणे मुझने कह्युं रे, निमित्त पोलासपूरि सार रे—
मनडुं ते. ॥९॥

आठ पुत्र ताहरे थशेरे, तेहवा नहीं देवे जन्म अनेरी मात रे ।
आ भरत क्षेत्र मध्ये जाणजेरे, छेतो झूठी निमित्तनी बात रे

मनडुं ते. ॥१०॥

ए संशय नेम जिणंद टालशेरे, जई पुछूं प्रश्न उदार रे ।
रथमां वेशी चाल्या देवकी रे, जई वांद्या नेमिजिणंदना पाय रे—

मनडुं ते. ॥११॥

तव नेमि जिणन्द कहे देवकी रे, सुणो पुत्रनी बात रे ।
छ अणगार देखी तिहां रे, तब उपन्यो स्नेह विख्यात रे—

मनडुं ते. ॥१२॥

देवकी ए छय सुत ताहारे रे, तें धर्या उदर नव मास रे ।
हरिणैगमेषी देवता रे, जन्मता हर्या तुझ पास रे—

मनहुं ते. ॥१३॥

सुलसानी पासे ठव्यारे, पुरी सुलशानी आश रे ।
पुण्य प्रभावे ते पामीयारे. संसारना भोग विलाश रे—

मनडुं ते. ॥१४॥

नेमि जिणंद वाणी सुणीरे, पामी हर्ष उल्लास रे ।
वली छ अणगार जई वंदियारे, नीरखे नेह भरी तास रे—

मनडुं ते. ॥१५॥

पहोनो प्रगट्यो तिहां कनेरे, विकस्या रोम कूप देहरे ।
अनिमेष नयणे निरखीयारे, माताने सुखनीवास रे—
मनडुं ते. ॥१६॥

वांदी निजघर आवियां रे, होंश पुत्र रमाडवानी घणी आश रे ।
कृष्णजी ए देव आराधियों रे, माताने सुखनी वास रे—
मनडुं ते. ॥१७॥

गज सुकुमार खेलावती रे, पूरी देवकी नी आश रे ।
कर्म खपावी मुक्ते गया रे, छः अणगार सिद्धवास रे
मनडुं ते. ॥१८॥

साधु तणा गुण गावतां रे, सफल होवे निज आश रे ।
धर्मसिंह मुनिवर कहे रे, सुणता लीला विलास रे
मनडुं ते. ॥१९॥

---

(४४) ★ श्री महावीर स्वामी की सज्झाय ★

(तर्ज—धारणी मनावे रे मेघ कुमार ने.)

आधारज हुतो रे एक मुनि ताहरो रे, हवे कोण करसे रे सार ।
प्रीतडली हुंती रे पहला भवतणी रे, ते किम विसरी रे जाय
आधारज. ॥१॥

मुझने मेल्यो रे टलवलतो यहाँ रे, नथी कोई आंशु लूँछण हार।
गोतम कहीने कोण बोलावसे रे, कोण करसे मारी सार
आधार ज. ॥२॥

अन्तर जामी रे अण घटकुं कर्यो रे, मुझने मोकलीयो गाम।
अन्त काले रे हूं समज्यो लही रे, जे छे देशे मुझने अ.म
आधार ज. ॥३॥

गई हवे शोभा रे भरतना लोकनी रे, हूँ अज्ञानी रह्यो छुं आज।
कुमति मिथ्यात्वी रे जिम तिम बोलशे रे, कुण राखसे मोरी लाज
आधार ज. ॥४॥

वली शूलपाणी रे अज्ञानी घणो रे, दीधुं तुजने रे दुःख।
करुणा आणी रे तेहना उपरे रे, आप्यु बहुलों रे सुख
आधार ज. ॥५॥

जे अईमतोरे बालक आवियो रे, रमतो जलश्यु रे नेह।
केवल आपी रे आप समो कियो रे, एवडों सो तस स्नेह
आधार ज. ॥६॥

जे तुम चरणे आवि डंसियोरे, किधो तुजने उपसर्ग।
समता आणि रे ते चंड कोशिया रे, पाम्यों आठमो स्वर्ग
आधार ज. ॥७॥

चन्दन बाला रे अडदना बाकुलारे, पडिलाभ्या तुजने स्वामी।
तेहने किधी रे साध्वी मां वडीरे, पहोंचाडी शिवधाम
आधार ज. ॥८॥

दिन व्यासीनारे माता पिता हुआ रे, ब्राह्मण ब्राह्मणी दोय ।
शिवपुर संगीरे तेहने ते कर्यो रे, मिथ्या मल तस धोय
आधार ज. ॥९॥

अर्जुनमाली रे जे महापातकी रे, मनुष्य नो करतो संहार ।
ते पापी ने प्रभु तमें उद्धर्यो रे, कीधो घणो सुपसाय
आधार ज. ॥१०॥

जे जलचरी हुतो देडको रे, ते तुम ध्यान सोहाय ।
सोहमवासी रे ते सुरवर कियो रे, समकित करे सुपसाय
आधार ज. ॥११॥

अधम उद्धार्या रे अेहवा घणा रे, कहुं तस केतारे नाम ।
मांहारे तारा नामनो आशरो रे, ते मुझ फलसे रे काम
आधार ज. ॥१२॥

हवे मैं जाण्यों रे पद वीतराग तोरे, जो तें न धर्यो रे राग ।
राग गयेथी रे गुण प्रगट्या सवेरे, ते तुज वाणी महा भाग
आधार ज. ॥१३॥

संवेग रंगीरे क्षपक श्रेणीये चढियो रे, करतो गुणनो जमाव ।
केवल पाम्या लोका लोकना रे, दीठा सघला रे भाव
आधार ज, १४॥

त्यां इन्द्र आवी रे जिनपद थापियो रे. देशना दिये अमृत धार।
पर्षदा बूझी रे आतम रंग थीरे, वरिया शिवपद सार
आधार ज. ॥१५॥

इति

---

(४५) ❀ पडिक्कमणनां फलनी सज्झाय ❀

❀ जश विजय जी कृत ❀

गोतम पूछे श्री महावीर नेरे, भाखो भाखो प्रभुजी संबन्ध रे।
प्रतिक्रमण थी स्यूं फल पामिये रे, शुं शुं थाये प्राणी ने बन्ध रे
गोतम. ॥१॥

सांभल गोतम जे कहूं पुन्यथी रे, करणी करता पुन्य नो बंध रे।
पुण्य थी बीजो अधिको को नहीं रे, जेह थी थाये सुख संबंध रे
गोतम. ॥२॥

इच्छा पडिक्कमणो करी पामिये रे, प्राणी पुन्यनो बन्ध रे।
पुण्यनी करणी जे उवेखशे रे, पर भव थाशे अंधो अंधरे
गोतम. ॥३॥

पांच हजार ने ऊपर पांच सेरे, द्रव्य खरची लखावे जेहरे ।
जीवाभिगम भगवई पन्नवणा रे, मूके भंडारे पुण्यना रेह रे
गोतम. ॥४॥

पांच हजारे ने ऊपर पांचशेरे, गायो गर्भवंती जेहरे ।
तेहने अभय दान देतां थका रे, मुहपती आप्यानुं पुण्य एह रे
गोतम. ॥५॥

दस हजार गोकुल गायों तणो रे, एकेको दश हजार प्रमाण रे ।
तेहने अभय दान देतां थकारे, उपजे प्राणी ने निर्वाण रे
गोतम. ॥६॥

तेथी अधिको उत्तमफल पामियेरे, परने उपदेश दीधानुं जाणरे ।
उपदेश थकी संसारी तरे रे, उपदेशे पामे परिमल नाण रे
गोतम. ॥७॥

श्री जिन मन्दिर अभिनव शोभतारे, शिखरनुं खरच करावे जेहरे ।
एकेको मण्डप बावन चैत्यनो रे, चरवलो आप्यानो पुन्य एहरे
गोतम. ॥८॥

मास क्षमणनी तपस्या करे रे, पंजर करावे जेहरे ।
एहवा कोड पंजर करता थका रे, कामलियुं आप्यानुं फल एहरे
गोतम. ॥९॥

सहस अठयासी दानशाला तणो रे, उपजे प्राणीने पुन्य बंधरे ।
स्वामी संगाते गुरु स्थान केरे, प्रवेशे थाये पुण्यनो बन्ध रे
गोतम. ॥१०॥

श्रीजिन प्रतिमा सोवनमय करे रे, सहस अठ्यासी नो प्रमाणरे ।
एकेकी प्रतिमा पांचशे धनुषनीरे, इरियावही पडिक्कमतां फल
जाणरे गोतम. ॥११॥

आवश्यक पंजर ग्रन्थमाँ रे, भाख्यो ए प्रतिक्रमणानो संबन्ध रे ।
जीवा भगवई आवश्यक जोई नेरे, स्वमुख भाखे वीर जिणन्द रे
गोतम. ॥१२॥

वाचक जश कहे श्रद्धा धरो रे, पाले शुद्ध पडिक्कमणानो-
व्यवहार रे ।
अनुत्तर समसुख पामे मोटकुं रे, पामशे भविजन भवजल पार रे
गोतम पूछे श्री महावीर ने रे. ॥१३॥

---

(४६) ★ सोलह स्वप्न की सज्झाय ★

सुपन देखी पहेलडे, भांगी छे कल्पवृक्ष नी डाल रे ।
राजा संयम लेशे नहीं, दुःषम पंचम काल रे, चन्द्रगुप्त.
राजा सुणो ॥१॥

अकाले सुरज आथमें, तेनो श्यो विस्तार रे ।
जन्म्यों ते पंचम कालमां, तेने केवल नवि होसे रे
चन्द्रगुप्त. ॥२॥

तीजे चन्द्रमां चालणी, तेनो श्यों विस्तार रे ।
समाचारी जुदी जुदी हशे, बाटे वाटे धर्म न होशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥३॥

भूत भूतादि देख्या नाचता, चोथो स्वपनानो विस्तार रे ।
कुदेव कुगुरु कुधर्मनी, मान्यता घणी होशे रे चन्द्रगुप्त. ॥४॥

नाग दीठो बारे फणो, तेनो श्यों विस्तार रे ।
वरस थोडाने आन्तरे, होशे बार दुकाल रे चन्द्रगुप्त. ॥५॥

देव विमान छट्ठे वर्या, तेनो श्यो विस्तार रे ।
विद्याने जंघा चारणी, लब्धि ते विछेद होशे रे चन्द्रगुप्त. ॥६॥

उग्यू ते उकरडा मध्ये, सातमे कमल विमासी रे ।
एक नहीं ते सर्वे वर्णीया, जूदा जूदा मन होशे रे चन्द्रगुप्त. ॥७॥

थापना थापसे आप आपणी, पछी विराधक घणा होशे रे ।
उच्छेद होशे जैन धर्मनो, वच्चे मिथ्यात्व घोर अँधार रे
चन्द्रगुप्त. ॥८॥

सूका सरोवर दीठात्रण दिशे, दक्षिण दिशे धोला पानी रे ।
त्रण दिशे धर्म होशे नहीं, दक्षिण दिशे धर्म होशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥९॥

सोनानी थाली मध्ये, कुत्तरडा खावे खीर रे ।
ऊंचतणी रे लक्ष्मी, नीच तणे घर होशे रे   चन्द्रगुप्त. ॥१०॥

समुद्र मर्यादा मुकी वार में, तेनो श्यो विस्तार रे ।
शिष्य चेलाने पुत्र पुत्रीयाँ, नही राखे मर्यादा लगार रे
चन्द्रगुप्त. ॥११॥

हाथी माथे रे बैठो बानरो, तेनो श्यो विस्तार रे ।
म्लेच्छी राजा ऊंचा होशे, असली हिन्दु हेठा हाथ रे
चन्द्रगुप्त. ॥१२॥

राजकुमर चढियो पोठीये, तेनो श्यो विस्तार रे ।
ऊंचो ते जैन धर्म छाडीने, राजा नीच धर्म आदरशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥१३॥

रत्न झांखा रे दीठा तेरमें, तेनो श्यो विस्तार रे ।
भरत क्षेत्रना साधु साध्वी, (तेने) हेत मेलाव थोडा होशे रे ।
चन्द्रगुप्त. ॥१४॥

महारथे जूत्या वांछडा, तेनो श्यो विस्तार रे ।
बालक धर्म करसे सदा, बूढा परमादी पड्या रहेशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥१५॥

हाथी लडेरे मावत विना, तेनो श्यो विस्तार रे ।
वरस थोडा ने आंतरे, मांग्या नहीं वरसे मेह रे चन्द्रगुप्त. ॥१६॥

व्यवहार सुत्रनी चूलिका मध्ये, भद्रबाहु मुनि इम भांखे रे ।
सोल सुपन नो अर्थ एहवो, सांभलो राय सुधीर रे
चन्द्रगुप्त राजा सुणो. ॥१७॥

---

(४७) ★ आठ मदनी सज्झाय ★

※ मान विजय जी कृत ※

मद आठ महामुनि वारिये, जे दुर्गतिना दातार रे ।
श्री वीर जिनेश्वर उपदिशे, भाखे सोहम गणधार रे
मद आठ. ॥१॥

हांजी—जातीनो मद पहलो कह्यो, पूर्वे हरीकेशिये कीधो रे ।
चंडाल तणे कुल ऊपन्यो, तपथी सवी काग्ज सिद्धो रे मद. ॥२॥

हांजी-कुलमद त्रीजो दाखियो, मरिची भवे किधो प्राणी रे ।
कोडा कोडी सागर भवमाँ भम्यो, मद न करो एम मन जाणी रे
मद आठ. ॥३॥

हाजी बल मदथी दुःख पामिया, श्रेणिक वसुभूति जीवो रे ।
दुःख नरकतणां जाई भोगव्यां, मुखे पाडतां नित रीवो रे
मद आठ. ॥४॥

हांजी-सनतकुमार नरेसरूं सुर आगल रूप वखाणो रे ।
रोम रोम काया बिगड गई, मद चोथानो ए टाणो रे
मद आठ. ॥५॥

हांजी-मुनिवर संयम पालता, तपनो मद मनमां आयो रे ।
थया कूरगडुं ऋषि राजिया, पामीया तपनो अन्तरायो रे
मद आठ. ॥६॥

हांजी-देश दशारणनो धणी, राय दशार्णभद्र अभिमानी रे ।
इन्द्रनी ऋद्धि देखी बूझियो, संसार तजी थयो ज्ञानी रे
मद आठ. ॥७॥

हांजी-स्थूलभद्र विद्यानो कर्यो, मद सातमो जे दुःख दाई रे ।
श्रुत अर्थ पूर्ण न पामियो, जुओ मान तणी अधिकाई रे
मद आठ. ॥८॥

राय शुभूम षट् खंडनो धणी, लोभनो मद किधो अपार रे।
हय, गय, रथ सवी सायर गल्यां, गयो सातमी नरक मझार रे
मद आठ. ॥९॥

इम तन, धन, जोबन, राज्यनो, मन मधरो अहंकारो रे।
ए अथिर असत्य सवि कारमु विणसे क्षणमां वहुवारो रे
मद आठ. ॥१०॥

मद आठ निवारो व्रत धारियाँ, पालो संयम सुखकारी रे।
कहे "मान विजय" ते पामशो, अविचल पदवी नर नारी रे
मद आठ. ॥११॥

---

(४८) ★ मृगा पुत्र की सज्झाय ★

(तर्ज—सुग्रीव नयर सोहामणु जी.)

सुग्रीव नगर सोहामणु जी, बलभद्र तिहां राय।
तस घर घरणी मृगावती जी, तस नंदन युवराय हो
मावडी क्षण लाखीणी रे जाय. ॥१॥

बलश्री नामे भलोजी, मृगापुत्र प्रसिद्ध ।
माता ने नामे करी जो, गुण निष्फन्न तस दीध हो मावडी. ॥२॥

भणी गणी पण्डित थयोजी, यौवन वय जब आय ।
सुन्दर मन्दिर करावियाजी, परणावे निज माय हो मा. ॥३॥

तन जोवन रुपे सारखीजी, परण्या बत्रीश नार ।
पंच विषय सुख भोगवेजी नाटकना घमकार हो
मावडी चण. ॥४॥

रत्न जडित सोहामणाजी, अद्भूत ऊंचा आवास ।
देव दोगुंदुकनी परेजी, विलशे लीला विलाश हो मा. ॥५॥

एक दिन बैठा मालियेजी, नारी ने परिवार ।
मस्तक पग दाभे घणांजी, दीठो श्री अणगार हो मावडी. ॥६॥

मुनि देखी भव सांभर्योजी, वसियो मन वैराग हो ।
ऊतर्यो आमण दुमणोजी, लागो जननी ने पाय हो मा. ॥७॥

पाय लागीने विनवेजी, सांभल मोरी रे माय ।
नटवानी परे नाचियोजी, लख चोरासीमाय हो मावडी. ॥८॥

पृथ्वी पानी तेऊवली जी, चोथी वायु रे काय ।
जन्म मरण दुःख भोगव्याजी, तेम वनस्पति काय हो मा. ॥९॥

विकलेन्द्री तिर्यंच मांजी, मनुष्य देव मोझार ।
धर्म विहुणो आतमां जी, रडवडियों संसार हो मावडी. ॥१०॥

साते नरके हुँ भम्योजी, अनन्त अनंती रे वार ।
छेदन भेदन त्यां सह्यां जी, कहता न आवे पार हो मा. ॥११॥

सायरना जलथी घणाजी, में कीधां मायानां थान ।
तृप्ति न पाम्यो आत्मा जी, अधिक आरोग्या धाम हो
मावडी. ॥१२॥

चारित्र चिन्तामणी समोजी, अधिक मारे मन थाय ।
तन धन जोबन कारमोजी, क्षण क्षण तुटे रे आय हो
मावडी. ॥१३॥

माता अनुमती दीजिये जी, लेशुं संजम धार ।
पंच रतन मुझ सोभर्या जी, करशुं तेहनी सार हो मा. ॥१४॥

वयण सुणी बेटा तणांजी, जननी धरणी ढलंत ।
चित वल्यो तब आरडेजी, नयणे नीर झरन्त रे जाया
तुझ विण घडीमन जाया. ॥१५॥

वलती माता इम भणेजी, सुण सुण मोरा रे पूत ।
मन मोहन तूं वालहोजी, कांई भागे घर सूतरे जाया. ॥१६॥

मोटा मन्दिर मालीयाजी, नारियों ने परिवार ।
तुझ विन सहु अलखामणीजी, किम जावे दिन रात रे
जाया. ॥१७॥

नव महीना उदरे धर्योजी, जन्म तणा दुःख दीठ ।
कनक कचोले पोषियो जी, हवे हूँ थई अनीठ रे जाया. ॥१८॥

योवन वय नारी तणाजी, भोगवो वहुलारे भोग ।
योवन वय वीत्यां पछीजी, आदर जो तप योग रे जाया. ॥१९॥

पड्यो अखाडी जिम हाथियोजी. मृगलो पड्योरे पास ।
पंखी पडीयो जिम पिंजरे जी, तेम कुंवर घर वास रे
जाया. ॥२०॥

घर घर भिक्षा मांगवीजी, सरस निरस हो आहार ।
चारित्र छे वच्छ दोहिलोजी, जिम खांडा नी धार रे जाया. ॥२१॥

पंच महाव्रत पालवाजी, पालवा पंच आचार ।
दोष वयालीस टालीनेजी, लेवो सूझतो आहार रे जाया. ॥२२॥

मीण दांते लोहमय चणाजी, किम चावीश कुमार ।
वेलु समोवड कोलियोजी, जिने कह्यो संयम भार रे जाया. ॥२३॥

पलंग तलाई पोढताजी, करवो भूमि संथार ।
कनक कंचोला छाडवाजी, काचलिये विवहार रे जाया. ॥२४॥

मस्तके लोच कराववाजी, तूं सुकुमार अपार ।
बावीस परीषह जीतवाजी, करवो उग्र विहार रे जाया. ॥२५॥

पाय उभाणे चालवोजी, शियाले शीतल वाय ।
चोमासो वत्स दोहिलोजी, ऊनाले लूह वायरे जाया. ॥२६॥

गंगा सायर आदे करीजी, उपमा देखाडी रे माय ।
दुक्कर चारित्र दाखियोजी, कायर पुरुष ने थायरे जाया. ॥२७॥

कुमर भणे सुण मावडी जी, संजम सुख भण्डार ।
चोदहराज नगरी तणाजी, फेरा टालन हार हो मावडी. ॥२८॥

अनुमती तो आपशुंजी, कुण करसे तुझसार ।
रोग आवी जब लागसे जी, कोण करशे ओषध उपचार रे
जाया. ॥२९॥

वनमां रहे छे मृगलोजी, कुण करे तेनी सार ।
वन मृगलानी परे चालशुं जी, हमें एकलडा निरधार
जाया. ॥३०॥

अनुमती लीधी मायनीजी, आव्या वन मोझार ।
पंच महाव्रत आदयोजी, पाले संयम भार मुनिश्वर
धन धन तुमे अवतार. ॥३१॥

माय मोकलावीने वलीजी, समरथ साहस धीर ।
श्री गुरु चरणे जई नम्योजी, दिक्षा दो श्री वीर
मुनीश्वर. ॥३२॥

सुरनर किंनर बहु मल्याजी, ओच्छवनो नहीं पार ।
सर्व विरति जेणे आदरीजी, लह्यो भवजल पार
मुनीश्वर. ॥३३॥

मृगा पुत्र ऋषि राजियोजी, षट्काया गो रखवाल ।
ए समो नहीं वैरागियोजी, जिणे टाल्यो आतमभार
मुनीश्वर. ॥३४॥

भण्यो अध्ययन ओगणिसमो जी, मृगा पुत्र अधिकार ।
तप जप क्रिया शुद्ध करी जी, आराधी पंचाचार मुनीश्वर. ॥३५॥
संयम दुक्कर पालियोजी, करी एक मास संथार ।
कर्म खपावी केवल लहीजी, पहोंच्या मुक्ति गति मोझार
मुनीश्वर. ॥३६॥

इति

---

(४६) ★ मृगा पुत्र की सज्झाय ★

※ राम विजयजी कृत ※

(तर्ज—धारण मनावे रे मेघ कुमार नेरे)

भवि तुमे वन्दोरे मृगापुत्र साधुनेरे, वलभद्र रायनो नन्द ।
तरुण वय विलसेरे निज नारीशुं रे, जिमते सुर दोगुंद
भवि. ॥१॥

एक दिन बैठारे मन्दिर मालियेरे, दीठा श्री अणगार ।
पग उभराणे रे जयणा पालतोरे, षट्काय राखणहार
भवि. ॥२॥

ते देखी पूर्व भव सांभर्यो रे, नारी मुकी निराश ।
निरमोही थई हेठो उत्तर्योरे, आव्यो मायनी पास भवि. ॥३॥

माताजी आपो रे अनुमती मुझनेरे, लेशुं संजम भार ।
तन धन जोवन ऐ सवी कारमुं रे, कारमों ए संसार भवि. ॥४॥

वच्छ वचन साभली धरणी ढलीरे, शीतल करी उपचार ।
चित्तवल्यो तव एणीपेरे, उचरे रे, नयणे वहे जलधार भवि. ॥५॥

सुण मुझ जायारे ए सवी वातडीरे, तुझ विना वही छः मास ।
खिणने रखावे रे विरहो ताहारो रे, तूं मुझ सास उसास
भवि. ॥६॥

तुझने परणावी रे उत्तम कुलतणी रे, सुन्दर वहु सुकुमाल ।
वांक विहुणी रे किम उवेखीनो रे, नाखे विरहनी जाल भवि. ॥७॥

सुण मुझ मायडीरो में सुख भोगव्यारे, अनन्त अनन्ती वार ।
जिम जिम सेवेरे तिम वाधे घणों रे, ए वहु विषय विकार
भवि. ॥८॥

सुण वच्छ मारा रे संजम दोहिलुंरे, तूं सुकुमाल शरीर ।
परिषह सहवा रे भूमि संथारवुं रे, पीवुं ऊनो रे नीर भवि. ॥९॥

मताजी सह्यारे दुःख नरके घणारे, ते मुखे कह्या नवि जाय ।
तो ए संयम दुःख हूँ नवि गणुं रे, जेहथी सिव सुख थाय
भवि. ॥१०॥

वच्छ ! तूं रोगातंके पीडियो रे, तव कुण करसे रे सार ।
सुण तूं मायडीरे मृगलानी कोण लिये रे, खवर ते वन मोझार ।
भवि. ॥११॥

वनमृग जिम माताजी, विचरशुं रे, दियो अनुमति इणीवार ।
इम बहु वचने रे मनावी मायनेरें, लिधो संजम भार
भवि. ॥१२॥

सुमिति गुप्ती रुडी परे पालवे रे, पाले शुद्ध आचार ।
कर्म खपावीने मुगतें गया रे, श्री मृगापुत्र अणगार
भवि. ॥१३॥

वाचक राम कहे ऐ मुनि तणारे, गुण समरो दिन ने रात ।
धन धन छे एहनी करणी करे रे, धन तस मायने तात भवि
तुमें वन्दोरें मृगापुत्र साधुने रे. ॥१४॥

———

(५०) ★ श्री गज सुकुमार की सज्झाय ★

✽ वीर विजय जी कृत ✽

(तर्ज—झाझरीया मुनिवर धन धन.)

श्री जगनायक वन्दियेरे, बावीसमो जिनराय ।
द्वारीका नगरी समोसर्या रे, सुरनर सेवे पाय गुणवन्ता—
भविया वन्दो गज सुकुमार ॥१॥

श्री जिनवर चरणे नमीरे, गज सुकुमार कुमार ।
भव सायर उत्तारणी रे, वाणी सुणीरे अपार गुणवन्ता. ॥२॥

मात पिता ने विनवे रे, लेशुं संयम भार ।
माय कहे वत्स सांभलो रे, भोगवो ऋद्धि विस्तार
गुणवन्ता. ॥३॥

कुँवर कहे सुणो मातजी रे, वीनतडी मुझ एक ।
राजरमणी भोग नवा नवारे, पाम्या वार अनेक
गुणवन्ता. ॥४॥

धन योवन छे कारमुं रे, कुटुम्ब सहु परिवार ।
अनित्य पणे ए जाणिये रे, आ संसार असार गुणवन्ता. ॥५॥

श्री नेमीश्वर तीर्थं करूँ रे, सयल सुख दातार।
जन्म मरण दुःख छोडवारे, सेव्युं जंगम आधार
गुणवन्ता. ॥६॥

बोले कुँवर चतुरनरु रे, मया करो मुझ आज।
चारित्र लीधे मातजी रे, सीझे सगला काज गुणवन्ता. ॥७॥

जननी पिता बहु विनवेरे, पहोंता जग गुरु पास।
सर्व विरति अति आदरी रे, कुंवर मनमें उल्लास
गुणवन्ता. ॥८॥

आदेश पामी गुरु तणोरे, मुनिवर काउसग्ग लेई।
सोमल ससुरो आवीयोरे, निज वयणे निरखेई गुणवन्ता. ॥९॥

मस्तके पाल माटी तणी रे, बांधी अग्नि भरेई।
कोप चढ्यो विप्र अति घणोरे, उपसर्ग घोर करेई
गुणवन्ता. ॥१०॥

महा मुनीश्वर चिंतवेरे, समता रस भण्डार।
चिहुंगतिमां हूँ भम्योरे, एकलडो निरधार गुणवन्ता. ॥११॥

शुक्ल ध्याने हुओ केवली रे, पहोंच्या शिवपुर वास।
शाश्वत सुखने अनुभवे रे, वीर मुनि करे प्रणाम गुणवन्ता.
भविया वन्दो गज सुकुमार ॥१२॥

---

(५१) ★ श्री गज सुकुमार की सज्झाय ★

* विनय विजयजी कृत *

सोना केरा कांगराने, रूपा केरा गढ़ रे। कृष्णाजीनी द्वारिका,
जोवानी लागी रढ़ रे, चिरंजीवो कुंवर तुमे गज सुकुमार रे
पुरा पुण्ये तमे पामिया ॥१॥

नेमी जिणन्द आव्या वन्दन चाल्या भाई रे। गज शुकुमार
वीर साथे बोलाई रे चिरंजीवो ॥२॥

वाणी सुणी मीठी लागी, मन मोह्युं ए मारे।
श्री जैन धर्म विना सार नहीं कंईमारे चिरंजीवो. ॥३॥

घर आवी इम बोले, आज्ञा देवो माता रे।
संयम सुखे लेशुं जेथी पामु सुख शाता रे चिरंजीवो. ॥४॥

कुमरनी ए वाणी सुणी, माताजी मुर्छाणी रे।
कुंवर कुमर माता, आंखें नाखती पाणी रे चिरंजीवो. ॥५॥

हैया केरा हार जाया, तजी केम जाय रे।
देवना दीधेला तुम विण, सुख नहीं थायरे चिरंजीवो. ॥६॥

सोना सरीखा वाल तारा, कंचन वरणी काया रे।
एवी रे कायानो एक दिन, थासे धुल धाणी रे चिरंजीवो. ॥७॥

संयम खांडानी धारा, एमा नहीं सुख रे ।
बावीस परिशह जीतवा, एछे अति दु:ख रे   चिरंजीवो. ॥८॥

यादव कृष्ण एम बोले, राज करो भाई रे ।
आज्ञा आपो आणा थापो, शिरछत्र ठाई रे   चिरंजीवो. ॥९॥

सोनैयानी थेली काढ़ो, भण्डारी बोलाई रे ।
ओघा पातरा लावे आपो, दीक्षा लेशुं भाई रे चिरंजीवो. ॥१०॥

राज पाट वीरा तुमे, सुख हवे करो रे ।
दीक्षा आपे मने छत्र, तुमे धरो रे   चिरंजीवो. ॥११॥

आज्ञा पामी ओच्छव कीधो, दीक्षा आपे लिधी रे ।
देवकी कहे छे जाया, वहेले वरजो सिद्धी रे   चिरंजीवो. ॥१२॥

मुझने मुकीने जाया, मावडी मती कर जोरे ।
कर्म खपावी इण भव, वहेला मुक्ति वरजोरे   चिरंजीवो. ॥१३॥

कुंवारो अन्तेउर तजी, साधु वेश लीधो रे ।
गुरु आज्ञा लेईने, स्मशाने काउसग्ग किधो रे चिरंजीवो. ॥१४॥

खेरना अंगारा लई ने, मस्तके ठवीया रे ।
जंगले जमाई जोई, सोमल ससरो कोप्यो रे   चिरंजीवो. ॥१५॥

मोक्ष पाग बन्धावी, ससराने दोष नवि दीधो रे ।
वेदना अनंती सही, समतारस पीधो रे चिरंजीवो. ॥१६॥

धन्य जननीना जाया, गज सुकुमार नामरे ।
समरथ थई जेणे कीधा सिद्ध आतम काम रे चिरंजीवो. ॥१७॥

वेदना अनंती सही, दोष नहीं जोयु रे ।
घर मातो लई केवल, मुक्ति ए मन मोह्यु रे चिरंजीवो. ॥१८॥

विनय विजय एम कहे, एवा मुनिने धन्य रे ।
कर्मना बीज वाली जेणे, जीती लिधु मन रे चिरंजीवो.
कुंवर तुमे गज सुकुमार रे ॥१९॥

---

(५२) ★ गज सुकुमार मुनि की सज्झाय ★

* भाव सागरजी म. कृत *

(तर्ज—झलना)

द्वारिका नगरी अति भली, कृष्ण तिहां भूपाल साधुजी ।
लघु बन्धव जग लाडलो, नाम छे गज सुकुमार साधुजी
हितधरी गांवु मुनिवर एहवा ॥१॥

नेमि तणी वाणी सांभली, जाण्यो अथिर संसार साधुजी ।
अनुमती मांगी आविया, भूमि तिहां महाकाल साधुजी
हितधर गांवुं. ॥२॥

सुधीर तिहां काउसग्ग रह्या. अविचल मेरू समान साधुजी ।
भात पाणी वोसराविया, ध्याता शुभमती ध्यान साधुजी.
हितधर गांवुं. ॥३॥

सोमल आवि तिहां नीसर्यो, दीठा साधु दयाल साधुजी ।
ऋषि गज सामो देखी करी, कोप चढ्यो ततकाल साधुजी
हितधर गांवुं. ॥४॥

गीली माटी लावीने, माथे वान्धी पाल साधुजी ।
खेर तणा खीरा खरा, ठवीया कर्म चंडाल साधुजी
हितधर गांवुं. ॥५॥

धुखे अंगारा धग धगे, जाणे ताती भाड़ साधुजी ।
चट चट वाजे चामडी, तट तट तुटे नाड़ साधुजी
हितधर गांवुं. ॥६॥

चारित्र घोडे मुनि चढ्या, दर्शन तरकस तीर साधुजी ।
ज्ञाननी वरछी फेरता, क्षमा खड़ग समधीर साधुजी
हितधर गांवु. ॥७॥

उज्ज्वल बेदना ऊपनी, राख्यों निजमन धीर साधुजी ।
नाके सल घाल्यों नहीं, चढ़ते पारस वीर साधुजी
हितधर गांवुं. ॥८॥

भय शत्रु भय भाजियां, अनुकर अनुकूल साधुजी ।
मनथिर करी मथिया, करम कीधा चकचूर साधुजी
हितधर गांवुं. ॥९॥

कठिन परीषह जीतने, पाम्या केवल ज्ञान साधुजी ।
आत्म निज उजवालिया, पहोंता पद निर्वाण साधुजी
हितधर गांवुं. ॥१०॥

उत्तम करणी जिण कीधी, धन धन गज सुकुमार साधुजी ।
भाव सागर भणे भावशुं, वन्दे वारंवार साधुजी
हितधर गांवुं. ॥११॥

---

(५३) ★ मेघ रथ राजा की सज्झाय ★

※ गणी समय सुन्दर जी ※

दशमें भव श्री शान्तिजी, मेघरथ जीवडो राय रूडा राजा ।
पोषध शालामां एकदा, पोषध लियो मन भाय रूडा राजा

धन धन मेघरथ रायजी ॥

जीवन दया गुण खाण धर्मी राजा, धन धन मेघ रथ
रायजी. ॥१॥

ईशानाधिपति इन्द्रजी, वखाण्यो मेघरथ राय रूडाजी ।
धर्म चलाव्यों नहीं चले, भासुर देवता आय रूडा राजा
धन. ॥२॥

सिचाणो पारेवो तनु अवतरी, पडियो खोला मांय रूडा०
राखो राखो मुझने राजवी, मुझने सिंचाणु खाय रूडा०
धन. ॥३॥

सिंचाणो कहे सुणो राजिया, ए छे महारो आहार रूडा०
मेघरथ कहे सुणो पंखिया, हिंसाथी नरक अवतार
रूडा पंखी. ॥४॥

शरणे आव्युं रे पारेवडुं, नहीं आपुं निरधार रूडा पंखी ।
मांटी मंगावी तुझने देऊं, तेहनो कर तूं अहार रूडा पंखी
धन. ॥५॥

मांटी खपे मुझने एहनी, कवली छे ताहरी देह रूडा राजा० ।
जीव दया मेघरथ वसी, सत्यन मेले धर्म तेह रूडा राजा०
धन. ॥६॥

कात्री लेई पिंड कापीने, ले मांस तूं सिंचाण रूडा पंखी ।
त्राजुये तोली मुझने दियो, ए पारेवा परमाण रूडा राजा

धन. ॥७॥

त्राजवुं मंगावे मेघरथ रायजी, कांपी कांपी मूके छे मांस रूडा० ।
देव माया कारण सवि, नावे एकण अंसा रूडा राजा०

धन. ॥८॥

भाई राणी सुतवल वले, हाथ झाली कहे तेह गेला राजा ।
एक पारेवाने कारणे, शूं कांपो छो देह गेला राजा धन. ॥९॥

महाजन लोग वारे सहुं, मकरो एवडी घात रूडा राजा ।
मेघरथ कहे धर्मफल भलां, जीव दया मुझ थात धर्मी राजा

धन. ॥१०॥

त्राजुये बैठा राजवी, जे भोवते खाय रूडा पंखी ।
जीवथी पारेवो अधिक गम्यो, धन्य पिता तुझ माय

धर्मी राजा. ॥१ ॥

चढते परिणामे राजवी, सुर प्रगट्यो तिहां आय धर्मी० ।
खमावे बहु विधे करी, लली लली लागे छे पाय रूडा०

धन. ॥१२॥

इन्द्र प्रशंसा ताहरी करी, तेहवो तूं छे राय रूडा राजा।
मेघरथ काया साजी करी, सुर पहोत्यों निज ठाम धर्मी राजा०
धन. ॥१३॥

संयम लीधो मेघरथ रायजी, एक लाख पूर्वनूं आय धर्मी।
वीस स्थानक विधे सेविया, तीर्थंकर गोत्र बंधाय रूडा०
धन. ॥१४॥

इग्यारमें भव श्री शान्तिजी, पहोत्या सर्वार्थसिद्ध। रूडा राजा,
तेत्रीश सागर आऊंखो, सुख विलशे सुरऋद्ध रूडा. ॥१५॥

एक पारेवानी दया थकी, बे पदवी पाम्या नरेश रूडा०।
पांचमा चक्रवर्ती ऊपन्या, सोलमा शान्ति जिनेश रूडा. ॥१६॥

बारमां भवे शान्तिजी, अचिरा कूंखे अवतार रूडा०।
दीक्षा लेईने केवल वर्या, पहोता मुक्ति मोझार रूडा राजा. ॥१७॥

त्रीजे भव शिव सुख लह्या, पाम्या अनंतुं ज्ञान रूडा०।
तीर्थंकर पदवी लहीं, लाख वर्ष आयु जाण रूडा राजा. ॥१८॥

दया थकी नव निधी होवे, दया ते सुखनी खाण रूडा०।
भव अनंतनी ए सगी, दया ते सुखनी खाण रूडा०
राजा. ॥१९॥

गज भव शशलो राखियों, मेघ कुमार गुण खाण रूडा० ।
श्रेणिक राय सुत सुख लह्या, पहोतो अनुत्तर विमान रूडा. ॥२०॥

इम जाणी दया पालजो, मनमांहीं करुणा लाय रूडा० ।
समय सुन्दर इम विनवे, दयाथी सुख निर्वाण रूडा० रा. ॥२१॥

---

(५४) ❀ श्री सनतकुमार चक्रवर्तीनी सज्झाय ❀

* विनय कुशल गणि कृत *

(तर्ज—रे कलावती सती ए शिरोमणी.)

सरस्वती सरस वचन मांगु, तोरे पाय लागुं ।
सनतकुमार चक्री गुण गाऊं, जिम हूं निर्मल थाऊं
रंगीला राणा रहोजी, जीवन रहो रहो मेरे,
सनतकुमार, विनवे सविपरिवार रंगीला राणा. ॥१॥

रूप अनुपम इन्द्रे वखाण्युं, सुर ए जाणे माया ।
ब्राह्मण रूपकरी दोय आया, फरी फरी निरखत काया
रंगीला. ॥२॥

जेवो वखाण्यो तेहवो दीठो, रूप अनुपम भारी ।
स्तवनां सांभली मनमां हरख्यो, आण्युं गर्व अपारी
रंगीला. ॥३॥

अब शुं निरखो लाल रंगीले, खेह भरी मुझ काया ।
नहाई धोई जब छत्र धराऊं, तब जोई जो मोरी काया
रंगीला. ॥४॥

मुकुट कुंडल हार मोतीना, करी शणगार बनाया ।
छत्र धरावी सिंहासन बैठो, तस फरी ब्राह्मण आया
रंगीला. ॥५॥

देखी जोता रूप पलटाणुं, सुणो हो चक्री राया ।
सोल रोग तारी देहमें उपन्या, गर्व न कर कूडी काया
रंगीला. ॥६॥

कलमलियो घणो चक्री मनमां, सांभली देवनी वाणी ।
तुरंत तंबोल नाखीने जोवे, रंगभरी काया पलटाणी
रंगीला. ॥७॥

गढ़ मढ़ मन्दिर पोल मालिया मेल्या, मेली ते सवि ठकुराई ।
नव निधि चौदह रतन सवी मेल्या, मेली ते सयल सगाई
रंगीला. ॥८॥

हय गय रथ अंते उरी मेली, मेली ते ममता माया।
एकलडो संयम लई बिचरे, केडन मेले राणा राया
रंगीला. ॥९॥

पाय घुघरी घम घम बाजे, ठम ठम करती आवे।
दश आंगुलिये बे कर जोडी, विनती घणी रे करावे
रंगीला. ॥१०॥

तुम पांखे मारूं दिलडुं दाझे, दिन केही पर जाशे।
एक लाखने सहस बाणुं, नयेणे करी निरखाशे
रंगीला. ॥११॥

मात पिता हेते करी झूरे, अन्तेउरी सवि रोवे।
एक वार सन्मुख जोवो मेरे चक्री, सनतकुमार नहीं जोवे
रंगीला. ॥१२॥

चामर धरावो छत्र धरावो, राज्य में प्रतपो रूडा।
छः खण्ड पृथ्वी आण मनावो, ते किम जाण्या कूडा
रंगीला. ॥१३॥

छत्र धरे शिर चामर ढाले, राजन प्रतपो रूडे।
छः खण्ड पृथ्वी राज्य भोगवो, छः मास लगे फरे केडे
रंगीला. ॥१४॥

तव फरी देव छलवा कारण, वैद्य रूप करी आवे ।
तप शक्तियें करी लब्धि ऊपनी, थुके करी रोग शमावे
रंगीला. ॥१५॥

बे लाख वरस मंडलीक चक्री, लाख वरस जी दीक्षा ।
पनरमां जिनवरने वारे, नर देव करे जीव रक्षा रंगीला. ॥१६॥
श्री विजयसेन सूरीश्वर वाणी, तप गच्छ राजे जाणी ।
विनय कुशल पण्डितवर भाणी, तस चरणे चित्त लाया
रंगीला. ॥१७॥

सात सो वरसे रोग शमायो, कंचन सरखी काया ।
शान्ति कुशल मुनि एम पयंपे, देवलोक तीजा पाया
रंगीला. ॥१८॥

इति

---

(५५) ★ श्री जंबू स्वामी की सज्झाय ★

※ भाग्य विनय सूरि कृत ※

(तर्ज—भेखरे उतारो राजा भरतरी)

सरस्वती स्वामीने विनऊं, सद्गुरु लागुं जी पायजी ।
गुण रे गाऊं जंबू स्वामीना, हरख धरी मन मांहिं जी
धन धन जंबू स्वामीने. ॥१॥

संजम पंथ स्वामी दोहिलो, व्रत छे खांडानी धारजी ।
वेलु समान जे कोलिया, तेकेम गलिया जायजी धन धन. ॥२॥

पाय उभराणे चालवुं, दिनकर तपेरे निलाड ।
मध्याहने करवी गोचरी, लेवोजो सूझतो आहार धन धन. ॥३॥

कोडी नवाणुं सोवन ताहरे, ताहरे छे आठज नार ।
भोग वेलारे जोग कांई लियो, भोगवो भोग संसार
धन धन. ॥४॥

राम सीताना वियोगडे, बहुत कियो रे संग्राम ।
छतीरे नारी पियु ! कांई तजो, कां तजो धनने माल धन. ॥५॥

परणीने पियुजी ! शुं परिहरो, हाथ मेल्यानो संबन्ध ।
पछी करशो स्वामी औरतो, जेम कीधो मेघ मुणींद धन. ॥६॥

रत्न कचोले जीमता, काचलडे व्यवहार ।
पलंग तलाई पोढता, संथारो दुःखकार धन धन. ॥७॥

शियाले शीतल ढले, उनाले लू वाय ।
वरसालो घणो दोहिलो, अति सुकुमाल तुम काय धन. ॥८॥

पंखी मेलाये सौ भले, परभाते उडी जाय ।
जे जेवी करणी करे, तेहवी गती थाय धन धन. ॥९॥

जंवु कहे नारी प्रते, अमे लेशुं संजम आथ ।
सांचों स्नेह करी लेखवो, संजम ल्यो अम साथ धन धन. ॥१०॥
तेणे समे प्रभवजी आवीया, पांचसो चोर संगात ।
तेने जंवू कुमारे बूझव्या, बूझवी आठज नार धन. ॥११॥
ससरा सासुने बूझव्या, बूझव्या तातने माय ।
सुधर्म स्वामी पासे आविया, लीधो संजम सुखदाय धन. ॥१२॥
पांचसे सतावीस शुं विचरे, विचरे मनने उल्लास ।
कर्म खपावी थया केवली, छेद्या भवकेरा पास धन धन. ॥१३॥
संवत सत्तरे छासठे, कडपूर नगर मोझार ।
भाग्य विजय सूरि इम भणे, जंवू नामे जय जयकार
धन धन. ॥१४॥

इति

---

(५६) ★ श्री सुभद्रा की सज्झाय ★

(तर्ज—भरतरी राग अथवा धर्म मगल महिमा मिलो)

मुनिवर सोधेरे ईरजा, जीवना जतन करंत ।
तरणुं खुत्युं आंखमां, नयणे नीर झरन्त मुनिवर—
सोधेरे ईरजा. ॥१॥

कल्प वृक्ष जेणे ओलख्यो, आंगणे उभोरे जेह ।
जीभे तरणुं काढियुं, सासुने पड्यो रे संदेह मुनिवर. ॥२॥

ते सज्जन सुँ कीजिये, जेणे कुल लागे लाज ।
पुत्र वधु सोना समी, नही अमारे कांई काज मुनिवर. ॥३॥

गुण विणशी गुण लाकडी, गुण विन नार कुनार ।
मन भाग्युं भरतारनुं, नहीं अमारे घरवार मुनिवर. ॥४॥

पियु वचन श्रवणे करी, सती मन चिंतवे एम ।
जिन धर्म कलंक जाणी करी, काउसग्ग किधो रे तेम
मुनिवर. ॥५॥

शासनसुरि आसन चल्यूं, सतीपर आव्युं रे आल ।
पोल जगवुं रे नगरी नो, तोरे उत्तर से आल मुनिवर. ॥६॥

भुंगल तो भांगे नहीं, घण न लागे घाव ।
चंपा पोल न उघडे, आकुल व्याकुल थाय मुनिवर. ॥७॥

आकाशे ऊभा देवता, बोले एहवा बोल ।
सती जल सिंचे चालणी, तोरे उघड़शे रे पोल मुनिवर. ॥८॥

राजा मन आणंदियो, नगरे घणी छे रे नार ।
अंतेउर छे माहरू, सतियाँ शिरोमणी नार मुनिवर. ॥९॥

अंतेउर कयुं एकठुं, कूवा कांठे नहीं माय ।
काचे तांतणे चालणी, त्रुटि जाय रे त्राण मुनिवर. ॥१०॥

अंतेउर थयुं दया मणुं, राजा थयो निराश ।
माटी पणुं मनमां रह्युं, धिक पड्यो घरवास मुनिवर. ॥११॥

नगर पढह वजडावियो, वस्ती दीशे हेरान ।
प्रजाने पीडा घणी, कोई दियो जीवन दान मुनिवर. ॥१२॥

पडह आव्यों घर आंगणे, नगरी हालम डोल ।
जो माता अनुमती दीयो, तो हूँ उवाडुं रे पोल मुनिवर. ॥१३॥

वली वली बहुवर शुं कहूँ, नहीं निर्लजने लाज ।
नवकुल नाग नाशी गया, आव्युं काकिडे राज मुनिवर. ॥१४॥

दोष दीजे निज कर्मने, कलंक चढाव्युं रे माय ।
पडह छिबी उभी रही, जई संभलावो राय मुनिवर. ॥१५॥

वेगे ते गई वधामणी, राजा मन नहिं विश्वास ।
प्रत्यक्त जुवे ए पारखुं, त्यां जई करे रे तपास मुनिवर. ॥१६॥

सुखासन वेसी करी, आव्यो जिहाँ छे रे कूप ।
वदन ते पुनम चन्दलो, देखी हरख्यो रे भूप मुनिवर. ॥१७॥

राजा मन आणंदियो, हैडे हर्ष न माय ।
प्रजाने पीडा घणी, सार करो मोरी माय मुनिवर. ॥१८॥

अवर पुरुष बंधव पिता, सती मन मांही सोय ।
मानव सहु मेडिये चढी, सतीने जुवे सहु सोय मुनिवर. ॥१६॥

कांचे तांतणे चालणी, सतीकला चढी सोल ।
कामिनी कूप जले भरी, उघाड़ी त्रणपोल मुनिवर. ॥२०॥

कोई पियर कोई सासरे, कोई होशे माने मोसाल ।
चोथी पोल उघाड़से, जे हसे शियल चोशाल मुनिवर. ॥२१॥

सुरनर होशे साखीया, सुभद्रा ए टाल्युं कलंक ।
चोथी पोल उघाड़ से, जेहशे शियल निकलंक मुनिवर. ॥२२॥

नाक राख्युं नगरी तणु, गाम उत्तारी रे गाल ।
राय राणा प्रशंसा करे, सतीये शिरोमणी सार मुनिवर. ॥२३॥

जे नर नारी पालशे, ते तरसे संसार ।
सिद्धि तणा सुख पामशे, अमर तणो अवतार मुनिवर. ॥२४॥

संघो कहे शियल सती, महिल्लाए राख्युं नाम ।
वाघण केरां दुधड़ा, रहेशे सोना केरे ठाम
मुनिवर सोधे रे ईरजा. ॥२५॥

---

(५७) ★ श्री शालि भद्रजी की सज्झाय ★

※ कवियण कृत ※

राज गृही नगरी मोझारो जी, वणजारो देशावर सारोजी ।
इण विणजेजी, रत्न कंबल लेई आविया जी ॥१॥

लाख लाखिणी वस्तु लाखेणी जी, ए वस्तु छे अति झिणीजी ।
कांई परिमल जी, घट घट मन्दिर परिहरी जी. ॥२॥

पूछे गांमने चोवटे, लोग मल्या थटो थटे ।
परजाई पूछो जी, शालिभद्रन मन्दिरिये जी. ॥३॥

शेठाणी सुखे भद्रा निरखेजी, रत्न कंबल लई परखे जी ।
लई पहोंचाड़ो जी, शालिभद्र ने मन्दिरीयेजी जी. ॥४॥

सुण हो भाई वणजारा, थारे कांवल सोले सारीजी ।
कांई मारेजी मारे वहुं, बत्तीशो जी भाई वणजशे
हाँ रे मारे सवदो नहीं बने जी. ॥५॥

सुणो हो माता भद्राजी, थारे वहुँओ बत्तीशोजी ।
कांई मारे जी मारे कांवल सोलो जी, माता भद्रा हो
एक एक पाटी आपदो जी. ॥६॥

तेडाव्यो भंडारी जी, वीश लाख निरधारो जी ।
गणी देजो जी, श्रेहने घेर बैठा पहों चाड़ेजी जी. ॥७॥

राणी कहे सुणो राजाजी, आपणा राज किस काजा जी ।
मुझ काजे जी, एक न लीधी स्वामी कांबली जी. ॥८॥

सुणो चेलणा राणी जी, ए वाता में जाणी जी ।
पिछाणी जी, श्रेनो अचंभो छे घणो जी. ॥९॥

दांतण तो तब करशुं जी, शालिभद्रनुं मुख जोशुं जी ।
शणगारो जी, गजरथ घोड़ा पालखी जी. ॥१०॥

आगल कुंत हिंचावंता, पाछल पात्र नचावंता ।
राय श्रेणिक जी, शालिभद्र घेर आविया जी. ॥११॥

पहेले भुवन में पग दियो, राजा मनमां चमकियो ।
कांई जोज्यो जी, आघर तो चाकर तणो जी. ॥१२॥

बीजे भुवन में पग दियो, राजाजी मनमां हरखियो ।
कांई जोज्यो जी, आ घर तो सेवकों तणुं जी. ॥१३॥

तीजा भुवन में पग दियो, राजाजी मनमां चमकियो ।
कांई जोज्योजी, आघर तो श्रेष्ठी तणां जी. ॥१४॥

चोथे भुवन में पग दियो, राजा मनमां हर्खियो ।
कांई जोज्यो जी, आघर तो राधण तणुं जी. ।।१५।।

राय श्रेणिक नी मुद्रिका, खोवाणी खोल करे जी ।
माय भद्राजी, थाल भरी तब लाविया जी. ।।१६।।

जागो जागो मारा नंदनजी, केम सुता आनन्देजी ।
कांई आंगणे जी, श्रेणिक राय पधार्या जी. ।।१७।।

हूँ नवि जाणुं माता-मोलमां, हूं नवि जाणुं माता तोलमां ।
तमे लेजो जी, जेम तमने सुख उपजे जी ।।१८।।

पूर्वे कही नहीं पूछता, अब कांई पूछो मोरा जननी जी ।
मोरी माताजी, हूँ न जाणुं वणजमां जी. ।।१९।।

राय करयाणुं लेजोजी, मों माँग्या दाम देजोजी ।
नाणाँ चूकवीजी, राय भंडारे नंखावी दियो जी. ।।२०।।

वलती माता इम कहे, साची नंदन सहे ।
कांई साचोजी, पृथ्वीनाथ पाधरिया जी. ।।२१।।

त्तणमां करे तब राजियो, कांई त्तणमां करे वे राजीयों ।
कांई त्तणमां जी, न्याय अन्याय करे सही जी. ।।२२।।

पूर्वे सुकृत नवि कीधा, सुपात्रे दान नवि दीधा ।
मुझ माथेजी, हजुं पण एवो नाथ छे जी. ॥२३॥

अव्रतो करणी करशुंजी, पंच विषय परिहरशुं जी ।
पाली संयम जी, नाथ सनाथ थाशुं सही जी. ॥२४॥

इन्दुवत् अंग तेजजी, आवे सहुनें हेज जी ।
नख शिख लगेजी, अंगोपांग शोभे घणा जी. ॥२५॥

मुक्ताफल जिम चमके जी, काने कुंडके झलके जी ।
राय श्रेणीक जी, शालिभद्र ने खोले लियो जी. ॥२६॥

राजा कहे सुणो माताजी, तुम कुंवर सुख साताजी ।
हवे एहनेजी, पाछो मन्दिर मोकलो जी. ॥२७॥

शालिभद्र निजघर आव्याजी श्रेणिक घेर सिधाव्यां जी ।
पछी शालिभद्रजी, चिंते मनमां धर्मने जी. ॥२८॥

श्री जैन धर्म आदरूं, मोह माया ने परिहरूं ।
हुं छोडूंजी, गजरथ, घोडा पालखी जी. ॥२९॥

सुणीने माता विलखीजी, नारियो सगली तलखीजी ।
तिण वेलाजी, अशाता पाम्या घणी जी. ॥३०॥

माता पिता ने भ्रातजी, आल पंपालनी वातजी ।
इण जगमां जी, स्वार्थना सर्वे सगा जी. ॥३१॥

हंस विना शां सरोवर्या, पियु विना शा मन्दिरीया ।
मोहवश थकाजी, उच्चाट करे घणो जी. ॥३२॥

सर्वनीर अमूल्यजी, वाटकडे तेल फूलेलजी ।
शाह धन्नोजी शरीर, समारण मांडियो जी. ॥३३॥

धन्ना घेर सुभद्रा नारीजी, बैठा महेल मोभारीजी ।
सांभरंता जी एकज, आंसु खेरव्यु जी. ॥३४॥

गोभद्र शेठनी डीकरी, भद्राबाई तोडी मायजी ।
सुण सुन्दरी जी, ते किम आंसु खेरव्यु जी. ॥३५॥

शालिभद्रनी बेनडी, बत्तीश भोजाईनी नणदली ।
तो ताहरे जी, शामाटे रोवु पड़े जी. ॥३६॥

जगमां एकज बंधवो, संयम लेवा मन करे ।
नारी एक एक जी, दिन दिन प्रत्ये परिहरे जी. ॥३७॥

एतो मित्र कायरू, शु लेशे संजम भायरू ।
जीभडली जी, मुख मायानी जुदी जाणवी जी. ॥३८॥

कहेवु तो घणु सोहिलु, पण करवु तो अति दोहिलु ।
सुणो स्वामी जी, एवी ऋधि कोण परिहरे जी. ॥३९॥

कहेवु तो वणु सोहिलु, पण करवु तो अति दोहिलु ।
सुण सुन्दरी जी, आजथी त्यागी तुजने जी. ॥४०॥

हुं तो हसती मलकीने, तुमे कियो तमासो सलकीने,
सुणो स्वामी जी, अबतो चिंता नवि धरूं जी. ॥४१॥

चोटी अबोडों वालीजी, धन्नाशा उठ्या चालीजी,
कांई आव्याजी, शालिभद्र ने मंदिरीये जी. ॥४२॥

उठो मित्र कायरू, संयम लेईये भायरू जी,
आपण दोय जणाजी, संजम शुद्ध आराधीये जी. ॥४३॥

शालीभद्र वैरागिया, शाह धन्नो अति स्थागीया,
दोनु रागीया जी, श्रीवीर समीपे आविया जी. ॥४४॥

संजम मर्म लीनोजी, तपस्याए मन भीनोजी,
शाह धन्नोजी, मास क्षमण करे पारणा जी. ॥४५॥

तप करी देहने गालीजी, दूषण सगला टालीजी,
वैभार गिरीजी, ऊपर अणशण आदर्यो जी. ॥४६॥

चढते परिणामे सोयजी, कालकरी जन दोयजी,
देव गतिये जी, अनुत्तर विमाने ऊपन्या जी. ॥४७॥

सुर सुखने तिहां भोगवी, त्यांथी देव दोनुं चवी,
विदेहे जी, मनुष्यपणुं तेह पामशे जी. ॥४८॥

शुद्ध संयम आदरी, सकल कर्मनो क्षय करी,
लेई केवल जी, मोक्ष गतिने पामशे जी. ॥४९॥

दान तणा फल देखोजी, धन्नो शालिभद्र पेखोजी,
नहीं लेखो जी, अतुल सुखने पामशे जी. ॥५०॥

इम जाणी सुपात्रे पेखोजी, वेगे पानी मोत्तजी,
नही झोको जी, कदिये जीवने ऊपजे जी. ॥५१॥

उत्तमना गुण गावेजी, मनवांछित फल पावे जी,
कहे कवियणजी, श्रोता जन तुमे सांभलो जी. ॥५२॥

इति

---

(५८) ★ श्री नागेश्वरी ब्राह्मणी की सज्झाय ★

(तर्ज—जल जलती मिलती गणी रे लाल)

चम्पा नगरी सोहामणी रे लाल, भरत क्षेत्र मोझार हो
भविक जन ।
सोमल ब्राह्मण तिहां वसेरे लाल, नागेश्वरी घरनार हो भविकजन
साधुने वहोराव्युं कडवुं तुबडुं रे लाला. ॥१॥

साधुने वहोराव्युं कडवुं तुबडुं रे लाल, कियो मन न विचार
हो भविकजन ।
तेणे काले तेणे समेरे लाल, धर्मघोष अणगार हो
भविकजन साधु. ॥२॥

तेहना शिष्य अति दीपता रे लाल, धर्म रुचि मुनि राय हो
भविकजन ।
मास मास तप आदरे रे लाल, रहे गुरुनी लार हो
भवि. साधु० ॥३॥
मास क्षमणने पारणे रे लाल, लेई गुरुनी आण हो भवि. ।
नागेश्वरी घर आविया रे लाल, दीयो घणो सन्मान हो
भवि. साधु० ॥४॥
तेतो घरमां जाईने रे लाल, हरखशुं लाई उठाय हो भवि. ।
कडवा तुँबडानों सालणो रे लाल, सर्व दीधो वहोराय भवि.
साधु० ॥५॥
आहार पूरो जाणी करी रे लाल, आव्या गुरुजीनी पास हो भवि.
एहवो आहार वत्स मत करो रे लाल, होशे जीव विनाश हो
भवि. साधु० ॥६॥
आहार लेई मुनि चालियारे लाल, गया वन मोझार हो भवि. ।
एक बिंदु तिहां परठव्यो रे लाल, हुवो जीव संहार हो भवि.
साधु० ॥७॥
एक बिन्दु ने नाखवे रे लाल, हुवो जीवां नो विनाश हो भवि.
जीव दया मन चिंतवी रे लाल, परिणाम्यो आहार असार हो
भवि. साधु० ॥८॥

एक मुहुर्त ने अन्तरे रे लाल, परिणम्यो आहार असार हो भवि.
अतुल वेदना उपनी रे लाल, तुंबा तणे प्रसाद हो भवि.

साधु० ॥९॥

संथारा गाथा पढ़ी करी रे लाल, त्यागे सर्व आहार हो भवि.
पाप अठारे पचक्खीयारे लाल, काल कियो तेणिवार हो भवि.

साधु० ॥१०॥

साधु आणी मन भावना रे लाल, गया अनुत्तर विमान हो भवि.
महा विदेहमां जन्मशे रे लाल, पामशे केवल ज्ञान हो भवि.

साधु० ॥११॥

ब्राह्मण सुणीने कोपियो रे लाल, नागेश्वरी ने दीधी काढ़ हो भवि.
सोल जातिना कोढ़ उपन्यारे लाल, वेदना पीड़ी अपार हो भवि.

साधु० ॥१२॥

साते नरकमां जई करी रे लाल, फरी असंख्यातो काल हो भवि.
दुःख अनंता भोगव्यारे लाल, कर्म तणा फल जोय हो भवि.

साधु० ॥१३॥

सेठ तणे घर अवतरी रे लाल, चंपा नगरी मोझार हो भवि. ।
सुकुमालिका नामे भलीरे लाल, रूपे रंभा अवतार हो भवि.

साधु० ॥१४॥

सेठ कुमरी परणावीयाँ रे लाल, कुमर अति सुकुमाल हो भवि.
तत्काल ते छोडी गयो रे लाल, लागी अग्निनी झाल हो भवि.
साधु० ॥१५॥

शेठ सेठजीनी घेरे आवियोरे लाल, ओलंभो दीधो
तेणीवार हो भवि.
विण अवगुण परिहरी रे लाल, तुम मन कोण विचार हो भवि.
साधु० ॥१६॥

शेठजी पुत्रने इम कहे रे लाल, ते कीधुं कांई पुत्र हो भवि. ।
पाछा जावो एहने घरं रे लाल, राखो शेठ घर सूत हो भवि.
साधु० ॥१७॥

पुत्र कहे पिता सुणोरे लाल, कहो तो डुबूं जल मांय हो भवि.
कहो तो अग्निमां वली मरूं रे लाल, कहो तो पडुं वृक्षे जाए–
हो भवि. साधु० ॥१८॥

कहो तो डुँगरथी पडी मरूं रे लाल, कहो तो हूँ विष खाय
हो भवि.
कहो तो फांसी खाई मरूं रे लाल, कहो तो जाऊं देशे जाय हो
भवि. साधु० ॥१९॥

कहो तो शस्त्र खांची मरूं रे लाल, कहो तो लेऊं संयम भार
हो भविकजन.
तात वचन लोपुं नहीं रे लाल, पण नहीं वंछूं ए नार हो भवि.
साधु० ॥२०॥

शेठ सुणी घर आवियो रे लाल, कुंमरी ऊपर बहु कोण हो भवि.
दुम्बक पुरुष अणावियो रे लाल, ते पण गयो तेने छोड हो
भवि. साधु० ॥२१॥

कुमरी मन चिंता थईरे लाल, कांई सरजाई किरतार हो भवि.
कीधा पाप में अति घणारे लाल, उदय हुआ इणिवार हो भवि.
साधु० ॥२२॥

दान देवा तिहां मांडीयो रे लाल, दिन दिन प्रत्ये प्रभात हो भवि.
गोवाली का साध्वी पधारीया रे लाल, सीयल सुशोभित गात हो
भवि. साधु० ॥२३॥

करजोडी विनती करे रे लाल, मनशुं करो उपकार हो भवि.
मुझ भरतार वांछे नहीं रे लाल, कांई करो उपचार हो भवि.
साधु० ॥२४॥

एह वचन तिहां सांभलीरे लाल, साध्वी करे धर्म उपदेश हो भवि.
धर्म सुणाव्यो मोटकुरे लाल, जेथी पामे सुख अशेष हो भवि.
साधु० ॥२५॥

धर्मकथा हेतशुं सुणीरे लाल, श्रावकनाँ व्रत बार हो भवि. ।
एह धर्म मुझने तारसे रे लाल, एह संसार असार हो भवि०
साधु० ॥२६॥

अनुमती लई पिता तणीरे लाल, लीधो संयम भार हो भवि०
चार महाव्रत उच्चयारे लाल, रहे गुरुणीनी लार हो भवि०
साधु० ॥२७॥

करजोडी विनन्ती करे रे लाल, द्यो मुझने आदेश हो भवि० ।
वनमाहीं काउसग्ग करूं रे लाल, लेशुं आतापनातेम हो
भवि० साधु० ॥२८॥

गुरुणी वचन लेई करी रे लाल, गई बाग मोझार हो भवि. ।
छठ छठ तप काउसग्ग करे रे लाल, दीठी तिहाँ गणिका नार हो
भवि. साधु० ॥२६॥

गणिका देखी नियाणुं करेरे लाल, होऊं पंच पुरुषनी नार हो भवि.
अर्ध मासनी संलेहणा करीरे लाल, बीजे स्वर्ग अवतार हो भवि.
साधु० ॥३०॥

सुरपद आयुष भोगवी रे लाल, च्यवी सुकमालिका नाम हो भवि.
द्रुपद राजा घरे अवतरी रे लाल, चुलणी कूंखे द्रौपदी नाम हो
भवि. साधु० ॥३१॥

पांच पांडव घर भारजारे लाल, हुई अति सुजाण हो भवि. ।
संयम लेई स्वर्गे गई रे लाल, पछी जाशे निर्वाण हो भवि.
साधु० ॥३२॥

महा विदेहमां सिद्धसे रे लाल, पामशे केवल ज्ञान हो भवि. ।
पांचे पांडव मुगति गयारे लाल, पहोंच्या अविचल स्थान हो
भविकजन. जेणे साधुने वहोराव्युं कडवुं तुंमडोरे लाल. ॥३३॥

इति

---

(५६) ★ चन्दन बाला की सज्झाय ★

* कुंवर सागरजी कृत *

(तर्ज—तुझ साथे नही बोलु हो ऋषभजी)

बाल कुंवारी चन्दनबाला, बोले बोल रसाला रे ।
रूप अनुपम नयण विशाला, गंगाजल गुण माला रे बाल. ॥१॥
शेठ धनावह मन्दिर आणी, बेटीनी परे जाणी रे ।
अणख अदेखाई मनमां आणी, तस घरणी दुहआणी रे
बाल. ॥२॥

मूला कुमती तणी छे कूंडी, चन्दणा मस्तक मूंडी रे ।
बेडी जडीवे जोई मति ऊंडी, तालु देती भूंडी रे वाल. ॥३॥

आयो शेठ त्रण दिन अन्ते, दिवस बपोरे चढंते रे ।
अडद वाकुला देई ए कान्ते, सुपडा खणे खांते रे वाल. ॥४॥

पांच दिवस ऊंणो छमासी, अभिग्रह वीर अभ्यासी रे ।
आव्या आंगणे योग विलासी, देखी कुंवरी उल्लासी रे
वाल. ॥५॥

एक पग उमरा मां राखी, नयणे आंसुडा नाखी रे ।
बाकुला पडिलाभ्या मन साखी, मुक्तितणी अभिलाखी रे
वाल. ॥६॥

साडी बारे कोडी पर सिद्धि, वृष्टि सौनैयानी कीधी रे ।
अनुक्रमे संयम कमला लिधी, मृगावती ने दीक्षा दिधीरे
वाल. ॥७॥

एक दिन वीर कोशांबी आव्या, चन्द्र सूरज मन भाव्या रे ।
मूल विमाने विमाने आया, तेज अधिक तस कायारे वाल. ॥८॥

उठो स्थानक आपणे चेली, जाशुं दोय जणा वहेलीरे ।
एवी वाणी जाय न मेली, आवी गुरुणी एकेलीरे वाल. ॥९॥

घोर धपट अंधारे आवी, पगे लगाई खमावीरे ।
केवल लेई निज कर्म खपावी, गुरुणीये खबर न पाई रे
बाल. ॥१०॥

हाथ ऊंचो लई चन्दना जगावी, आवे नाग उजाई रे ।
ते अंधारे खबर किम पाई, केवल ज्ञान उपाई रे बाल. ॥११॥

मैं ए किधी माठी करणी, ज्ञाननी आशातना करणी रे ।
चेली पगे लागे तस गुरुणी, तूं हीज तारण तरणीरे बाल. ॥१२॥

गुरुणी चेली कर्म विछोडी, पहुंची मुक्ति शुं जोडी रे ।
विजय कवि पण्डितनी जोडी, शिष्य कुंवर कहे कर जोडी रे—
बाल कुमारी चन्दन बाल० ॥१३॥

इति

---

(६०) ★ रुक्मिणी की सज्झाय ★

* राज विजय जी कृत *

(तर्ज—आच्छेलाल इस राग मे)

विचरंता गामोगाम, नेमि जिनेश्वर नाम ।
आच्छेलाल नयरी द्वारिकावती आविया जी. ॥१॥

वन पालक सुखदाय, दिये वधामणी आय ।
आच्छेलाल नेमी जिणन्द पधारिया जी० ॥२॥

कृष्णादिक नर नार, सहु मलि पर्षदा वार ।
आच्छेलाल नेमजी ने वन्दन आविया जी० ॥३॥

देशना दीये जिनराय, सहुने आवे दाय ।
आछेलाल रुक्मिणी, पूछे श्री नेमने जी० ॥४॥

पुत्रने माहारे वियोग, हुवो किण कर्म संजोग ।
आछेलाल भगवन्त मुझने उपदिसो जी. ॥५॥

पूरव भव विरतंत, भाषे श्री भगवन्त आछे० ।
कीधा कर्म न छूटिये जी. ॥६॥

तूं हुंती नृपनी नार, पूरव भव कोई वार ।
आछे० एक दिन रमवा संचर्या जी. ॥७॥

जोता वन मोझार, दीठो एक सहकार ।
आछे० मोरडी व्याणी तिण ऊपरे जी. ॥८॥

साथे तमारो नाथ, ईंडा झाल्या हाथो हाथ ।
आछे० कुंकुम वरणा थे किया जी. ॥९॥

नवि ओलख्या ते मोर, करवा लागी शोर ।
आछे० सोले घडी नवि सेविया जी. ॥१०॥

उठी घटा घनघोर, चौदिशी बोले दादर मोर ।
आछे० पपईया पिउं पिउं करे जी. ॥११॥

बांधी तिहाँ अन्तराय, इम भाषे जिनराय ।
आछे० सोले वरस विरहो पड्यो जी. ॥१२॥

हँस हँस बांधे कर्म, नहीं ओलख्यो जिन धर्म ।
आछे० रोता न छूटे प्राणीया जी. ॥१३॥

देशना सुणी अभिराम, रुक्मिणी राणी नाम ।
आछे० सुधो संजम आदरे जी. ॥१४॥

थिरकर मन वचकाय, मुक्ति पुरी में जाय ।
आछे० राजविजय रंगे भणे जी. ॥१५॥

---

(६१) ★ बाहुबलि की सज्झाय ★

※ समय सुन्दरजी गणि कृत ※

राजतणा अति लोभिया, भरत बाहुबल झूंझे रे ।
मुठी उपाडी मारवा, बाहुबल प्रति बूझे रे वीरा म्हारा
गज थकी उतरो, गज चढ़ियाँ केवल न होसी रे बंधव
म्हारा गजथकी उतरो. ॥१॥

लोच करी चारित्र लियो, वली आव्यो अभिमानो रे ।
लघु बंधव वांदु नहीं, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे वीरा. ॥२॥

वरष दिवस काउसग्ग रह्या, वेलडियां वींटाणा रे ।
पंखी माला मांडियां, शीत ताप सूकाणा रे वीरा म्हारा. ॥३॥

वनमाहीं ऊंचे स्वरे, ब्राह्मी सुन्दरी इम भाखे रे ।
ऋषभ जिनेश्वर मोकली, बाहुबलजी नी पासेरे वीरा म्हारा. ॥४॥

साध्वी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्र मझारो रे ।
हयगय रथ में परिहर्या, पिणनव मुक्यो अहेकारो रे
वीरा म्हारा. ॥५॥

वैरागे मन वालियो, मुक्यो निज अभिमानो रे ।
पांव उपाड्यो वांदवा, उपनो केवल ज्ञानो रे वीरा म्हारा. ॥६॥

पहुँता केवली पर्षदा, बाहुबल ऋषि राया रे ।
अजर अमर पदवी लही, समय सुन्दर वन्दे पाया रे
वीरा म्हारा गजथकी उतरो. ॥७॥

इति

———

(६२) ★ श्री भरत बाहुबली की सज्झाय ★

* विमल कीर्तिजी कृत *

बाहुबली चारित्त लियोरे, साचो धरि वैराग ।
भरतेश्वर इम विनवेरे, वार वार पाय लाग–
हर्षभर मुझ शुं बोल ज्योरे, थाने बाबाजीरी आण,
थाने ऋषभ देवजीरी आण, थेतो मकरो खेंचाताण ।
थे तो म्हारा जीवन प्राण, हर्षभर मुझ शुं बोल ज्योरे. ॥१॥

हूँ तो भाई थाहरो रे, जो मैं कीधो दोष ।
तो पिण खमजो भाईड़ारे, गिरुआ नकरे रोस हर्षभर. ॥२॥

आवो बांह देई मिलांरे, जोवो आंख उघाड़ ।
बोलो मीठा बोलडारे, पूरो मननो लाड़ हर्षभर. ॥३॥

खीलो नांखूं तोडने रे, जिमकूल जाये वेढ ।
नायो आयुध शालमां रे, ज्युं ब्राह्मण घर ढेढ़ हर्षभर. ॥४॥

भाभीना ओलंभडा रे, किम संभलाये कान ।
जाता पांव वहे नहीं रे, तुमने सूकी रान हर्षभर. ॥५॥

तूं जीत्यो हुं हारियो रे, देव भरे छे साख ।
तुझ सरीखा जगको नहींरे, मुझ सरीखा छे लाख हर्षभर. ॥६॥

माथे सूरज आवीयोरे, पसीनो सारो गात ।
वेसो भोजन जीमिये रे, खारक दाख निवात हर्षभर. ॥७॥

तूं मगारे जीवन आतमारे, तूं हिज म्हारे बांह ।
दिशा सूनी भाई विना रे, आवोने घर मांय हर्षभर. ॥८॥

निनाणु एकण मतेरे, मुझने लोभी जाँण ।
ते मुझने सहुँ परिहर्या रे, ज्यूं वर्षाले छाण हर्षभर. ॥९॥

बोल घणाई बोलिया रे, भरतेश्वर महाराय ।
हाथीना दांत जे नीकल्यारे, ते पाछा नवि जाय हर्षभर. ॥१०॥

अभिमानी शिर सेहरो रे, बाहुबल ऋषिराय ।
सीधा कर्म खपायने रे, विमल कीर्ति गुण गाय हर्षभर. ॥११॥

---

(६३) ❀ सती चेलणा राणी की सज्झाय ❀

❊ समय सुन्दर गणि कृत ❊

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निर्ग्रंथ ।
राते वन मांहि काउसग्ग रह्योजी, साधतो मुक्तिनो पंथ वीर. ॥१॥

वीर वखाणी राणी चेलणाजी, सतीय शिरोमणि जाण ।
चेडा राजानी साते सुताजी, श्रेणिक शीयल प्रमाण वीर. ॥२॥

शीत ठंठार सबलो पड़ेजी, चेलणा प्रीतम साथ ।
चारित्रियो चितमां वस्योजी, सोवडि वाहिर रह्यो हाथ वीर. ॥३॥

झबके जागी कहे चेलणाजी, किम करतो हुँशे तेह ।
कुसती ए मन मांहि कुण वस्योजी, श्रेणिक पड्यो रे संदेह
वीर. ॥४॥

अन्तेउर परो जालजो जी, श्रेणिक दियोरे आदेश ।
भगवंत सांसो भांजियो जी, चमकियो चित्त नरेश वीर. ॥५॥

वीर वांदी वलतां थकांजी, पेसतां नगर मझार ।
धुँवानो धोर देखी कहेजी, जा जा रे अभयकुमार वीर. ॥६॥

तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार ।
समय सुन्दर कहे चेलणा जी, पामियों भवतणो पार वीर. ॥७॥

इति

(६४) ★ श्री सती सुनन्दा की सज्झाय ★

※ ज्ञान विमल कृत ※

(तर्ज—रे जीव माम न कीजिये)

वेनातट नयरे वसे, व्यवहारी वडमान रे ।
शेठ धन्ना वह नन्दनी, नन्दा गुण मणि धामरे
समकित शील भूषण धरो. ॥१॥

जिम लहो अविचल लीलरे, सहजे मिले शिव सुन्दरी ।
करिये कटाक्ष कलोल रे, समकित शील भूषण धरो. ॥२॥

प्रसेन जित् नरपति तणो, नन्दन श्रेणिक नाम रे ।
कुमर पणे तिहां आवियो, ते परणी भले मामरे समकित. ॥३॥

पंच विषय सुख भोगवे, श्रेणिक शुं ते नार रे ।
अंगज तास सोहामणो, नामे अभयकुमार रे समकित. ॥४॥

अनुक्रमे श्रेणिक नृप थया, राजगृही पुरी केरा रे ।
अभयकुमार आवी मल्या, ते सम्बन्ध घणेरा रे समकित. ॥५॥

चउविह बुद्धि तणा धणी, राज्य धुरंधरी जाणी रे ।
पण तेणे राज्य न संग्रह्यो, निसुणी वीरनी वाणी रे सम० ॥६॥

बुद्धिवले आज्ञाग्रही, चेलणाने अन्नदात रे ।
कहे श्रेणिक जा यहां थकी, एहनी छे वणी वातरे सम० ॥७॥

नन्दा माता साथ शुं, लीधो संयम भार रे ।
विजय विमाने उपन्या, करशे एक अवतार रे समकित. ॥८॥

श्रेणिक कूणिकने थया, वैरतणा अनुबन्ध रे ।
ते सवि अभय संजम पछी, ते सवि कर्म संबन्ध रे सम० ॥९॥

ज्ञान विमल प्रभु वीरजी, आणा धरे जे शीश रे ।
ते नित्य नित्य लीला लहे, जागती जास जगीशरे
समकित शील भूषण धरो. ॥१०॥

---

(६५) ★ श्री गोतम पृच्छा सज्झाय ★

(तर्ज—भेखरे उतारो राज भरतरी.)

श्री गोतम स्वामी पृच्छा करे, कहोने स्वामी वर्द्धमानजी ।
किण कर्मे निरधन निरवंशी, किणे कर्मे निफल जावजी
कहोने स्वामी वर्द्धमानजी ॥१॥

उ० परधन भोगने पर दमें, तेणे कर्म निर्धन होय ।
हो वच्छ ? गोयमा सांभलो. ॥२॥

थापण मोसोरे जे करे, तेणे कर्मे निरवंशी होय ।
हो वच्छ गोयमा सांभलो. ॥३॥

घात घाले गर्भावासनी, तेणे कर्मे निष्फल होय हो. ॥४॥

प्र० केणे कर्मे वेश्याने विधवा, किणे कर्मे नपुंसक होय ।
कहोने स्वामी वद्धमान जी. ॥५॥

उ० दुगंच्छा करे जिन धर्मनी, तेणे कर्मे वेश्याज होय हो. ।
शीयल खंडी ने भोग भोगव्या, तेणे कर्मे विधवा होय हो.
वेश्यानो संगज जे करे, तेणे कर्मे नपुंसक होय हो. ॥६॥

प्र० केणे कर्मे गर्भथी गली जावे, केणे कर्मे पिठी भर्याजी
कहोने. ॥७॥

उ० वाड़ी वेडावे कुण मोगरा, तेणे कर्मे गर्भथी जाय हो. ।
फूल विंधावी कर्म बांधिया, तेणे कर्मे पिठी भर्या जाय
हो. ॥८॥

प्र० केणे कर्मे टूंटाने पांगला, केणे कर्मे जाति अन्ध होय. ।
कहोने स्वामी वद्धमानजी. ॥९॥

उ० जे जीव करे रे चौरंगमां, तेणे कर्मे पांगला होय हो. ।
आंखों काढेरे पर जीवनी, तेणे कर्मे जाति अंध होय
हो. ॥१०॥

प्र० केणे कर्मे शोकज उपजे, केणे कर्मे कलंक चढंत–
कहोने. ॥११॥

उ० वेरोने वंचोरे जे करे, तेणे कर्मे शोकय उपजंत हो. ।
साख भरिने कर्म बांधियां, तेणे कर्मे कलंक चढत हो–
वच्छ. ॥१२॥

प्र० केणे कर्मे विषधर उपजे, केणे कर्मे जशहीन होय
कहोने. ॥१३॥

उ० रीसभर्या मरेरे अण बोलडे, तेणे कर्मे विषधर होय.
जे जीव रागरे व्यापीयो, तेणे कर्मे जशहीण होय हो–
वच्छ. ॥१४॥

प्र० केणे कर्मे जीव निगोदमां, केणे कर्मे तिर्यंचमां जाय
कहोने. ॥१५॥

उ० जे जीव मोहेरे व्यापीयो, तेणे कर्मे निगोदमां जाय हो–
वच्छ. ॥१६॥

जे जीव मायामां व्यापीयो, तेणे कर्मे तिर्यंचमां जाय हो
वच्छ. ॥१७॥

प्र० केणे कर्मे जीव एकेन्दरी, केणे कर्मे पंच इंद्रिय होय
कहोने. ॥१८॥

उ० पंच इन्द्रिवश नवि करी, तेणे कर्मे पंचइन्द्रि होय हो-
वच्छ. ॥१९॥

प्र० केणे कर्मे जीवडो वहु भमें, केणे कर्मो थोडोरे संसार-
कहोने. ॥२०॥

उ. जे जीव मोह मच्छर करे, तेणे कर्मो संसार फरन्त
हो. ॥२१॥

जे जीव विनय भक्ति करे, तेणे कर्मो संसार तरन्त हो-
वच्छ. ॥२२॥

प्र. केणे कर्मे जीवडो नीच कुले, किण कर्मो ऊंचकुल होय
कहोने. ॥२३॥

उ. दान दीधांरे असूझता, तेणे कर्मे नीचे कुल होय-
हो. ॥२४॥

दान दीधांरे सुपात्र में, तेणे कर्मे ऊंच कुले होय हो-
वच्छ. ॥२५॥

प्र. केणे कर्मे जीवडो नरकमां, केणे कर्मे नरक मोझार हो-
वच्छ. ॥२६॥

उ. जे जीव लोभे रे व्यापीयो, तेणे कर्मे नरक मोझार हो

वच्छ. ॥२७॥

दान शीयल तप भावना, तेणे कर्मे स्वर्ग विमान हो

वच्छ. ॥२८॥

प्र. गोतम केवल मांगीयुं, द्योने स्वामी वर्द्धमान हो-

वच्छ. ॥२९॥

उ. इण मोहे केवल न पामिये, मोहथी न होय निरवाण हो।

गोतम केवल पामिया, महावीर स्वामी पोंत्या निर्वाण

हो वच्छ गोयम सांभलो. ॥३०॥

इति

---

(९९) ★ श्री मुनि खंधककुमार की सज्झाय ★

ऐवंति नयरी सोहामणी रे, राजा केतु रे राय।

वन गया मुनिने वांदवाजी रे, मन वसियो वैराग्य;

मुनिश्वर जोवो जोवो भगवंतना कहेण मुनि. ॥१॥

वारे आवी कहे मायनेजी, हूं लेशुं संयम भार।
कुंवर महारो नानकडोजी रे, ए अणवटतुं थाय मुनि. ॥२॥

बाघसिंह वनमां वसेजी रे, खंधककुमार केम जाय।
पांचसो सुभट आगे कर्याजी रे, मेल्या कुमारनी सहाय मु. ॥३॥

सावत्थी नयरीमां आवीयाजी रे, श्रावक हरख्या अपार।
आनयरी बनेवी तणीजी रे, हैड़ा हरख्या अपार मुनि. ॥४॥

जन सघला जीमवा गयाजी रे, यतिने मेल्यो रे एक।
आहार लेवा जब उठीयाजी रे, सावत्थी नयरीमां जाय मु. ॥५॥

रायने राणी नीरखताजी, नयणे छुट्या रे नीर।
आव्यो ते माहरो बंधवोजी रे, क्रोध चढ्यो अधीर मुनि. ॥६॥

रायते जनने बोला वीयारे, यतिने दीयो आहार।
जन जाई ऋषिने मिल्याजी रे, वचने झाल्या रे हाथ मुनि. ॥७॥

मसाण भूमि लई गयाजी रे, कांप्या नहीं रे लगार।
त्वचा उतारी जीवती रे, हण्यो नानड़ो बाल मुनि. ॥८॥

जन जीमीने आवीजी रे, शोधवा लागारे वच्छ।
ते नयने देखे नहींजीरे, हैडा फाटी रे जाय मुनि. ॥९॥

जन जाई राजाने मल्याजी रे, राजा पूछे रे वात।
कई नयरीना किहां वसोजी रे, रहेता केनी रे पास मुनि. ॥१०॥

अयवंती नयरी सोहामणीजी रे, राजा केतू रे राय ।
खंधककुमारे दीक्षाग्रहीजी रे, रहेतां तेहनी पास मुनि. ॥११॥

विना विचारे मैं कयुंजी रे, हणतां नकर्यो विचार ।
हा ! हा ! अण घटतुं मैं कयुंजी रे, हण्यो राणीनो रे वीर. ॥१२॥

राणी जे संयम आदर्योजी रे, राजा जंप न थाय ।
घरे जावुं गमतुं नथीजी रे, लीधो संजम भार मुनि. ॥१३॥

रायराणी संजम लीयोजी रे, उतारवा मोहनी जाल ।
तप करता अति आकरोजी रे, करता उग्र विहार मुनि. ॥१४॥

पांचसो सुभट भेला थइजी मलीने करे रे विचार ।
कर्म खपावी हुआ केवलीजी रे, पहोंच्या मुक्ति मोझार मु. ॥१५॥

हीर विजयनी विनतिजी रे, लब्धि विजयनी जोड ।
आसज्झाय भणतां थकांजी रे, सौने उपजे कोड़ रे मुनि. ॥१६॥

---

(६७) ★ श्री मनक मुनिनी सज्झाय ★

नमो नमो मनक महामुनि, बाल पणे व्रत लीधो रे ।
प्रेम पितासुं रे परखियो, मायसुं मोह न कीधो रे नमो नमो-
मनक महामुनि. ॥१॥

श्रुत चौदह पूरब धणी, सिज्जंभव जस तात रे ।
चौथो पटधर श्री वीरनो, महियलमां विख्यात रे नमो. ॥२॥

श्री सिज्जंभव गणधरे, उदेशी निज पुत्रो रे ।
सकल सिद्धांत थी उद्धरी, दशवैकालिक सूत्रो रे नमो. ॥३॥

मास छये पूरब भण्यो, दश अध्ययन रसालो रे ।
आलस अंगथी परिहरी, धन धन ए मुनि बालो रे नमो. ॥४॥

चारित्र पट् मास बालके, पाली पुण्य पवित्रो रे ।
स्वर्गे समाधे सिधावियो, करी जग जनने मित्रो रे नमो, ॥५॥

पुत्र मरण पाम्या पछी, सिज्जंभव गणधारो रे ।
बहु श्रुत दुःख मनमां धरे, तेम नयणे जलधारो रे नमो. ॥६॥

प्रभु तपे बहु प्रति बोधिया, सम समवेगी साधु रे ।
अमें आंसू नवि दीठड़ा, तुम नयणे निराबाध रे नमो. ॥७॥

अमने ए मुनि मनकजो, सुत संबन्धी भलीया रे ।
विणसे अर्थ क्रियाँ थकां, पण तेने नवि फलिया रे नमो. ॥८॥

शु कहीये रे संसारीने, ए अहेरी स्थिति दीसे रे ।
तन दीठे मन उल्लसे, जोतां हैडलूं हींसे रे नमो. ॥६॥

लब्धि कहे भवियण तुमे, मकरो मोह विकारो रे ।
तो तुमे मनक तणी परे, पामो सदगति सारो रे नमो. ॥१०॥

---

(६८) ★ श्री कलावती की सज्झाय ★

वहेन कलावती तमने विनवुं, स्वामिनी सेवा धर जो मन ।
पति परमेश्वर आपणो छे वेनी, जाळ्या ते करजो जतन हो
वहेन करम करे ते सहेवुं. ॥१॥

सत्य पणाथी सवसुं रे वोली, अवसुं रे समज्या छे स्वामी ।
वांक शोभानथी कशो स्वामीनो, लख्या लेख ललाट हो
वहेन. ॥२॥

परणीने आवी त्यांरथी, जरी लाडयां नथी रही स्वामी ।
मान आप्युं छे अमने छणुं जे, शोभा नथी रही खायी हो
वहेन. ॥३॥

हुं जावुं छु वन विषेहने, झा झा प्रणाम छे तमने ।
सर्व वेनोनी क्षमा मांगु छुं, मारे जावुं छे वन मोझार हो
वहेन. ॥४॥

प्रभु प्रतापे संतान दीधुं, कर्मे कीधुं केवुं ।
भर जंगलमां जन्मज देशे हे प्रभु सहाय तमारी लेवूं बहेन. ॥५॥

कालो रथने कावो छे माथो, कालाबल्द शणवस्त्र ।
गलीनो चांलो कपाले करीयो, त्यांथी ते चाल्या जाय हो-
बहेन. ॥६॥

चालतां चालतां अटवी रे आवी, भर जंगल धाडे वन ।
त्यांथी सतीने हेटे उतार्या, आखें आंसूडानी धार हो
बहेन. ॥७॥

सुभटे संभलाव्युं वहेन कलावती, राजानो हुकम आवो ।
कहेतां अमारी काया रे कंपे, बेरखां कापीने आवो हो बहेन. ॥८॥

रोता रोता सतीजी बोल्या, बेरखां कापीने ल्योने ।
बेरखा कापीने कहे जो स्वामीने, पाली छे आज्ञा तमारी हो
बहेन. ॥९॥

बेरखां काप्या त्यारथी, ते सतीने दुःखज थाय ।
अफसोस करतां मूर्छा रे आवी, सारवार नथी कांई पासे हो
बहेन. ॥१०॥

सवानव मासे पुत्र जन्मीयो, चन्द्र सूरज बेउ थंभे ।
भर जंगलमां जन्मज दीधा रे, प्रभु शरण तमारू हो बहेन. ॥११॥

आकाशमां रे देव सिंहासन, चलाय मानज थाय ।
देवे विचार्युं सती छे दुःखी, देव देननी छे सहाय हो
वहेन ॥१२॥

देव आवीने नमन करे छे, कलावती दुःखी जोई ।
बालक लीधुं हा हाथमां रे, सतीने तेडीने जाय रे हो
वहेन ॥१३॥

साव सोनानो महेल बनाव्यो, फरतां बैठाई देवी ।
सती आज्ञा विना कोईना आवे, ऐवी शियलनो प्रभाव रे
वहेन ॥१४॥

सार सोनानी मांचीये बेसी, ने बालक घवरावे रे ।
बालक धवरावता अफसोस करतां, स्वामी हशे सुखीके दुःखी हो ।
वहेन ॥१५॥

निमित्तीने वेशे देव पधार्या, आव्या राज द्वार ।
राजमां आवी प्रणाम करीने, बैठा ही राजन पास हो वहेन ॥१६।

निमित्ती बोल्या अरे राजाजी, किम उदास देखाओ ।
राजन बोल्या अरे निमित्तीजी, कलावती नीच बुद्धि जाणी हो
वहेन ॥१७॥

वेरखा पहेरतां त्यारे में पूछ्यु, कहो राणीजी आयाक्यां थी ।
तेणे अमोने उत्तर आप्यो, जे मारे मन तेणे मोकल्या हो
वहेन. ॥१८॥

माराथी बलीयो कोण बसे छे, एवु जाणी काढ़ी ।
वनवास बेरखां कापीने, भंडारे मूक्यां ते तमने देखाडु हो
वहेन. ॥१९॥

वेरखा जोईने निमित्तीजी बोल्या, भुंडी थई राजन ।
जय विजय बंधक तेना, सीमंत अवसरे मोकल्या हो
वहेन. ॥२०॥

नाम छापेलु जुओराजा जी, वगर विचार्यु कर्यु राय ।
एटल सांभलता मूर्छा रे आवी, सेवको छे तेनी पास हो
वहेन. ॥२१॥

मूर्छा उतरंता राजजी बोल्या, शुं करवुं निमीत्ती याजी ।
आज भर जंगलमां शुं रे, थयुं हशे वगर विचार्यु कर्यु काम ।
वहेन. ॥२२॥

जावो सेवको जोवा सतीनी, शोधमां चारे तरफ फरीआवो ।
जे कोई सतीने शोधीने वारे, तेने मोए मांग्यु अनुदान हो
वहेन. ॥२३॥

निमित्तीने राजन तिहां थी, चाल्या आव्यानी वन मोझार ।
चालतां चालतां अटवी रे आवी, देवताई महेल जोया हो
वहेन. ॥२४॥

सामे कलावती गोखमां बैठा खोलामां पुत्र दोनी पास ।
छेटे थी आवतां राजन जोया, हरखनो नथी रह्योपार हो
वहेन. ॥२५॥

पासे आवीने दर्शन कर्यां, हरखना आंसूडानी धार ।
पुत्रने दीधो स्वामीना हाथमां, हरखनो नहीं रह्योपार हो
वहेन. ॥२६॥

तेणे समे वनमां मुनि पधार्या, पूछे वेरखडानी वात ।
कहोने मुनि में तो शा पाय, कर्या हशे ते कर्म उदय
वहेन. ॥२७॥

तुं रे हती बाई रायनी, कुंवरी अेहतो सूडानो जीव ।
ते ए सूडानी पांखो छेदी ते, कर्म उदय आव्युं आज हो
वहेन. ॥२८॥

तमे तमारी वस्तु संभालो अमे लेशुं संयम भार ।
संयम लीधो श्री महावीरनी पासे, पहोत्या मुक्ति मोझार हो
वहेन. ॥२९॥

सुमति विजय कहे शीयल प्रभावथी दुःखीनो सुखीथाय ।
सत्य जनोने नमन करूं छुं, तेथी उतरशे भवपार हो
वहेन. ॥३०॥

———

(६९) ★ श्री कलावतीनी सज्झाय ★

नयरी कौशांबीनो राजा कहिये, नामे जयसिंग राय ।
बेन भणी रे, जेणे बेरखडा मोकलीया कर्मे भाईना
कहेवाय रे. ॥१॥

कलावती सती शिरोमणी नार, पहेलीने रमणीये राज पधारिया ।
पूछे छे बेर खड़ानी वात कहोने स्वामी, तमें बेरखड़ा घड़ाविया
सरखी न राखी नार रे कर्म. ॥२॥

बीजीने रयणी राजा महले पधारिया, पूछे बेरखड़ानी बात ।
कहोने कोणे तमने बेरखड़ा घडाव्या, तुं नथी शीयलवती नाररे
कर्मे. ॥३॥

घणु जीवो जेणे वेरखड़ा मोकलीया, अवसर आवियो एह ।
अवसर जाणी जेणे वेरखड़ा मोकलीया, तेहमें पहेर्या हूँते एह रे
कर्मे. ॥४॥

मारा मनमां एना मनमां, तेणे मोकलीया एह ।
रात दिवस मारा हैडै न विसरे, दीठे हरखन मायरे कर्मे. ॥५॥

एणे अवसरे राजा रोष भराणो, तेडाव्या सुभट वेचार ।
सुकी नदीमां छेदन करावी, करलेई वेहलो रे आवरे कर्मे. ॥६॥

वेरखड़ा जोई राजा मनमां विमासे, में कीधो अपराध ।
विण अपराधे मै तो छेदन कराव्यां, ते में कीधो अन्याय रे
कर्मे. ॥७॥

इण अवसर राजा धान न खाय, तेडाव्या राजा वेचार ।
रात दिवस राजा मनमें विमासे, जो आवे शी लेव करती नार रे
कर्मे. ॥८॥

सूकूं सरोवर लेहेरे जाय, वृक्ष नव पल्लव थाय ।
करनवा आवे ने वेटो घवरावे, शियल तणे सुपसाय रे
कर्मे. ॥९॥

इण अवसर मारा वीरजी पधार्या, पूछे पर भवनी वात ।
शा शा अपराध में कीधा प्रभुजी, तेमने कहोरे आज कर्मे. ॥१०॥

तुं हती बाई राजानी कुंवरी, अहतो सुडानी ते जात ।
सेजे सेजे ते तो साथ खज्यो, भांगी सुडानी पांखरे कर्मे. ॥११॥

तमे तुमारी वस्तु संभालो, मोर संजम केरोभान ।
दीक्षा लेशुं महावीर जीनी पासे, पहोंच शुं मुक्ति मोझार
कर्मे. ॥१२॥

पुत्र हतो ते रायने सौंपीयो, पोते लीधो संजम भार ।
हीर विजय गुरु इणि परे बोले, आवागमन निवार कर्मे. ॥१३॥

---

(७०) ★ श्री रेवती नी सज्झाय ★

सोनाने सिंहासन बैठा रेवती, बैठा बैठा मन्दिर मोझार रे ।
गजपति दीठा मुनिने आंवता, सुन्दर सिंह अणगार रे
मन्दिर पधारो मेरे पूज्यजी. ॥१॥

आज सुरतरु फल्यो आंगणे, मोतीडे वुठा मेहरे ।
सिंह अणगार पधारता, प्रगट्यो धर्म सनेह रे मं. ॥२॥

गंगाजलमां रे जिम कमलडे, मधुकर केली करंतरे ।
तेम मुजमन मधुकर परे, उलट्यो राग अत्यन्त रे मं. ॥३॥

पूज्यजी ने वांदी निहालतां, तेम तेम रागनी हेल रे ।
शान्त स्वभावी सोहामणा, सूरति मोहन वेल रे मं. ॥४॥

आदर मानदीधा घणा, पूछे कांई सिंह अणगार रे ।
कहोने पूज्य केम पधारिया, आदेश द्यो शुं विचार रे मं. ॥५॥

मुजगुरु ए तुम घर मोकल्यो, भानुनी पाक वहोरायरे ।
रेवती कहे पूज्य केम लह्युं, केवल ज्ञान पसाय रे मं. ॥६॥

शुभ परिणामें करी आप्यो, बीजोरो पाक उधार रे ।
मणी माणक मोती तणी, वृष्टि हुई तिणवार रे मं. ॥७॥

देव आयुष्य तिहाँ वाधीयुं, रेवतीये तेणी वार रे ।
वीर प्रभु सुख सम्पदा, सफल कर्यो अवतार रे मं. ॥८॥

पुरुष भयारे संसारमां, तेम वली नारी संसार रे ।
राजिमती सीता कुन्ती, द्रोपदी, मृगावती चन्दन वाला रे
मं. ॥९॥

इत्यादिये जैन धर्म आदर्यो, धन धन ते नर नार रे ।
वीर किंकर एम उचरे, दानथी जय जय कार रे मं. ॥१०॥

———

(७१) ❀ श्री अंजना सतीनी सज्झाय ❀

अंजना बात करे छे मारी सखी, मने मेली गया मारा पति।
अंतरंग महेलमां मेली रोती, साहेली मने कर्मे मल्यो बनवास
साहेली मारा पुण्य जोग तुम पास. ॥१॥

लश्करे चढताने शुकन दीधा,
ते तो नाथे म्हारा नहीं लीधा।
ढींका पाटु पोते मने दीधा साहेली. ॥२॥

सखी चकलानो सुणी पुकार,
राते आव्या पवनजी दरबार।
बारे वरसे लीधी छे सम्भाल साहेली. ॥३॥

सखी कलंक चढाव्यु मारे माथे,
म्हारी सासु ए राखी नहीं पासे।
म्हारा ससरे में करे बनवासे साहेली. ॥४॥

पांचसो सखीयो दीधी छे म्हारा वापे,
तेमा एक नथी म्हारा पासे।
एक वसंत बाला म्हारी साथे साहेली. ॥५॥

कालो चाल्यो ने राखडी काली,

रथ मेल्यो छे वन मोझारी ।

हवे सहाय करो देवमारी साहेली. ॥६॥

म्हारी माता ए लीधी नहीं सार,

म्हारा पिता ए काढ़ी घर बाहर ।

सखी न मेल्यो पाणीनो पानार साहेली. ॥७॥

मने वात न पूछी मारा वीरे,

मारा मनमा न रहती धीर ।

मारे अंगे फाटी गया चीर साहेली. ॥८॥

मने दिशा लागे छे काली,

मारी छाती जाए छे फाटी ।

अंधारी अटवीमां कर्मे नाखी साहेली. ॥९॥

मारू जमणु फरके छे अंग,

न थी बैठी हुं कोईनी संग ।

आते शो पड्यो रंगमां भंग साहेली. ॥१०॥

सखी धावता छोडाव्या हशे बाल,

नहीं तरकापी हशे कुणी डाल ।

तेना कर्मे पामी खोटो आल साहेली. ॥११॥

वनमां भमता मुनि दीठा आज,
पूर्व भवनी पूछी छे बात ।
जीवे शा कीधा छे पाप साहेली. ॥१२॥

बेन हँसता रे जोहरण तमे लीधा,
मुनिराज ने बहु दुःख दीधा ।
तेना कर्मे तमे वनवास लीधा साहेली. ॥१३॥

पूर्वे हसे शोकनो बाल,
तेने देखी उछलती मनमां झाल ।
तेणे कर्मे जोया वनमां झाड साहेली. ॥१४॥

सखी वनमां जनम्यो छे बाल,
क्यारे उतरशे अमारो आल ।
ओच्छव करशुं माने मोशाल साहेली. ॥१५॥

वनमां भमता मुनि दीठा आज,
अमने धर्म बतावो मुनिराज ।
क्यारे सरसे अमारा काज साहेली. ॥१६॥

वनमां मलशे मामा मामी आज,
पछी करशे पवनजी साज ।
त्यारे सरशे तमारा काज साहेली. ॥१७॥

मुनिराजनी सीख छे सारी,

सहु उरमां लेजो अवधारी ।

माणक विजयनी जाऊं बलिहारी

साहेली मने कर्म मल्यो वनवास. ॥१८॥

---

(७२) ★ श्री कमलावती की सज्झाय ★

(तर्ज—सुनोने लागो हो वचन दाजेणा)

महलो ते बैठी हो राणी कमलावती, उड़े रे झीणेरी खेह ।

सांभल हो दासी, आजरे नगरीमॉ, खेपत अति भलो

जोईरे तमासो इषुकार नगरीनो, मनमाँ जे उपन्यो संदेह

सांभल हो दासी आजरे नगरीमाँ, खेपत अति भलो. ॥१॥

कांतो दासी प्रधाननों दण्ड लियो, कांई लुट्या राजा ए गाम,

सॉभल हो दासी ।

कांई कोईना धनमां गाडा निसर्या, कांई पाडी राजा ए माम

सांभलो दासी आजरे. ॥२॥

नथी रे बाईजी प्रधानने दण्ड लियो, नथी लुट्या राजा ए गाम
सांभल हो बाईजी, आजरे नथी कोईना धनना गाडा निसर्या,
नथी पाडी राजा ए गाम, सॉभलो हो बाईजी हुकम करो तो
गाडा यहीं धरूं. ॥३॥

भृगु पुरोहित जसा भारजा, वली तेना दोय कुमार साँभल०
साधु पासे जाई संयम आदरे, तेनो धन लावे छे राय सांभल हो
हुकम करो गाडा यहीं धरूं. ॥४॥

वयण सुणीने माथो धुणियों, राजाना मोटा छे भाग सांभल
हो दासी,
तेनो धन लेवो जुगतों नथी, ब्राह्मण पाम्यो वैराग सांभलो दासी
ब्राह्मणनी छडी ऋद्धिमत आदरो ॥५॥

महेलों थी उत्तर्या राणी कमलावती, आव्या कांई हेठ हजुर
सांभल हो राजा ।
वचन कहे छे घणा आकरा, जिम कोपे चड्यो बोले सूर सांभल,
हो राजा ब्राह्मणनी छंडी ऋद्धि. ॥६॥

वम्याते आहारनी इच्छा कुण करे, करे वली श्वानने काग सांभलो
हो राजा; पहलाते दान दिधुं हाथ से, ते पाछो लेता नहीं आवे-
लाज सांभल हो राजा. ॥७॥

कांई तो राणी तने झोलो लागियो, कां कोई कीधी विकराल सांभल हो राणी; कां कोई भूत व्यन्तरे छली, कां कोई कीधी मतवाल-
सांभल हो राणी राजाने कठण वयण न कीजिये. ॥८॥

नथीरे राजाजी झोलो लागियो, नथी कोई कीधी विकराल सांभल नथी कोई भूत व्यन्तरे छली, नथी कोई कीधी मतवाल सांभल,
हो राजा ब्राह्मणनी छंडी. ॥९॥

जगत सगलानों धन भेलो करी, लावे तोरा घर माय सांभलः तो पण तृष्णा मिटे नहीं, तारे एक धर्म सहाय सांभलो राज०
ब्राह्मणनी छंडी. ॥१०॥

अग्नि थकी वन परजले, पशु बेल तेनी माह्य सांभलो० ।
दुष्ट पंखी इम चिंतवे, आहार करूं चितलाय सांभल हो राजा
ब्राह्मण० ॥११॥

हमरे अज्ञानी आपशुं, राग द्वेष चित्त लाय सांभल हो० ।
काम भोगने वश थकी, धन लेवाने लपटाय सांभल हो०
ब्राह्मणनी छंडी. ॥१२॥

एकरे दिवस एवो आवसे, परभव संगुं नहीं कोय सांभल० ।
परभव जातां इण जीवने, धर्म सहायज होय सांभल हो०
राज ब्राह्मणनी छंडी. ॥१३॥

तनधन जोबन थिर नहीं, चंचल बिजली समान सांभल० ।
क्षण क्षण माहीं आऊखो घटे, मूरख करे रे गुमान सांभलो हो.
राजा ब्राह्मणनी छंडी. ॥१४॥

खगमुख मांस लेई नीसरे, इर्षा करे खगताम सांभलो० ।
तेम परधन ऋद्धि देखीने, मूरख करे रे गुमान सांभल हो
राजा ब्रा० नी छंडी. ॥१५॥

गरुड देखी जिम सर्प हो, भयें संकोचे देह सांभल० ।
तेम अनित्य धन जाणीने, लालच छोड़े तेह सांभल हो०
राजा ब्रा० नी छंडी. ॥१६॥

एकरे दिवस एवो आवसे, काल चपेटा देत सांभल० ।
आ संसार आसार छे, चेत सके तो चेत सांभल हो
राजा. ॥१७॥

एवा वचन समजावंता, राणी वैराग्यमां आय सांभल० ।
संयम लेवाने उतावली, आकुल व्याकुल थाय सांभल हो
हो राजा ब्रा० नी छंडी. ॥१८॥

हाथी जेम बंधन तजे, तेम तजूं कुटुम्ब परिवार सांभल ।
जो अनुमती दियो, राजवी, ढीलन क्षण रे लगार सांभल
हो राजा ब्रा० नी छंडी. ॥१९॥

रत्न जडित राय तारो पिंजरो, मांहे सुवडो मने जाण सांभल. ।
हूँ रे बैठी त्हारा राज्यमां, रहतां न पाछुं कल्याण सांभल हो
राजा आज्ञा आपो तो संजम आदरूं. ॥२०॥

मेलव्युं धन रहेशे नहीं, थोडुं पण आवे नहीं साथ सांभल. ।
आगल जासो तो पाधरूं, संबल लेजोजी साथ सांभल
आज्ञा आपो तो संयम आदरूं. ॥२१॥

राणीना वचन सुणी करी, बुझ्या तव इषुकार सांभल० ।
एक चित्ते तन धन जोबन जाण्या कारमां जाण्यो संसार असार
सांभली एक चित्ते छय जीवे ते संयम आदर्यों. ॥२२॥

भ्रगु पुरोहित जसा भारजा, वली तेना दोय कुमार सांभली० ।
राजा सहित राणी कमलावती, कांई लीधो संयम भार सांभली
एक चित्ते छय जीवते. ॥२३॥

तपजप करी संयम पालता, कांई करता उग्र विहार सांभली. ।
कर्म खपावी केवल पामिया, कांई होता मुगति मोझार.
सांभली एक चित्ते छय जीवे ते संयम आदर्यों. ॥२४॥

इति

———

(७३) ★ नेमिनाथ भगवान नी सज्झाय ★

* इन्द्र सागरजी कृत *

नगरी द्वारिकामां नेमि जिनेश्वर, विचरतां प्रभु आव्या ।
कृष्ण नरेश्वर बधाई सुणीने, जीत नगारा वजडाव्या हो
प्रभुजी नहीं जाऊं नरक गतीमां नहीं जाऊं–
नहीं जाऊं हो प्रभुजी, नहीं जाऊं नरक गतीमां. ॥१॥

सहस्त्र अढारे साधुजी विधिशुं, वांद्या अधिक हरखे ।
पछे नेमी जिनेश्वर केरा, ऊभा मुखडा निरखे हो प्रभुजी
नहीं. ॥२॥

नेमि कहेरे तुम चार निवारी, तीन तणो दुःख गहेरो ।
कृष्ण कहेरे हुँ फरी फरी वंदु, हियड़े हर्ष घणेरो प्रभुजी
नहीं जाऊं. ॥३॥

नेमी कहे तुम टाली न टलसो, मानोते एक वात ।
कृष्ण कहे मारे बाल ब्रह्मचारी, नेमि जिनेश्वर भ्रात हो
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥४॥

पेटे आवीयो ते मणियो मेटे, पुत्र कुपुत्र ज जायो ।
भलो भुंडो पण जादव कुलनो, तुम बांधव कहेवायो हो—
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥५॥

मोहटा राजानी चाकरी करतां, राँक सेवक बहु हरसे ।
सुरतरु सरिखो अपजस थासे, तो लरी केम फरसे हो—
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥६॥

छप्पन क्रोड जादवनो साहिबो, कृष्णज नरकज जासे ।
नेमि जिनेश्वर केश रे बंधव, जग मांहे अपजस थासे हो—
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥७॥

समकित शुद्धनी परीक्षा करीने, बोलिया केवल ज्ञानी ।
नेमि जिनेश्वर दियोरे दिलासो, खरो रुपेयो जाणी-हो
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥८॥

नेमि कहेरे तुम चिंता नकरसो, तुम पदवी हम सरिखी ।
आवती चौवीशमां होशे रे तीर्थंकर हरिपोते मन हरखीहो
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥६॥

जादवकुल उजवाल्यो रे नेमजी, समुद्रविजय कुल दीवो ।
इन्द्र कहेरे सिवादेवीनों नंदन, क्रोड दीवाली जीवो हो
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥१०॥

———

(७४) ★ कामलता की सज्झाय ★

※ साकल चन्दजी कृत ※

शी कहुँ कथनी मारी हो राज शी कहुं कथननी मारी ।
मने कर्म करी महियारी हो राज शी० टेर—

शिवपुर गाममा' माधव द्विजनी, कामलताभिध नारी ।
रूपकला भर योवन भावे, ऊर्वशी रंभा हारी हो राज०
शी कहुं कथननी मारी. ॥१॥

पालणे केशव पुत्र पोढावी, हूं भरवा गई पाणी ।
शिवपुर दुशमन राये घेरी, हुँ पणीयारी लुटाणी ही
राज शी कहुं कथनी. ॥२॥

सुभटो ए निज रायने सोंपी, राय करी पटराणी ।
स्वगना सुखथी पणपति माधव, विसरी नहीं गुण खाणी हो
राज शी कहुं कथनी. ॥३॥

वर्ष पनरनो पुत्र थयो तब, माधव द्विज मुज माटे ।
भमतो योगी सम गोखे थी, दीठो जाता वाटे हो राज
शी कहुं कथनी. ॥४॥

दासी द्वारा द्विजने बोलावी, द्रव्य देइने दुःख काप्यूं ।
चौदस निशी महाकाली मन्दिर, मनशुं वचन में आप्युं हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥५॥

कारमी चुंके चीस पोकारी, महीपतीने में कीधुं ।
एकाकी महाकाली जावा, तुम दुःखे में व्रत लीधुं हो
राज शी कहुं कथनी. ॥६॥

विसरी बाधा कोपे काली, पेटमां पीडथई भारी ।
राय कहे ए वाचा करशुं, ते क्षण चूंक मटी मारी हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥७॥

चौदसने दिन राजा राणी, एकाकी पग पाली ।
महीपती आगलने हुं पाछल, पहोत्यां बिहुं महाकाली हो
राज शी कहुं कथनी. ॥८॥

राजा ए निज खड़ग विश्वासे, मारा करमां आप्युं ।
जब नृप मन्दिर मांही पेठो, तब तस शिर में काट्युं हो
राज शी कहुं कथनी. ॥९॥

रायने मारी पतिने जगाडुं, ढंढोलता नवि जागे ।
नाग डस्यो पति मरण पाम्यो, जब उभय भ्रष्ट थई भागी
हो राज शी कहुं कथनी. ॥१०॥

नाठी वनमां चोरे लूटी, गणिकाने घेरे वेची ।
यार पुरुष थी यारी रमता, कर्मनी वेला में खेंची हो
राज शी कहुं कथनी. ॥११॥

माधव सुत केशव पितु शोधन, भमी वेश्यानी घर आव्या ।
धन देखी जिम दूध मिंजारी, गणिका ने मन भाव्या हो
राज शी कहुं कथनी. ॥१२॥

वेश्याए द्विजने मुझ सोंप्यो, जाणी मैं ललचावी ।
धिक् धिक् पुत्रथी यारी रमता, कर्मे नाच नचावी हो राज शी
कहुं कथनी. ॥१३॥

यारी रमता काल गयो केई, एक दिन कीधी मैं हांसी ।
क्यानाः रहेवा सी क्या जावो, तब तेने अथथी प्रकाशी हो राज
शी कहुँ कथनी. ॥१४॥

दृढ़मन राखी वात सुणीने, गुह्य मैं राखी भारी ।
पुत्रने कह्यु ं तुम देश सिधावो, मैं दुनिया विसारी हो
राज शी कहुं कथनी. ॥१५॥

पुत्र वलावी कह्यु ं गणिकाने, हा हा धिक् तुझ मुझने ।
महा पातकनी शुद्धि माटे, अग्नि शरण हो मुझने राज शी
कहुँ कथनी. ॥१६॥

सरीता कांठे चय सलगावी, अग्नि प्रवेश में कीधो ।
कर्मे नदीना पूरमां तणाणी, अग्नि भोग न लीधो हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥१७॥

जलमाँ तणाणी कांठे आवी, अहीरे जीवती काढी ।
मुझ पापिणीने नदीये न संघरी, अहिरे करी भरवाडी हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥१८॥

ते भरवाडी दही दूध लईने, वेचवा पुरमां पेठी ।
गज छुट्यो कोलाहल सुणीने, पणीहारीने हूं नाठी हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥१९॥

पणीहारीनो फुटयुं बेडुँ, धुसके रोवा लागी ।
दही दुधनी मटकी फुटी, तोय हूँ हसवा लागी हो
राज शी कहुं कथनी. ॥२०॥

हसवानुं कारण तें पुछयुं वीरा, मैं अथथी इति कीधुं ।
केने रोवुं ने केने जोवुं में, दैवे दुःख मने दीधुं हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥२१॥

महीयारीनी दुःखनी कहानी, सुणी मुर्छा थई द्विजने ।
मुर्छावली तव हा हा उच्चरे, द्विज कहे धिक २ मुझने हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥२२॥

माता पुत्र पस्तावो करता, ज्ञानी गुरुने मिलीया ।
गुरुनी दीक्षा शिक्षा पाली, भवना फेरा टलिया हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥२३॥

एक भवोभव बाजी रमता, उलट सुलट पड़े पासा ।
नाना विधि भवोभव शाकलचन्द, खेले कर्म तमासा हो
राज शी कहुँ कथनी मारी. ॥२४॥

इति

———

(७५) ★ पर्युषण की सज्झाय ★

※ माणक विजयजी कृत ※

पर्व पजुसण आविया, आनन्द अंगे न माय रे ।
घर घर उत्सव अति घणा, श्री संघ आवीने जायरे पर्व. ॥१॥

जीव अमारी पलावीये, कीजिये व्रत पच्चखाण रे ।
भाव धरी गुरु वंदीये, सुणीये सूत्र वखाण रे पर्व. ॥२॥

आठ दिवस एम पालीये, आरंभनो परिहारो रे ।
न्हावण धोवण खंडण, लींपण पेसण वारो रे पर्व. ॥३॥

शक्ति होय तो पच्चकखीये, अट्ठाई ओ अति सारो रे ।
परम भक्ति प्रीति लावीये, साधुने चार अहारो रे पर्व. ॥४॥

गाये सोहागण सवि मली, धवल मंगल गीत रे ।
पकवाने करी पोषीये, पारणे साहम्मी मन प्रीतरे पर्व. ॥५॥

सत्तर भेदी पूजा रची, पूजीये श्री जिनराय रे ।
आगल भावना भाविये, पातक मल धोवाय रे पर्व. ॥६॥

लोच करावे रे साधुजी, वेसे बेसणा मांडी रे ।
शिर विलेपन कीजये, आलस अंगथी छांडी रे पर्व. ॥७॥
गजगती चाले चालती, सोहागण नारीते आवे रे ।
कुंकुंम चंदन गहुँली, मोती ए चोक पुरावे रे पर्व. ॥८॥
रूपा मोहरे प्रभावना, करीये तव सुख कारी रे ।
श्री क्षमाविजय कविरायनो, माणेक विजय जयकारी रे पर्व. ॥९॥

इति

---

(७६) ★ ढाल दूसरी सज्झाय ★

पहेले दिन बहु आदर आणी, कल्पसूत्र घर आणो।
कुसुम वस्त्र केसरशुं पूजी, रात्रि जागे लिये लाहोरे
प्राणी कल्पसूत्र आराधो, आराधी शिव सुख साधोरे प्राणी. ॥१॥

प्रह उठीने उपाश्रये आवी, पूजी गुरु नव अंगे।
वाजींत्र बाजतां मंगल गातां, गहुंली दिये मन रंगेरे प्राणी. ॥२॥

मन वच काया ए त्रिकरणे, श्री जिन शासन माहिं।
सुविहित साधु तणे मुख सुणिये, उत्तम सूत्र उमाहीरे प्राणी. ॥३॥

गिरीमांही जेम मेरू वडो गिरी, मंत्र मांहे नवकार।
वृक्षमांहे कल्पवृक्ष अनुपम, शास्त्रमांहे कल्पसार रे प्राणी. ॥४॥

नवमां पूर्वनुं दशा श्रुतस्कन्ध, अध्ययन आठम जेह।
चौद पूर्वधर श्री भद्रबाहु, उद्धयुं श्री कल्प अेह रे प्राणी. ॥५॥

पहेला मुनि दश कल्प वखाणो, क्षेत्र गुण कह्या तेर।
तृतीय रसायन सरिखुं ए सूत्र, पूरवमां नहीं फेर रे प्राणी. ॥६॥

नवशें त्राणुं वरसे-वीरथी, सदा कल्प वखाण।
ध्रुवसेन राजा पुत्रनी आरति, आनन्दपुर मंडाण रे प्राणी. ॥७॥

अट्टम तपनी महिमा ऊपर, नागकेतु दृष्टांत ।
ए तो पीठिका हवे सूत्र वांचना, वीर चरित्र सुणो संतरे
प्राणी. ॥८॥

जंबू द्वीपमां दक्षिण भरते, माहणकुंड सुठाम ।
आषाढ़शुदि छट्ठे चविया, सुरलोक थी अभिराम रे प्राणी. ॥९॥

ऋषभदत्त घरे देवा नन्दा, कूखे अवतरिया स्वाम ।
चौदह सुपन देखी मन हरखी, पियु आगल कही तामरे
प्राणी. ॥१०॥

सुपन अर्थ कह्यो सुत होशे, ए हवे इन्द्र आलोचे ।
ब्राह्मण घर अवतरिया देखी, बैठो सुरलोक शोचे रे
प्राणी. ॥११॥

इन्द्र स्तवी उलट आणी, पूरण प्रथम वखाण ।
मेघकुमार कथाथी सांचे, कहे बुध माणेके जाणीरे प्राणी. ॥१२॥

---

(७७) ★ ढाल तीसरी सज्झाय ★

इन्द्र विचारे चितमांजी, ए तो अचरिज वात ।
नीचकुले नाव्या कदाजी, उत्तम पुरुष अवदात—
सुगुणनर जुओ जुओ कर्म प्रधान, कर्म सबल बलवान सुगु. ॥१॥

आवे तो जन्मे नहीजी, जिन चक्री हरिराम ।
उग्रभोग राजन कुलेजी, आवे उत्तम ठाम सुगुण. ॥२॥
काल अनंते ऊपन्याजी, दश अच्छेरां रे होय ।
तिण अच्छेरुं ए थयुंजी, गर्भ हरण दश मांहे सुगुण. ॥३॥
अथवा प्रभु सत्तावीशमां जी, भवमां त्रीजे जन्म ।
मरिचि भव कुलमद कीयोजी, तेथी बांध्युं नीच कर्म सुगु. ॥४॥
गोत्र कर्म उदये करीजी, माहण कुले उववाय ।
उत्तम कुले जे अवतरे जी, इन्द्रजित ते थाय सुगुण. ॥५॥
हरिण गमेषी तेडीनेजी, हरि कहे एह विचार ।
विप्र कुलथी लेई प्रभुजी, क्षत्रियकुल अवतार सुगुण. ॥६॥
राय सिद्धारथ घर भलीजी, राणी त्रिशला देवी ।
तास कूँखे अवतरीयाजी, हरि सेवक ततखेव सुगुण. ॥७॥
गज वृषभादिक सुंदरुजी, चौद सुपन तिणवार ।
देखी राणी जेहवांजी, वर्णव्या सूत्रे सार सुगुण. ॥८॥
वर्णन करो सुपन तणुंजी, मुकी बीजूं वखाण ।
श्री क्षमा विजय गुरु तणोजी, कहे माणेक गुण खाण
सुगुण. ॥९॥

इति

---

(७८) ★ श्री देवानन्दा की सज्झाय ★

❋ चन्द्र सूरि कृत ❋

जिनवर रूप देखी मन हरखे, स्तन से दूध झराया।
तब गोयम कुं भयो रे अचंबो, प्रश्न करण कुं आया हो
गोतम यह तो मेरी अम्मा, यह तो मेरी माता हो गणधर
यह. ॥१॥

तस कूँखे तुम किम नहीं वसिया, कवण किया तुम कम्मा।
पूर्व भव जब वीर प्रकाशे, इण किया हे कम्मा हो गोतम. ॥२॥
त्रिशलादे देराणी हुंती, देवानन्द जेठाणी।
विषय कारण थी कांई न जाणी, कपट बात मन आणी
गोतम. ॥३॥

तब श्राप दीयो देराणी, तुम संतान न होज्यो।
कर्म आगल कोई न छूटे, इन्द्र चक्रवर्ती जोज्यो हो
गोतम. ॥४॥

देराणी रा रत्न डाबला, बहुला रत्न चोराणा।
झगडो करतॉ न्याय हुओ जब, कछुय न पाया नाणा
गोतम. ॥५॥

भरतराय जब ऋषभने पूछे, इसमें कोण जिणन्दा।
मरिची पुत्र त्रिदंडी तुमारो, चोवीशमो जिणन्दा हो गोतम. ॥६॥

कुलनो मद कियो में गोतम, भरतराय जब वांधा ।
मन वचन काय एकत्र करीने, हरख्यो अतिह आणन्दा
गोतम. ॥७॥

कर्म संयोगे भिक्षु कुल पायो, उपन्यो ब्राह्मणी कूँखे ।
इन्द्रे अवधि जोता देख्यो, ज्ञान प्रयुंजे तेह हो गोतम. ॥८॥
ब्यासी दीन तस कुखे वसियो, हरिण गमेषी आयो ।
पूर्वभव त्रिशला देराणी, तस कुखे छिटकायो हो गोतम. ॥६॥
ऋषभदत्तने देवानन्दा, लीधो संयम भार ।
तब गोतम यह मुक्ते जासी, भगवती सूत्रनी साक्षी गोतम. ॥१०॥
सिद्धारथ त्रिशला देराणी, अच्युत देवलोक जाशे ।
आचारंगे दूजे खंधे, इम कही सूत्रनी साखे हो गोतम. ॥११॥
खरतर गच्छ श्रीपति जिन चन्दा, दिनी मनोहर वाणी ।
विनय करी गुरु गोतम पूछे, उलट अंगे आणी हो
गोतम. ॥१२॥

इति

---

(७६) ★ पर्युषण की सज्झाय ★

※ कृपाचन्द सूरि कृत ※

(तर्ज—देशी—रतनी)

सखी पर्व पजुषण आव्या, भवि जनना मनमां भाव्या ।
एमां आश्रव पांच हटाव्या, एतो सर्व जीव सुख भाव्या—
सनेही पर्व पजुषण सेवो, एतो सेवी शिव सुख लेवो सनेही. ॥१॥

श्रीवीर जिनेश्वर भाखे, ए पर्व सेवो श्रुत साखे ।
श्री भद्र बाहु स्वामी दाखे, एतो कल्पसूत्र इम आखे सनेही. ॥२॥

आठ दिवस अमारि पलावो, जिन चैत्ये पूजा रचावो ।
कल्पसूत्र घरे पधरावो, देवे रात्रि जोगो भल भावो सनेही. ॥३॥

रथ हय वर गज सणगारे, शासननी शोभा वधारे ।
वाजित्र ध्वनि मनुहारे, वर घोडो सजे दिल सारे
सनेही पर्व. ॥४॥

आडंबर करीने लावे, श्री कल्पसूत्र शुभ भावे ।
सद्गुरुनें हाथे ठावे, सुहव मिल मंगल गावे सनेही पर्व. ॥५॥

सद्गुरुनी मीठी वाणी, सुणो चऊ विह संत गुण खाणी ।
मनमां अति उल्लट आणी, संसार तरे भवि प्राणी सनेह पर्व. ॥६॥

इकवीश वार सुणी जे, पूजा प्रभावना कीजे ।
छठ अट्ठम चौथ करीजे, सुणी वीर जन्म जस लीजे
सनेही पर्व. ॥७॥

आषाढ़ चोमासेथी जाणो, पचास दिवस परमाणो ।
संवच्छरी पर्व कहाणो, भांखे श्री जिनवर भाणो सनेही पर्व. ॥८॥

इम पर्व आराधन करिये, पंच कारण मनमां धरीये ।
श्री जिनवाणी अनुसरिये, कृपाचन्द सूरि जस वरिये
सनेह पर्व. ॥९॥

इति

---

(८०) ★ श्री मेघकुमार की सज्झाय ★

(तर्ज–ए व्रत जगमा दीवो)

वीर जिनंद समो सर्याजी, वंदे मेघकुमार ।
सुणी देशना वैरागियोजी, ए संसार असार रे मायडी
अनुमती द्यो मुझ आज, संयम विषम अपार रे मायडी. ॥१॥

वछ तूं केणे भोलव्यो रे, श्रेणिक तात नरेश ।
कांई ऊंणो किण दूहव्योरे, हूँ नवि द्यूं आदेश रे जाया

संयम विषम अपार ।

किम निरवाहिस भार रे जाया संयम. ॥२॥

आदि निगोदे हूँ रुल्योजी, सहिया दुःख अणंत ।
सासोश्वासें भव पूरियाजी, तेह न जाणुं अंत हे मायडी.

अ० ॥३॥

हिवणा तूं बालक अच्छेजी, जोबन भयोरे कुमार ।
आठ रमणी परणावियो रे, भोगवो सुख अपार रे जाय हूँ

नवि. ॥४॥

जन्म मरण निरयतणो जी, दुःख न सहियो जान ।
वीर जिणंद वखाणियो जी, ते मैं सुणियो कान हे मायडी.

अ० ॥५॥

वछ काचलिये जीमणोजी, अरस नीरस आहार ।
भुंई पाला नित हींडणोजी, जाणसी तुझ कुमारे जाय हूँ न. ॥६॥

भमतां जीव अनंत भम्योजी, धर्म दुहेलो होय ।
जरा व्यापे जोबन खिसेजी, तब किम करणो होयरे मायडी.

अ० ॥७॥

मृग नयणी आठे रमेजी, तोडे नवसर हार ।
जोबनभर छोड़ूं नहींजी, कांई मूको निराधार कुमरजी हू न. ॥८॥
हँस तूलिका सेजडीजी, रूप रमणी रस भोग ।
अतिहीं सुँहाली देहडीजी, किम हुए संयम जोगरे
जाया हुँ न. ॥६॥
स्वारथनो सहूँ ए सगोजी, अरथपखे सहु कोय ।
विषय विषम महुरा कह्याजी, किम भोगविये सोयहे मायडी. ॥१०॥
खमि २ माऊ पसाय करोजी, में दीधुं तुझ दुःख ।
दिओ आदेश जिम होऊं सुखीजी, वीर चरणे ल्युं दीखहे
मायडी अ० ॥११॥
तन फाटे लोयण झरेजी, दुःखन सहिया जाय ।
वछ सुखी हुवो तिम करोजी, में दीधो आदेश रे जाया.
सं. ॥१२॥
मणि माणक मोती तज्याजी, तोड्यो नवसर हार ।
मृग नयणी आठे रडेजी, हिव अह्म कवण आधार
नरेसर संयम विषम. ॥१३॥
कुमर भणे सुकुलिनी प्रियाजी, बहु दुःख ए संसार ।
नेह तुम्हारो जांणियेजी, जो ल्यो संयम भार रे नारी—
संयम सुख भण्डार. ॥१४॥

रथ शीविका तव सभी करीजी, कुंवर धारणी माय ।
श्रेणिक राय उच्छव करेजी, चारित्रल्यो ऋषिराय रे
जाय सं. ॥१५॥

इम जाणी वैरागियोजी, वरजे जेनर नारी ।
कर जोडी पूनो भणेजी, ते तरस्ये संसार हे मायडी अनुमती द्यो
मुझ आज. ॥१६॥

इति

---

(८१) ❀ श्री प्रसन्नचन्द ऋषि की सज्झाय ❀

❋ ऋद्धि हरखजी कृत ❋

राज छंडी रलियामणो रे, जाणी अथिर संसार ।
वैरागे मन वालियो, कांई लीधो संयम भार—
प्रसन्नचन्द प्रणमूं तुमारा पाय, तुमे मोटा मुनिराय प्र. ॥१॥

वनमांहे काउसग्ग रह्योरे, पग ऊपर पग ठाय ।
बांह बेऊं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टि लगाय प्र. ॥२॥

श्रेणिक वन्दन निसर्यो रे, वीरजी ने वन्दन जाय ।
देई तीन प्रदत्तिणा, त्रिविध त्रिविध खमाय प्र. ॥३॥

दूर मुख दूत वचन सुणीरे, कोप चढ्यो ततकाल ।
मनशुं संग्राम मांडियो, जीव पड्यो जंजाल प्र. ॥४॥

श्रेणिक प्रश्न पूछियो रे, एहनी शी गति थाय ।
भगवंत कहे हमणा मरे तो, सातमी नरके जाय प्र. ॥५॥

त्तिण एक अंते पूछियोरे, सर्वार्थ सिद्ध विमान ।
वाजी देवनी दुंदुभी, मुनि पांम्या केवल ज्ञान प्र. ॥६॥

प्रसन्नचन्द मुनि मुगते गयारे, श्री महावीरना शिष्य ।
ऋषि हरख कहे धन्यते, जिण दिठा रे प्रत्यत्त प्रसन्नचन्द. ॥७॥

इति

---

(८२) ★ श्री द्विमुख राजा की सज्झाय ★

※ समय सुन्दरजी गणि कृत ※

नगरी कपिलानो धणीरे, जयराज गुण खाणी ।
न्याये नित पाले प्रजारे, गुणमाला पटराणी
दुमुहराय बीजो प्रत्येक बुद्ध. ॥१॥

वैरागे मन वालियो रे, समकित पामि शुद्ध । दु०

धरती खणतां निसर्यो रे, मुगट एक अभिराम
मुख बीजो प्रति बिंबियो रे, तिण द्विमुख हुवो नाम दु० ॥२॥

मुगट लेवा भणी मांडियो रे, चंड प्रद्योत संग्राम ।
पिण अन्यायी कुशीलियो रे, किमसरे तेहना काम दु० ॥३॥

इन्द्रध्वज अति सिण गारियो रे, जोतां तृप्ति न थाय ।
सकल लोक खेले रमे रे, महोत्सव मांड्यो राय दु० ॥४॥

तिहां जाई इन्द्र ध्वज देखीयो रे, पड्यो मलमूत्र मझार ।
हा हा ! शोभा कारमी रे, ए सहु अथिर संसार दु० ॥५॥

वैरागे मन वालियो रे, लीधो संजम भार ।
तप जप कीधा आकरा रे, पाम्या भवनो पार दु० ॥६॥

बीजो प्रत्येक बूझव्यो रे, दुमुह नामे ऋषिराय ।
समय सुन्दर कहे साधुना रे, नित नितप्रणमु पाय
दुमुहराय बीजो. ॥७॥

इति

— ——

(८३) ★ श्री करकंडू प्रत्येक बुद्धनी सज्झाय ★

❋ समय सुन्दर जी गणि कृत ❋

(तर्ज—हुँ तुझ आगल शुं कहूँ)

चंपा नगरी अतिभली हुं वारी लाल, दधिवाहन भूपाल रे हुं०
पद्नावती कुखें ऊपन्यो हुं, कर्मे कीधो चंडाल रे हुं. ॥१॥
करकंडुने करूं वन्दना हुं, पहिलो प्रत्येक बुद्ध रे हुं. ।
गिरुआना गुण गावता हुं, समकित थाये शुद्ध रे हुं. क. ॥२॥
लाधी बांशनी लाकडी हुं, पायो कंचन पुरनोराय रे हुं. ।
बापशुं संग्राम मांडियो हुं, साधवी लीयो समजाय रे
हुं क. ॥३॥
बृषभ रूप देख करी हुं, प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे हुं क. ।
उत्तम संजम आदर्यो हुं, देवता दीधो वेष रे हुं क. ॥४॥
कर्म खपाय मुक्के गया हुं, करकंडू ऋषिराय रे हुं ।
समय सुन्दर कहे साधुने हुं, प्रणम्या पातिक जायरे हुं.
वारीलाल करकडुंने. ॥५॥

इति

---

(८४) ★ अष्टमी की सज्झाय ★

※ सुमति विजयजी कृत ※

जीव वारूं छुं मोरा वालमा, परनारी थी प्रीतम जोड रे।
परनारीनी संगत नहीं भली, तारा कुलमां लागे छे खोटरे
जीव. ॥१॥

जीव आ संसार छे कारमो, जीव दीसे छे आल पंपाल रे।
जीव इम जाणीने चेतजो, आगलमां छोड़े नाखी छे नालरे
जीव. ॥२॥

जीव मात पिता भाई बेनडी, जीव कुंटब तणो परिवार रे।
जीव वेती वारूं सहु संगे, पछे होवा कीना जुहार रे जीव. ॥३॥

जीव देहली लगे सगी आंगणे, जीव छेरी लगे सगी माय रे।
जीव सीमलगे साजन भला, पछी हँस एकेलो ही जाय रे
जीव. ॥४॥

जीव जातॉ थका नहीं जाणियो, जीव नहीं जाण्यो वार तींवार रे।
जीव गाडु भरिया लाकड़ा, वली खोखरी हांडी सार रे जीव. ॥५॥

जीव आठम तप नहीं जाणियो, जीव कीधा छे बहोला पाप रे ।
जीव सुमति विजय मुनि इम भणे, जीव आवागमन विचार रे
जीव. ॥६॥

इति

---

(८५) ★ दूज की सज्झाय ★

※ सुमति विजयजी कृत ※

या बीज कहे सुण कान्त संत घर आवो तो सही, आवो तो सही
रे मारा चेतन आवो तो सही या. टेर ।
रतन तीन तुम पास खास किम खोवो छो सही, यो शम संवेग-
को रंग पिया किम धोवो छो सही, धोवो छो सहीरे मारा
चेतन. ॥१॥

कुमती कुटिल कुनार भार जोवो छो सही, यों नरक निगोद को-
बीज पिया किम बोओ छो सही, बोओं छो सही रे मेरा
चेतन. ॥२॥

शब्द रूप रस गंध फन्दे मोहो छो सही, या पर पुद्गल संग-
वैठ पेठ किम खोवो छो सही, खोवो छो सही रे मारा
चेतन. ॥३॥

तृष्णा मच्छर मान विषय वश होवो छो सही, या देख पराई
नार भार किम जोवो छो सही । जोवो छो सही रे मारा
चेतन. ॥४॥

सुमति विछाई सेज जेणपरे पोढो तो सही, या अनुभव ज्ञान की
प्रीति रीत घर मांडो तो सही, मांडो तो सहीरे मारा चेतन. ॥५॥

इति

---

(८६) ★ पांच समिति की ढालों ★

* अध्यात्म योगी श्री आनंदघन जी कृत *

(दोहरा)

पंच महाव्रत आदरी, आतम करो विचार ।
अहो मुझ प्रत्यक्ष थयो, धन्य धन्य अवतार ॥१॥

(तर्ज—चित्रोडा राजा-यह राग)

विनति अवधारो रे, इरियाए चालो रे।
शक्ति संभालो आतम स्वभावनी रे. ॥१॥
इरिया ते कहिये रे, सुमति शुं भेट लहीये रे।
पुंठ तब वाली कुमति संगथी रे. ॥२॥
द्रव्यथी पण सार रे, किलामणा लगार रे।
रखे नवी उपजे हवे पर प्राणने रे. ॥३॥
मुनि मारग चालो रे, द्रव्य भावशुं म्हालो रे।
आतमने अजवालो भव दव चक्रथी रे. ॥४॥
अेम सुमति गुण पामीरे, पर भावने वामी रे।
कहे हवे स्वामी, आनंदघन ते थयो रे. ॥५॥

---

(८७) ❀ ढाल दूसरी ❀

❀ अहो गुणवन्ता जी ए देशी ❀

बीजी समिति सांभलो जयवंताजी, भाषा की इण नामरे; गुणवंताजी।
भाखे भाषण स्वरुपनुं ज. रूपी पदारथ त्याग रे,
गुणवंताजी. ॥१॥

निज स्वरूप रमणे रह्या ज. नवी परनो प्रचार रे गुणवंताजी ।
भाषा समिति थी सुखे थयुं ज. ते जाणे मुनिराय हे
गुणवंताजी. ॥२॥

ज्ञानवंत निज ज्ञानथी ज. अनुभव भाषक थायरे गुणवंताजी ।
भाषा समिति स्वभावथी ज. अनुभव भाषक थायरे
गुणवंताजी. ॥३॥

हवे द्रव्य थी पण महामुनि ज. सावद्य वचननो त्यागरे गुणवंताजी ।
सावद्य विरम्या जे मुनि ज. ते कहीये महाभाग रे
गुणवंताजी. ॥४॥

पर भाषण दूरे करी ज. निज स्वरूप ने भासरे गुणवंताजी ।
आनंदघन पद ते लहे ज. आतम ऋद्धि उल्लास रे
गुणवंताजी. ॥५॥

---

(८८) ★ तीजी ढाल ★

(राग—बंगला राजा नहीं नमे)

तीजी समिति एषणा नाम, तेणे दीठो आनन्दघन स्वाम
चेतन सांभलो ।
जब दीठो आनंदघन वीर, सहज स्वभावे थयो छे धीर. ॥१॥

वीर थई अरि पुंठे धाये, अरि हतोते नाठो. जाय गयो आमलो ।
वीरनी सन्मुख कोई न थाय, रत्नत्रय शुं मलवा जाय चे. ॥२॥

अरिबल हवे नथी कांई रेप, निज-स्वभावमां म्हाल्यो विशेष.
निरखण लाग्यो निज घरमांय, तब विसामो लीधो त्यांय चे. ॥३॥

हवे परघरमां कदीय न जाऊं, परने सन्मुख कदीय न थाऊं ।
अेम विचारी थयो घर राय, तब परपरिणिति रोजी जाय चे. ॥४॥

मुनिवर करुणा रस भण्डार, द्वेष रहित हवे लेछे आहार ।
द्रव्य थकी चाले छे एम, परपरिणतिनो लीधो नेम चे. ॥५॥

द्रव्य भावशुं जे मुनिराय, समिति स्वभावमां चाल्या जाय ।
आनंदघन प्रभु कहीये तेह, दुष्ट विभावने दियो छेह चे. ॥६॥

---

(८६) ★ ढाल चौथी ★

(जगत गुरु हीरजी रे—ए)

चौथी समिति आदरो रे, आदान निखेवणा नाम ।
आदानने जे आदर करे रे, निज स्वरूपने ताम स्वरूप-
गुण धारजो रे, धारजो अक्षय अनंत भविक वारजो रे. ॥१॥

निखेवणा ते निवारवु रे, परवस्तु वली जेह ।
तेह थकी चित्त वालवु रे, करवा धर्मशुं नेह स्वभाव. ॥२॥
धर्म नेह जब जागियो रे, तब आनन्द जणाय ।
प्रगट्यो स्वरूप विषे हवे रे, ध्याता ते ध्येय थाय स्वभाव. ॥३॥
अज्ञान व्याधि नसाडवा रे, ज्ञान सुधारस जेह ।
आस्वादन हवे मुनि करे रे, तृप्ति न पामे तेह स्वभाव. ॥४॥
स्वरूपमां जे मुनिवरा रे, समिति शुं धरे स्नेह ।
सुमति स्वरूप प्रगटावीने, दीधो कुमतिनो छेह स्वभाव. ॥५॥
काल अनादि अनंतनो रे, हतो सलंगण भाव ।
ते पर पुद्गलथी हवे रे, विरक्त थयो स्वभाव स्वभाव. ॥६॥
द्रव्य भाव दोय भेदथी रे, मुनिवर समिति धार ।
आनंदघन पद साधशे रे, ते मुनि गुण भंडार स्वभाव. ॥७॥

---

(६०) ★ ढाल पांचमी ★

(रूडा राजवी—ए देशी)

समिति पंचमी मुनिवर आदरो रे, उन्मारगनो परिहार रे
सुधा साधुजी ।
मुनि मार्ग रूडी परे साधजो रे, पर छोडीने निज संभार रे
सुधा साधुजी. ॥१॥

पारिठावणिया नासे वली जे कह्यु रे, तेतो परिहरवो परभावरे सु.
आदर करवो निज स्वभावनो रे, ए तो अकल स्वभाव कहेवाय रे
सुधा साधुजी. ॥२॥

पर पुद्गल मुनि परठवे रे, विचार करी घट मांय रे ।
लोक संज्ञाने जे मुनि परिहर रे, गति चार प्रछे वोसिराय रे
सुधा साधुजी. ॥३॥

अनादिनो संगवली जे हतो रे, तेनो हवे करे मुनि त्याग रे ।
विकल्पने संकल्पने टालवा रे, बली जेथया उजमाल रे ।
सुधा साधुजी. ॥४॥

अनाचीर्ण मुनि परठवे रे, ते जाणीने अनाचार रे ।
आचारने वली मुनि आदरे रे, कर्त्ताकार्य स्वरूपी थाय रे
सुधा साधुजी. ॥५॥

षट् द्रव्यनुं जाणपणुं कह्यु रे, ते जे जाणे आप स्वभावरे ।
स्वभावनो कर्त्तावली जे थयोरे, तेतो अनवगाही कहेवाय रे
सुधा साधुजी. ॥६॥

सुमितिशुं हवे मुनि म्हालता रे, चालता समिति स्वभावरे ।
कुमति थी दृष्टि नहीं जोडता रे, वली तोडता जे विभाव रे
सुधा साधुजी. ॥७॥

परपरिणत कहें सुण साहेबा रे, तमे मुझने मूकी केम रे ।
कहो मुनि कवण अपराध थी रे, तमे मुझने छोडी अेम रे
सुधा साधुजी. ॥८॥

में मारो स्वभाव नवि छोडियो रे, नथी महारो कोई विभावरे ।
पचरंगी माहरू स्वरूप छे रे, तेने आदरूं छुं सदा कालरे
सुधा साधुजी. ॥९॥

वर्ण गंध रसादि छोडुं नहिरे, तो स्यो अवगुण कहेवायरे ।
कदी अव स्वभाव न आदरूं रे, सद्गुण विध्वंसन न छंडायरे
सुधा साधुजी. ॥१०॥

सिद्ध जीवथी अनंत गुण कह्यांरे, मारा घरमां जे चेतन रायरे ।
ते सघला मारे वश थई रह्यारे, तमथी छोडीने केम जवायरे
सुधा साधुजी. ॥११॥

तव मुनिवर कहे कुमति सुणोरे, तारूं स्वरूप जाण्युं अमे आजरे ।
तारा स्वरूपमां जिम तुं मगन छे रे, मारा स्वरूपमां थयो हूं आजरे
सुधा साधुजी. ॥१२॥

मारूं स्वरूप अनंतमें जाणियुं रे, तेतो अचल अमल कहेवायरे ।
सुमति थी स्वभावमां रंगरसुं रे, तारा सामुं जोयुं केम-जायरे
सुधा साधुजी. ॥१३॥

तारे मारे हवे नहिं बनेरे, तमे तमारे घरे हवे जाओरे ।
आटला दाहडा हुँ बालपणे, हतोरे हवे पण्डित वीर्य प्रगटायो रे
सुधा साधुजी. ॥१४॥

सुमतिशुं में आदर मांडियोरे, एतो बहु गुणवंती कहेवायरे ।
सुमतिना गुण प्रगटपणे रे, में तो लीधा उपयोग मांयरे
सुधा साधुजी. ॥१५॥

सांभल सुमतिना गुण कहूंरे, जे अचल अखंड कहेवायरे ।
स्थिरतापणुं सुमतिमां घणुरे, तुजमां तो अस्थिरता समाय रे
सुधा साधुजी. ॥१६॥

तारा सुख तो में हवे जाणियारे, दुःखदायक सदा कालरे ।
सारा सुख विभाव कहेवाय छे रे, नथी पुन्य पापनो ख्यालरे
सुधा साधुजी. ॥१७॥

ज्ञानी तो अेहने सुख नवि कहेरे, सुखतो जाणयुं अेक स्वभावरे ।
तारा पुंठे पड्या तेतो आंधलारे, भव कूपमां पड्या सदायरे
सुधा साधुजी. ॥१८॥

तारूं स्वरूप में बहु जाणिशुंरे, तुं तो जड स्वरूप कहेवायरे ।
जडपणुं प्रगट में जाणियुंरे, तूं तो पर पुद्गलमां समायरे
सुधा साधुजी. ॥१९॥

तेनो विस्तरो प्रगट हवे सांभलोरे, संसार समुद्र अथाहरे ।
तृष्णा रूप जलते मध्ये घणु रे, पण पीके तृप्ति न थायरे
सुधा साधुजी. ॥२०॥

ते समुद्रनो अधिष्टायक वलीरे, तेतो नामे मोह भूपालरे ।
तेना प्रधान वली पंच छे रे, तेतले त्रेवीश छडीदार रे
सुधा साधुजी. ॥२१॥

राजधानी त्रेवीश जणने आपीकरी, तेनी खबर राखे ते पंच रे ।
राजधानी एवीते मेलवी रे, धर्म रायनु लूटे धन सँच रे
सुधा साधुजी. ॥२२॥

बाह्य धर्मीजो अने आदरे रे, तेने भोलवे ते छडीदार रे ।
वश करी सोंपे मोहरायने रे, मोह करावे प्रमाद प्रचार रे—
सुधा साधुजी. ॥२३॥

तेथी जाये नरक निगोदमां रे, तिहां काल अनादि गमाय रे ।
दृढ़ धर्मी अेथी नवि चले रे, जेणे कीधा क्षायक भाव रे ।
सुधा साधुजी. ॥२४॥

प्रमादीने मोह पीटे घणु रे, अप्रमादी घेर नवि जाय रे ।
तेणे पंच महाव्रत आदर्या रे, छोड्या सर्व अनाचार रे
सुधा साधुजी. ॥२५॥

आचारथी हुँ हवे नवि चलूं रे, सुण मुज चितना अभिप्राय रे ।
कुमतिजी ? कहूँ तमने अेटलुं रे, मारा समरखी छे अनंत कायरे
सुधा साधुजी. ॥२६॥

ते सर्वने दासपणुं दीयो रे, ते साले छे मुझ चित्तमांय रे ।
शुं कीजे पुंठते नवि फेरवे रे, तो पण मुझने दया थाय रे
सुधा साधुजी. ॥२७॥

तेथी देशना बहुविध करूं रे, जिहां चाले मारो प्रयास रे ।
चेतनजी ने बहुपरे शीखवुं रे, तेने बतावुं स्थिरवास रे
सुधा साधुजी. ॥२८॥

तेतो तारे वश फरी न होवे रे, तने वोसिरावी शिवजाय रे ।
धर्मरायनी आणने अनुसरे रे, तेतो आनन्दघन महाराज रे
सुधा साधुजी. ॥२९॥

इति

———

[६१] ★ पांच व्यवहार की ढाल ★

* श्री ज्ञान विमल सूरि कृत *

(ए छीडी किहां राखी—ए देशी)

श्री जिनवर देवे भविजन हेते, मुगति तणो पंथ दाख्यो ।
ज्ञान दर्शन चारित्र तप चउविध, ऐथी शिव सुख चाखोरे
आतम ! अनुभव चितमां धारो, जेम भव भ्रमण निवारो रे ।
आतम. ॥१॥

ज्ञान थकी सवि भाव जणाये, दर्शन तास प्रतीत ।
चारित्र आव्रतां आश्रव रूंधे, पूर्व शोपे तप नितरे आतम. ॥२॥

ज्ञान दर्शन बेहुं सहचारी, चारित्र तस फल कहिये ।
निरासंश तप कर्म खपावे, तो आतम गुण लहियेरे आतम. ॥३॥

ते चारित्र निश्चय थी निज गुण, समिति गुप्ति व्यवहार ।
ज्ञान क्रिया सम्मत फल कहिये, चारित्रनो निरधाररे आतम. ॥४॥

ते व्यवहार कह्यो पण भेदे, पंचम अंग मोझार ।
आगम श्रुतने आणा प्रथम, जीव धारण विचार रे आतम. ॥५॥

केवली मण पज्जब ने ओही, चवदह पूर्व दश पूर्व ।
नव पूर्व लगे षट् विध आगम, व्यवहारी होय सर्व रे आतम. ॥६॥

शेष पूर्व आचार प्रकल्पह (क) छेदादिक सत्रि जाण ।
श्रुत व्यवहार कहीजे बीजे, अतिशय विण जे नाण रे
आतम. ॥७॥

देशांतर स्थिर बेहु गीतारथ, ज्ञान चरण गुण अलगा ।
कोई कारणथी मिलन न होवे, तिण हेते करी अलगा रे
आतम. ॥८॥

प्रश्न सकल पूछेवा काजे, गुणी मुनि पासे मूके ।
तेह (थी) ग्रहीने उत्तर भांखे, पण आशय नवि चूके रे
आतम. ॥९॥

तेनी आणा तहत करीने, जे निःशंक प्रमाण ।
जेम तृषित सर नदी न पामे, पण तस जले तृषा हाण रे
आतम. ॥१०॥

ते आणा व्यवहार कहीजे, ए त्रीजो पण बेहु सरिखो ।
गूढ़ आलोचना पद जे भाख्या, ते प्रायश्चित्त परखो रे
आतम. ॥११॥

जीत व्यवहार सुणो हवे पंचम, द्रव्य क्षेत्र काल भाव ।
पुरुष साहस ने पडिसेवा, गाढ़ अगाढ़ हेतु दाव रे आ. ॥१२॥

इत्यादिक बहु जाण गीतारथ, तेणे जे शुभ आचरियो ।
आगममां पण जे न निषेध्युं, अविधि अशुद्ध नवि धरियो रे
आतम. ॥१३॥

पूरव चार व्यवहार न बाधे, साधे चारित्र योग ।
पाप भीरू पंचांगी सम्मत, संप्रदायी गुरु लोग रे आ. ॥१४॥

गच्छगत अनुयोगी गुरु सेवी, अनियत वासी आउत्त ।
अे पण गुण संयमनो धारी, तेह ज जीत पवित्तरे आ. ॥१५॥

पासत्थो उसन्नो कुशीलो, संसत्तो अहा छंदो ।
अे पंच दोषने दूर न करे अने, मुनि पणुं भाखे मंदोरे
आतम. ॥१६॥

गुण हीणो ने गुणाधिक सरिखो, थाये जे अन्नाणी ।
दर्शन असार तो चरण किहां थी, अे धर्म दास गणि वाणी रे
आतम. ॥१७॥

गुण पक्षीने गुणनो रागी, शंकित विधि उजमाल ।
श्रद्धा ज्ञान कथे न करणी, ते मुनि वंदु त्रिकालरे आतम. ॥१८॥

विषम काल मांहे पण ओ गुण, परखी जे मुनि वंदे ।
प्रवचनने अनुसारिणी किरिया, करतो भवभय छेदेरे आ. ॥१९॥

एह सुत्त व्यवहार तणोबल, शासन जिननुं दीपे ।
संप्रति दुप्पसह सूरिलगे ओ, कुमित कदाग्रहने जीपेरे आ. ॥२०॥

इण व्यवहारे जे व्यवरहशे, संयमनो खप करशे ।
ज्ञान विमल गुरुने अनुसरशे, ते भवसिंधु ने तरशे रे
आतम ! आ. ॥२१॥

---

(९२) ★ श्री क्षमा छत्रीशी प्रारम्भ ★

※ गणि समय सुन्दरजी कृत ※

आदर जीव क्षमा गुण आदर, म करिश रागने शेष जी ।
समताये शिव सुख पामीजे, क्रोधे कुगति विशेषजी आ. ॥१॥

समता संजम सार सुणीजे, कल्प सूत्रनी साखजी ।
क्रोध पूर्व कोडि चारित्र बाले, भगवंत इणी परे भाखजी आ. ॥२॥

कुण कुण जीव तर्या उपसमथी, सांभल तुं दृष्टांतजी ।
कुण कुण जीव भम्या भवमांहे, क्रोध तणे विरतंतजी आ. ॥३॥

सोमल ससरे शीश प्रजाल्युं, बांधी माटीनी पालजी ।
गजसुकुमाल क्षमा मन धरतो, मुगति गयो तत कालजी
आ. ॥४॥

कुलवालुओ साधु कहातो, किधो क्रोध अपारजी ।
कोणिकनी गणिका वश पडियो, रडवडियो संसारजी आ. ॥५॥

सोवनकार करी अति वेदन, वाध्रशुं वींटियुं शीशजी ।
मेतराज ऋषि मुक्ति पोहोंतो, उपशम एह जगीशजी आ. ॥६॥

कुरुड कुरुड बे साधु कहाता, रह्या कुणाला खालजी ।
क्रोध करीते कुगते पहोंता, जनम गमायो आलजी आ. ॥७॥

कर्म खपावी मुगते पहोता, खंधक सूरिना शिष्यजी ।
पालक पापिये घाणी पील्या, नाणी मनमां रीप जी आ. ॥८॥

अचंकारी नारी अचूकी, त्रोड्या पीयुशुं नेह जी ।
बब्बर कुल सह्यां दुःख बहुलां, क्रोध तणां फल एहजी आ. ॥९॥

वाघणे सर्व शरीर विलुरयुं, तत क्षण छोड्यां प्राणजी ।
साधु सुकोशल शिव सुख पाम्या, एह क्षमा गुण जाणजी
आ. ॥१०॥

कुल चांडाल कहीजे बिहुमें, निरति नहीं कहे देवजी ।
ऋषि चंडाल कहिजे बढ़तो, टालो वेढनी टेव जी आ. ॥११॥

सातमी नरक गयो ते ब्रह्मदत्त, काढ़ी ब्राह्मण आंखजी ।
क्रोध तणां फल कडुवां जाणी, राग द्वेष द्यो नांखजी आ. ॥१२॥

खंधक ऋषिनी खाल उतारी, सह्यो परिसह जेहजी ।
गरभ वासना दुःख थी छूट्यो, सबल क्षमा गुण तेहजी
आ. ॥१३॥

क्रोध करी खंधक आचारिज, हुआ अग्निकुमार जी ।
दंडक नृपनो देश प्रजाल्यो, भमशे भवह मझारजी आ. ॥१४॥

चण्डरूद्र आचारिज चलतां, मस्तक पीड़ित अणगारजी ।
क्षमा करतां केवल पाम्यो, नव दीक्षित अणगारजी आ. ॥१५॥

पांच वार ऋषि ने संताप्यो, आणी मनमां द्वेष जी ।
पंच भव सीम दह्यो नंद नाविक, क्रोध तणां फल देखजी
आ. ॥१६॥

सागरचंदनुं शीश प्रजाली, निशि नभसेन नरिंद जी ।
समता भाव धरी सुरलोके, पहुंतो परमानंदजी आ॰ ॥१७॥

चंदना गुरुणीये घणुं निभ्रंछी, धिग् धिग् तुझ अवतारजी ।
मृगावती केवल सिरि पामी, एह क्षमा अधिकारजी आ. ॥१८॥

सांब प्रद्युम्न कुवर संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साहजी ।
क्रोध करी तपनुं फल हार्यो, कीधो द्वारिका दाहजी आ. ॥१९॥

भरतने मारण मूठी उपाडी, बाहूबल बलवंत जी ।
उपशम रस मन मांहे आणी, संजम ले मतिमंत जी आ. ॥२०॥

काउसग्गमां चडियो अति क्रोधे, प्रसन्नचंद्र ऋषिराय जी ।
सातमी नरक तणां दल मेल्यां, कडुआं तेण कषायजी
आ. ॥२१॥

आहार मांहे क्रोधे ऋषि थूंकयो, आण्यो अमृत भावजी ।
कुरग डुये केवल पाम्युं, क्षमा तणे परभाव जी आ. ॥२२॥

पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधा, कमठ भवांतर धीठजी ।
नरक तिर्यंच तणां दुःख लाधां, क्रोध तणा फल दीठजी
आ. ॥२३॥

क्षमावंत दमदंत मुनीश्वर, वनमां रह्यो काउसग्ग जी ।
कौरव कटक हण्यो ईंटाले, त्रोड्या कर्मना वर्गजी आ. ॥२४॥

शय्यापालक काने तरुओ, नांख्यो क्रोध उदीरजी ।
बेहु काने खीला ठोंकाणा, नवि छूटा महावीरजी आ. ॥२५॥

चार हत्यानो कारक हुँतो, दृढ़प्रहारि अतिरेकजी ।
क्षमा करीने मुक्ते पहोंतो, उपसर्ग सह्या अनेकजी आ. ॥२६॥

पहुरमांहे ऊपजतो हार्यो, क्रोधे केवल नाण जी ।
देखो श्री दमसार मुनीसर, सूत्र गुण्यो उठाणजी आ. ॥२७॥

सिंह गुफावासी ऋषि कीधो, स्थूलि भद्र उपर कोपजी ।
वेश्या वचन गयो नेपाले, कीधो संयम लोपजी आ. ॥२८॥

चन्द्रावंतसक काउसग्ग रहियो, क्षमा तणो भण्डार जी ।
दासी तेल भर्यो निशी दीवो, सुरपदवी लहे सारजी आ. ॥२९॥

इम अनेक तर्या त्रिभुवन में, क्षमा गुणे भवि जीवजी ।
क्रोध करी कुगते ते पहोता, पाडंता मुखरीव जी आ. ॥३०॥

विष हालाहल कहीये विरुओ, ते मारे एक वारजी ।
पण कसाय अनंती वेला, आपे मरण अपार जी आ. ॥३१॥

क्रोध करतां तप जप कीधां, न पडे कांई ठाम जी ।
आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं केहो काम जी आ. ॥३२॥

क्षमा करतां खरचन लागे, भांगे क्रोड कलेशजी ।
अरिहंत देव आराधक थाये, व्यापे सुजस प्रदेश जी आ. ॥३३॥

नगर मांहै नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रसादजी ।
श्रावक लोग वसे अति सुखिया, धर्म तणे प्रसादजी आ. ॥३४॥

क्षमा छतीशी खँते कीधी, आतम पर उपगार जी ।
सांभलतां श्रावक पिण समज्या, उपशम धर्यो अपार जी
आ. ॥३५॥

युग प्रधान जिणचंद सूरिशर, सकलचन्द तसु शिष्यजी ।
समय सुन्दर तसु शिष्य भणे इम, चतुर्विध संघ जगीशजी
आदर जीव क्षमा गुण. ॥३६॥

इति

---

(६३) ★ क्रोध की सज्झाय ★

(समय सुन्दर जी कृत)

क्रोध कियो आछो नहीं, आभडतां लच्मी नासेजी ।
दुःख दारिद्र घरमें घसे, कोडोना पाप उपार्जे जी
"क्षमा रे किया सुख ऊपजे जी" ओ भाख्यो श्री जगदीशो जी
जे सुख चाहो जीवको थे, कोईमत करजो रीसोजी क्षमा. ॥१॥

गाल वेचीजे राड़में, लाडु नहीं वेचीजे जी ।
वालो मिटी वैरी हुवे, इसडो काम न कीजे जी क्षमा. ॥२॥

वाप वेटो भाई भाई, सासु वहु गुरु चेलोजी ।
क्रोध थकी उछल पड़े, न जाणे नेडी सगाईजी क्षमा. ॥३॥

क्रोधी नर कालो पड़े, आ सखरी वात बिगाड़ेजी ।
आगोरे पीछो जोवे नहीं, लाखीणी प्रीत घटाड़ेजी क्षमा. ॥४॥

कोईरे वचन करड़ो कहे, अथवा ते आघो पीछोजी ।
दवने दाध्ये ते पांगरे, नहीं पांगरे वचनांरो विंध्योजी क्षमा. ॥५॥

ज्यांरे घरमें एक क्रोधी, सबलाने संतायेजी ।
ज्यांरे घरमें सबला क्रोधी, ज्यांरा किसा हवाला जी क्षमा. ॥६॥

तपस्या तपेने रीस करे, आ आंखमां मरच किम आंजेजी ।
तपस्या विणसे क्रोधथी, आ दूध विणासे कांजीजी क्षमा. ॥७॥

क्षमारे किया शंका नहीं, आगे फल लागे आछाजी ।
खंधक ऋषि क्षमा करी, बेनोई खाल उतारीजी
राय प्रदेशी देखने, ओ तत्क्षण लीधो मोक्षजी क्षमा. ॥८॥

समय सुन्दर कहे क्रोधने, तमे दीजो देसोटो जी ।
क्रोध तजे शिवपुर लहे, पामे भवनो पारजी क्षमा. ॥९॥

---

(९४) ★ श्री उपदेश सित्तरी सज्झाय ★

※ श्री सार मुनि कृत ※

उत्पत्ति जो जो आपणी, मनमांही विमास ।
गरभावासे जीवडो, वसियो नव मास
उत्पत्ति जो जो आपणी. ॥१॥

नारी तणे नाभी तले, जिन वचने जोय ।
फूल तणी जिम नालिका, तामे नाडी छे दोय उत्पत्ति. ॥२॥

तसु तले योनि कहीये, वर फूल समान ।
आंबातणी मांजर जिस्यो, तिहाँ माँस प्रधान उत्पत्ति. ॥३॥

रुधिर स्रवे तिण ठामथी, ऋतु काल सदैव ।
रुधिर शुक्र जोगे करी, तिहाँ उपजे जीव उत्पत्ति. ॥४॥

जे अपावन पवने करी, वासित दुरगंध ।
तिणे थानक तुं ऊपनो, हवे हुओ मदंध उत्पत्ति. ॥५॥

नाली बांस तणी घणुं, भरिये रू घाल ।
ताती लोह शीलाक ते, जाले ततकाल उत्पत्ति. ॥६॥

तिम महिलानी योनिमें, छे नव लख जीव ।
पुरुष प्रसंगे ते सहु, मरी जाय सदीव० उत्पत्ति. ॥७॥

उपजे नर नारी मले, पंचेंद्रिय जेह ।
तेह तणी संख्या नहीं, तजो कारज एह उत्पत्ति. ॥८॥

नव लख जीव टके, तिहाँ उत्कृष्टी वार ।
जीव जघन्यपणे टके, एक दो त्रण चार उत्पत्ति. ॥९॥

जीव जघन्य तिहाँ रहे, मुहुरत परिमाण ।
बार वरसनी स्थिति, तिहाँ उत्कृष्टी जाण उत्पत्ति. ॥१०॥

तिणे गरमें कोई जीवडो, इम कहे जगदीश ।
फरी मरी आवे तो रहे, संवत्सर चौवीश उ. ॥११॥

महिला वरस पंचावने, कहिये निर्बीज ।
पचोतर वरस पछे, थाए पुरुष अबीज उ. ॥१२॥

जिमणी कुखे नर वसे, तिम वामी नार ।
वच्चे नपुंसक जाणिये, जिन वचने विचार उ. ॥१३॥

हवे सामान्य पणे इहाँ, आव्यो गर्भावास ।
सात दिवस उपर रहे, नरगति नव मास उ. ॥१४॥

आठ वरस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टो काल ।
गर्भावासे भोगव्या. इम बहु जंजाल उ. ॥१५॥

कार्मण काये करि लीयो, पहिलो ते आहार ।
शुक्र अने शोणित तणो, नहिं झूठ लगार उ. ॥१६॥

पर्यापति पूरी नही, तिहाँ विसवा वीश ।
तिणे आहारे तनु थयो, औदारिक अरु मीस उ. ॥१७॥

पवन आवे उदर थकी, ते उपजावे अंग ।
अग्नि करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग उ. ॥१८॥

कठिनपणुं पृथिवी रचे, अवगाह आकाश ।
पांचे भूत शरीरनो, एम करे प्रकाश उ. ॥१६॥

बार मुहूर्त्त ऋतु पछे, विलसे नर नार ।
गर्भ तणी उत्पत्ति तिहाँ, नहीं अवर प्रकार उ. ॥२०॥

कलल हुवे दिन सातमें, अर्बुद दिन सात ।
अर्बुद थी पेशी वधे, घन मांस कहात उ. ॥२१॥

मांस तणी गोठी हुवे, अड़तालीश टंक ।
प्रथम मासे जिनवर कहे, मनम धरो संक उ. ॥२२॥

रुधिर मास बीजे हुवे, हवे तीजे मास ।
कर्म तणे योगे करी, माताने मन आश उ. ॥२३॥

चौथे मासे मातना, परिणमे सहु अंग ।
हाथ अने पग पांचमें, तिन मस्तक संग उ. ॥२४॥

पित्त रुधिर छठे पड़े, सातमें रस संच ।
नव धमणी नस सातमें, पेशी सय पंच उ. ॥२५॥

रोमराई पण सातमें, साडी तिन क्रोड ।
उपजे ऊणा केटले, इम आगम जोड उ. ॥२६॥

आठमें मासे नीपनुं, एम सकल शरीर ।
ऊंधेशिर वेदन सहे, जंपे श्री जिन वीर उ. ॥२७॥

शोणित शुक्र सलेपमा, लघुने वडी नीत ।
वात पित्त कफ गर्भमें, ए थाये इण रीत उ. ॥२८॥

मात तणी टूंडी लगे, वालकनुं नाल ।
रस आहार तणो तिहाँ, आवे ततकाल उ. ॥२९॥

जननी लेवे आहार ते, जाए नाडो नाड़ ।
रोम इन्द्री नख चखवधे, तिम मज्जाने हाड़ उ. ॥३०॥

सविहु अंगे उल्लसे, सर्वांग आहार ।
कवल आहार करे नहीं, गर्भे रह्यो विचार उ. ॥३१॥

ते गर्भे किण जीवने, थाय ज्ञान विभंग ।
अथवा अवधि कहीजिये, तिणे ज्ञान प्रसंग उ. ॥३२॥

कटक करी वैक्रिय पणे, जूझी नरके जाय ।
को जिन वचन सुणी करी, मरी सुर पण थाय उ. ॥३३॥

ऊंधे मुखे गोडा हिये, सहेतो वहु पीड ।
दृष्टि आगल विहुं हाथशुं, रहे मूठी भीड उ. ॥३४॥

नर विण वसा जलादिके, उपजे ओधान ।
अथवा विहुँ नारी मल्यां, कह्यो गर्भ विधान उ. ॥३५॥

कोई उत्तम चिंतवे, देखी दुःख रास ।
पुण्य करूं परो नीकली, नावुं गर्भावास उ. ॥३६॥

ऊंठ कोडी सूई अंगमां, कोई चांपे समकाल ।
तिणथी गर्भमां अठगुणी, सहे वेदना बाल उ. ॥३७॥

माता भूखी भूखीयो, सुखिणी सुख थाय ।
माता सूते ते सुवे, परवश दिन जाय उ. ॥३८॥

गर्भथकी दुःख लखगणुं, जनमे जिण वार ।
जनम थये दुःख विसर्युं, धिक मोह विकार उ. ॥३९॥

उपज्यो अशुचि पणे तिहाँ, मल मूत्र कलेश ।
पिंड अशुचि करी पूरियो, नवि शुचि लव लेश उ. ॥४०॥

तुरत रूदन करतो थको, जनमे जिणवार ।
माता पयोधरे मुख ठवे, पिये दूध तेवार उ. ॥४१॥

दीसे दिन दिन दीपतो, करे रंग अपार ।
लाड कोड माता पिता, पूरे सुविचार उ. ॥४२॥

छिद्र बारह नारीने, नरनां नव जाण ।
रात दिवस वहेतां रहे, चेतो चतुर सुजाण उ. ॥४३॥

सात धातु साते त्वचा, छे सातशे नाड ।
नवशे नारां छे पिंडमां, तिम त्रणशे हाड उ. ॥४४॥

संधि एकसो साठ छे, सत्तोत्तर सो मर्म ।
तीन दोष पेशी पांचशे, ढाक्यां छे चर्म उ. ॥४५॥

रुधिर सेर दश देहमां, पेशाब सरीष ।
सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष उ. ॥४६॥

पित्त टांक चौसठ छे, वीरज बत्तीश ।
टांक बत्तीश सलेपमां, जाणे जगदीश उ. ॥४७॥

इण परिमाण थकी जदा, ओछो अधिक थाय ।
व्यापे रोग शरीर में, नवि चले तव काय उ. ॥४८॥

पोष्यो पहिले दशके, इम वाध्यो अंग ।
खान पान भूषण भलां, करे नव नव रंग उ. ॥४९॥

हवे बीजे दशके भणे, विद्या विविध प्रकार ।
त्रीजे दशके तेहने, जाग्यो काम विकार उ. ॥५०॥

जिण थानक तुं ऊपन्यो, तिणमें मन जाय ।
चोथे दशके धनतणा, करे कोडि उपाय उ. ॥५१॥

पहोतो दशके पांचमे, मनमां ससनेह ।
बेटा बेटी ने पोतरा, परणावे तेह उ. ॥५२॥

छठे दशके प्राणियो, वसी परवश थाय ।
जरा आवी यौवन गयुं, तृष्णा तोय न जाय उ ॥५३॥

आव्यो दशके सातमे, हवे प्राणी तेह ।
बल भाग्युं बूढ़ो थयो, नारी न धरे नेह उ. ॥५४॥

आठमें दशके डोसलो, खुलिया सहु दंत ।
कर कंपावे शिर धुणे, करे फोकट खंत उ. ॥५५॥

नवमे दशके प्राणियो, तन शक्ति न काय ।
साले वचन सहु तणां, दिन झूरतां जाय उ. ॥५६॥

खाट पड्यो खूं खूं करे, सुगालो देह ।
हाल हुकम हाले नहीं, दिये परिजन छेह उ. ॥५७॥

आंख गले बेपड मिले, पड़े मुँहड़े लाल ।
बेटा बेटी ने बहू, न करे संभाल उ. ॥५८॥

दशमें दशके आवियो, तव पूरी आय ।
पुण्य पाप फल भोगवी, प्राणी पर भव जाय उ. ॥५९॥

दश दृष्टांते दोहिलो, लही नरभव जाय ।
श्री जिन धर्म समाचरे, ते पामे भवपार उ. ॥६०॥

तरुण पणे जे तप तपे, पाले निर्मल शील ।
ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील उ. ॥६१॥

कोडी रतन कवडी साटे, कांई गमे रे गमार ।
धर्म विना ए जीवने, नही को आधार उ. ॥६२॥

काया माया कारिमी, कारिमो परिवार ।
तन धन जोवन कारिमो, साचो धर्म संसार उ. ॥६३॥

चउदे राज प्रमाण ए, छे लोक महंत ।
जनम मरण करी फरसीयो, जीव वार अनंत उ. ॥६४॥

आप स्वारथीया सहु, नहीं केहनो कोय ।
निज स्वारथ विण पूगतां, सुत पण रिपु होय उ. ॥६५॥

जरा न आवे जिहां लगे, जिहां लगे स्वस्थ शरीर ।
धर्म करो जीव तिहां लगे, होई साहस धीर उ. ॥६६॥

आरज देश लह्यो हवे, लाधो गुरु संजोग ।
अंग थकी आलस तजो, करो सुकृत संजोग उ. ॥६७॥

श्री नेमीराज तणी परे, चेतो चित्त मांहि ।
स्वारथनो सहु को सगो, कोई किणरो नांहि० उ. ॥६८॥

भोग संजोग तजी सहुं, थया जे अणगार ।
धन धन तसु माता पिता, धन धन तस अवतार उ. ॥६९॥

सुरतरु सुरमणि सारिखो, सेवो श्री जिन धर्म ।
जिण थी सुख संपत्ति वधे, कीजे तेहज कर्म उ. ॥७०॥

तंदुल वेयालिया में अछे, एहनो अधिकार ।
तिणथी उद्धरीने कह्यो, नहीं झूठ लगार उ. ॥७१॥

कलश

एह जैन धर्म विचार सांभली, लहिये संजम भार ए ।
वली सिहनी परे सदा पाले, नियम निरतिचार ए
संसारनां सुख भोगवी, ते शीघ्र ले हे भवपार ए
श्रीरत्न हर्षशुं शिष्य रंगे, इम कहे श्रीसार ए उ. ॥७२॥

---

(१) ★ विभाग दूसरा ★

* उपदेशिक सज्झाय *

(सत् सगतनु पद)

लोढु लाल बने अग्नि संगे, पण रातो रहे क्षणवार ।
जो निकले वार, संगत एनी शुं करे जेनु अन्तर
जाण कठोर संगत एनी शुं. ॥१॥

घृत दूध साकर थी सिंचो सदा, पण निंवडानी कडवास,
नवि जाय । मधुर नवि थाय संगत एनी शुं. ॥२॥

बाहिर मेघ वर्षे बहुजोर थी, पण मग सेलियो न भिजाय,
बीजा गली जाय । संगत एनी शुं. ॥३॥

चन्दन वृक्षनी मूले विंटी रह्यो, मणिधर न मूके स्वभाव ।
जाण्यो न प्रभाव संगत एनी शुं. ॥४॥

पानी मांहे पड्यो रहे सर्वदा, कालमिठ तणो जोर ।
भिजायन कोर संगत एनी शुं. ॥५॥

आंधण उकलतां मांही बोरिये, कण कोरडियो न रंधाय ।
बिजा गली जाय संगत एनी शुं. ॥६॥

खरने निरमल नीरे नवरावियें, पड़े राख देखी ततकाल ।
आणी मतवाल संगत एनी शुं. ॥७॥

धोवे सोमण साबु साथे लई, पण कोयलो सफेद नवि थाय ।
कालस नवि जाय संगत एनी शुं. ॥८॥

काला रंगनु कापडो लई करी, राता रंगमां बोल जबोल ।
मिटे नवि डोल संगत एनी शुं. ॥९॥

कागे हंस तणी सोबत करी, नवि चुक्यो पोतानो चरित्त ।
अवली एनी रीत संगत एनी शुं. ॥१०॥

झरमर झरमर मेउला वरसी रहा, निली कंचन थई वनराय ।
जवासो सुकाय संगत एनी शुं. ॥११॥

दुर्जन सज्जननी सोहबत करी, पण अन्तर कपट न जाय ।
सज्जन नवि थाय, संगत एनी शुं. ॥१२॥

कस्तुरी कपुरनी गंजमां, कदी डुंगरी दाटे कोय ।
सुगन्धी नथी होय संगत एनी शुं. ॥१३॥

कस्तुरीनां क्यारामां रोपता, नवि जाय लसन केरीवास ।
दुष्ट जेनु वास संगत एनी शुं. ॥१४॥

सती सद् गुणावलीनां संगमां, कदी दुष्टाने नावे रंग ।
खोटा जेना ढंग संगत एनी शुं. ॥१५॥

गाढ़ अज्ञानीं ज्ञान पामे नही, कहे संत समागम आम ।
भणे मुनि श्याम संगत एनी शुं करे. ॥१६॥

इति

---

(२) ★ जीवने कायानो संवाद—सज्झाय ★

* उदय विजयजी कृत *

(तर्ज—चेती तो चेताऊं तने रे०)

कामण गारी काया नारी, ते करी मारी खुवारी ।
गयो नर भव हारी रे, कृतघ्नी काया. ॥१॥

रात दिन पाली पोषी, माल भर्यो ठांसी ठांसी ।
अन्ते करी भारी हांसीरे कृतघ्नी. ॥२॥

मालादि उडावी खाधा, लगारे न लिधी बाधा ।
छतां तारा टूट्या सांधारे कृतघ्नी. ॥३॥

सारूं सारूं खाऊं पिऊं, पथारी पथारी सोवुं ।
निरंतर नाऊं धोवुं रे कृतघ्नी. ॥४॥

विलास कराव्यां घणा, शोभामां न राखी मणा ।
तारे माटे जीवो हण्यारे कृतघ्नी. ॥५॥

भोळापणुं मारूं धारी, फजेती करावी मारी ।
अन्ते निकली नठारी रे कृतघ्नी. ॥६॥

रात दिन करी सेवा, खवराव्यां मीठा मेवा ।
कराव्यां ठठारा केवा रे कृतघ्नी. ॥७॥

पुजारी हूँ थयो तारो, धर्म नहीं दिल धार्यो ।
बोजो पापनो वधार्यो रे कृतघ्नी. ॥८॥

तारी साथे संग कीधो, कुमति नो पंथ लीधो ।
छतां तेतो दगो दीधो रे कृतघ्नी. ॥९॥

वेसवा न दीधी मांखी, रोगथी बचावी राखी ।
तेतो केवली छे साखी रे कृतघ्नी. ॥१०॥

जे जे कीधुं तेते लीधुं, होठथी पडतुं ज लीधु ।
तोय उतयुं नहीं सीधुं रे कृतघ्नी. ॥११॥

फटको ते मोटो दीधो, दुःखी दुःखी मने कीधो ।
सीधो नरकमां लीधो रे कृतघ्नी. ॥१२॥

काया कहे सुण भोला, खानारी हूँ आखा कोला ।
गगडावुं मोटा गोला रे चे. ॥१३॥
मारा संगे जेह राच्यो, तेने मारूं हुं तमाचो ।
तोय मुकुं नहीं माचोरे चे. ॥१४॥
अमारी छे जड़जाती, रहुं रात दिन खाती ।
तोज रहुँ मन माती रे चे. ॥१५॥
स्त्री अने पुरुष वेद, मारोने तारो भेद ।
तेमां शाने धरे खेद रे चे. ॥१६॥
बांध्या जेवा तारी हाथे, तेतो आवे तारी साथे ।
तेमां नही मारी माथे रे चे. ॥१७॥
आजथी तारोने मारूं, अंतर छे न्यारूं न्यारूं ।
तेने नहीं दिल धारूं रे चे. ॥१८॥
गोजारी कायानी वाणी, सांभलजो भवि प्राणी ।
तेनो तजो संग जाणी रे चे. ॥१९॥
कायानी मायाने तजो, नीतिनो शृंगार सजो ।
उदयथी प्रभु भजोरे चे. ॥२०॥

इति

———

(३) ★ माया की सज्झाय ★

※ उदय सागरजी कृत ※

(तर्ज—मथुरामां खेल खेली आव्या हो श्या क्यां रमी आव्या)

माया मोकाण कर नारी, मुँझावो छो शाने मायामां ।
दुर्गतिमां दोरनारी मुँझावो, छो शाने मायामां टेर०
माया छे कामण माया छे मोहन, माया छे जगनी धुतारी मुं०
नाना मोटाने लागे छे व्हाली, लोभीने लागे छे प्यारी मुं. ॥१॥

रंग विरंगी देखाव आपी, जीवोने भ्रम करनारी । मुं०
आखुं जगत फंसी पड्युं मायामां, अन्ते रंडापो देनारी मु. ॥२॥

मारूं मारूं करी राखी माया तो, माठी गती कर नारी । मु०
मायानां फंदमां फांद वधारी, रागीने करती बिमारी मु. ॥३॥

मम्मण शेठने नन्द राजाना, दाखला जुवो विचारी । मु०
क्षणमां रायने रंक बनावे, क्षणमां करती भिखारी मु. ॥४॥

माया ते कोईनी थई नथीने, नहीं थवानी तमारी । मु०
आजे तमारीने काले अमारी, त्यांथी बीजानी थनारी मु. ॥५॥

वेगमां विजली सरखी गति छे, झलकारो दईने जनारी । मु०
आखी आलमने मोह लगाडी, मार्गथी मुकावनारी मु. ॥६॥

दौलत आपीने वे लात मारे, एवी मायानी खुवारी । मु०
धरतीमां राखी मायाने दाटी, छतां नहींज करनारी मु. ॥७॥

जो जो मायानो विश्वास करतां, अन्ते तो छेहने देनारी । मु०
धोली रूपे थई पीली गिनीमां, रातीमां त्रांबु थनारी मु. ॥८॥

नोट रुपये रही रंगे लीलीमां, लोकोने ललचावनारी । मु०
पुण्य विनाना प्राणीना घरमां, धन कोलसा कर नारी मु. ॥९॥

मायानी थिरता करवी पडेतो, पुण्य करो नर नारी । मु०
हैयानी होली कलेजानो झगडो, माया छे सलगाव नारी मु. ॥१०॥

संसारी साधु जोगी सन्यासी, नग्न पतिने भिखारी । मु०
माया ते फदमां फंसावी पाड्या, धर्मनुं धन लूट नारी मु. ॥११॥

मायानो पास लाग्योजे जनने, ते गया नर भव हारी । मु०
मायाने मुकी वनमां वसेला, फंसावी त्यां पाड नारी मु० ॥१२॥

दुनियानाँ लोको वनी वैठाछे, मायानी पाछल पुजारी । मु०
माया ए मुँझवी कोने न मार्या, कोनी करी न खुवारी मु. ॥१३॥

मायाना संगथी रह्या जे अलगा, ते नामनी वलीहारी । मुँ०
मायानो मोह मनथी मुके तो, नी त उदय कर नारी
मुँ झावो छो शाने मायामां मु. ॥१४॥

———

(४) ★ श्री कर्म ऊपर सज्जाय ★

※ दान मुनिजी कृत ※

(तर्ज—कपुर हो अति उजलो)

सुख दुःख सरखा पामीये रे, आपद संपद होय ।
लीला देखी पर तणी रे, रोषम करजो कोयरे प्राणी
मन नाणो विषवाद एतो कर्म तणा ए काम रे प्राणी. ॥१॥

फलने अहारे जीवियारे, बारे वरस वन राम ।
सीता रावण लई गयोरे, कर्म तणा ए काम रे प्राणी. ॥२॥

नारी पाखें वन एकलो रे, मरण पाम्यो मुकुन्द ।
नीच तणे घर जल भर्यो रे, शीस धरी हरिश्चन्द्र रे प्राणी. ॥३॥

नल दमयंती परिहरी रे, रात्रि समय वन मांय ।
नाम ठाम कुल गोपियोरे, नले निर वाह्यो कालरे प्राणी. ॥४॥
रूप अधिक जग जाणिये, चक्री सनतकुमार ।
वरस सातशो भोगवीरे, वेदना साल प्रकाररे प्राणी. ॥५॥
रूपे वली सुर सारिखारे, पाँडव पांच विचार ।
ते वन वासे रडवड्यारे, पाम्या दुःख संसाररे प्राणी. ॥६॥
सुरनर जस सेवा करे रे, त्रिभुवन पति विख्यात ।
ते पण कर्म विटंबिया रे, तो माणस केई मातरे प्राणी. ॥७॥
दोष न दीजे कोइने रे, कर्म विंटवणा हार ।
दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुख कार रे प्राणी. ॥८॥

इति

---

(५) ★ श्री वणजारा की सज्झाय ★

* मुनि पद्म विजयजी कृत *

नर भव नगर सोहामणो वडभारा रे, पामीने करजे व्यापार
अहो मोरा नायक रे ।
सतावन संवर तणी व० पोठी करजे उदार अहो मोरा. ॥१॥

शुभ परिणामे विचारता व० किरियाणा बहु मूल अहो० ।
मोक्ष नगर जावा भणी व० करजे चित्त अनुकूल अहो. ॥२॥

क्रोध दावानल ओलवे व० माने विषम गिरीराज अहो० ।
ओलंघजे हलवे करी व० सावधान करजे काज अहो. ॥३॥

वंश जाल मायातणी व० नवि करजे विशराम अहो० ।
रेवाडी मनोरथ भट तणी व० पूरणनु नवि काम अहो. ॥४॥

राग द्वेष दोय चोरटा व० वाटमां करशे हेरान अहो० ।
विविध कार्य उल्लाशथी व० ते हरजे रे ठाम अहो मोरा. ॥५॥

एम सहु विघ्न विदारीने व० पहुँचजो शिवपुर वास अहो० ।
क्षय उपशम जे भावना व० पीठे भरिया गुणराश अहो. ॥६॥

क्षायक भावे ते खरो व० लाभ होशे तेह अपार अहो० ।
उत्तम विजय इम कहे व० पद्म नमे वार वार अहो मोरा. ॥७॥

---

(६) ★ मन श्री सज्झाय ★

✻ आनन्दघन जी म. कृत ✻

क्या करूं मन स्थिर नहीं रहता, अधर फिरे मन मेरा रे वारी० ।
इस मन को वेर वेर समझाया, समझ २ मन मेरा रे में. ॥१॥

बैठ कहुंतो मन उठ चलता है, मन दोरा मन धीरारे वारी० ।
पाव पलक मन स्थिर नहीं रहता, कौन पतियारा मन तेरा रे
में. ॥२॥

कूड कपट महा विषयका भरिया, परनारी संग फिरिया रे वारी०
भव भव में जीव हाल भटकतां, फोगट फेरा फिरियारे में. ॥३॥

कुटम्ब कबीलो माल खजाना, इसमें नहीं कोई तेरा रे वारी० ।
सांज भई जब उठ चलेगा, जंगल होगा डेरारे में. ॥४॥

कहत आनन्दघन मन समजावो, मन कायर मन शूरारे वारी० ।
मनका खेल अजर का प्याला, पीवे सो पीवण हारारे वारी०
मैं क्या करूं मन स्थिर नहीं रहता अधर. ॥५॥

———

(७) ★ पुण्य फलनी सज्झाय ★

※ मुनि लावण्य समय कृत ※

(अर्ज—सुग्रीव नयर सोहामण जी)

एक घर घोड़ा हाथीयाजी, पायक संख्या न पार;
म्होटा मन्दिर मालीयांजी, विश्व तणो अधार रे, जीवडा.
दीधाना फल जोय, विण दीधां केम पामीयेजी,
हृदय विमासी जोयरे जीवडा. ॥१॥

भरीयाने सहुंको भरेजी, बुठ्या वरसे मेह;
सुखियाना सहुको सगाजी, दुःखिया शुं नहीं नेहरे
जीवडा. ॥२॥

बेहु नर साथे जनमियाजी, अेवडो अन्तर काय;
एक माथे मुली वहेजी, एक तणे घर राजरे जीवडा. ॥३॥

एक सुखिया दीसे सदाजी, दुःखिया एकज जोय;
सुख दुःख बेहु आतरूंजी, पुण्य तणा फल जोयरे जीवडा. ॥४॥

सेज सुंवाली पालखीजी, भोजन कूर कपुर;
एकने कुकरा ढोकलांजी, पेटने पहोंचे पूर रे जीवडा. ॥५॥

एक घर आंगण मलपतीजी, मीठा बोली रे नार;
एक घर काली कुवडीजी, कोय न चडे घरबार रे जीवडा. ॥६॥

एक चढे घोड़े हंसलेजी, एक आगल हुई जाय;
एक नर पोढे पालखीजी, एक उभराणे पाय रे जीवडा. ॥७॥

एक घर बेटा सुन्दरुजी, राखे घरनां सूत;
एक नर दीसे वांझियाजी, एक कुल खांपण कुपूत रे जी. ॥८॥

एक रेशम टोपली पहेरणेजी, मांथे मोलीडां सार;
एक तणे नहीं पहेरवाजी, ओढण अति सफार रे जीवडा. ॥९॥

एक चिहुँ मांहे जाणियेजी, विश्व मांहे चोशाल;
एकनु नाम न जाणियेजी, नाम होय धनपाल रे जीव. ॥१०॥

दोष म धरजो मानवीजी, दैव न देज्यो रे गाल;
जो वावी आव्या कोद्राजी, तो किम लणशो शालरे जी. ॥११॥

दत्त विण गर्व न कीजियेजी, भोला मुरख लोक;
जिम दीपक तेलज विनाजी, त्रणमां थाये फोकरे जीवडा. ॥१२॥

पात्र कुपात्रनो आंतरोजी, जोज्यो करीने विचार;
शालिभद्र सुख भोगवेजी, पात्र तणे अनुसार रे जीवडा. ॥१३॥

आंण म खंडो जिनतणी जी, शुभ अशुभ फल जाण;
मुनि लावण्य समय भणेजी ए सवी पुण्य प्रमाण रे जी. ॥१४॥

---

(८) ★ तेरह काठियों की सज्झाय ★

(तर्ज—झांझरिया मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार)

सोभागी भाई काठिया तेरे निवार—
काठिया तेरे निवार सोभागी भाई,
उत्तम पदवी तो लहोजी, जय जय जंपे रे संसार;
सौभागी भाई काठिया तेरे निवार. ॥१॥

साधु समीपे आवतांजी, आलस आणे अंग;
धर्म कथा नवी सांभलेजी, मोडे अंग बहु भंग सौ. ॥२॥

बीजो मोह महाबली जी, पुत्र कलत्र शुं लीन;
प्राणी धर्म न आचरेजी, घर धन ने अधीन सौ. ॥३॥

तीजो अवज्ञा काठियोजी, शुं जाणे गुरु ओह;
व्यापारे सुख संपजेजी, कीजे हर्ष तेह सौ. ॥४॥

चौथे मान धरे घणूंजी, मुझ सम अवर कोय;
केम वन्दु जण जण प्रत्येजी, एम मोटी माम मन होय सौ. ॥५॥

पाचमें क्रोध वशे करीजी, छांडे धर्मनां स्थान;
धर्म लाभ मुझने नवी दियोजी, नवी दियो गुरु सन्मान सौ. ॥६॥

छट्ठे जीव प्रमादथी जी, करे मदिरादिक सेव;
गुरुवाणी नवी सद्दहेजी, नवी मानेजिन देव सौ. ॥७॥

सातमें कृपण पणा थकीजी, नावे साधु समीप;
धर्म कथा नवी सांभलेजी, मंडारो धन टोप सौ. ॥८॥

आठमें गुरुभय उपन्योजी, कहेशे नरकनां दुःख;
के कहेशे केम नावियाजी, पामशो कहो केम मोक्ष सौ. ॥९॥

नवमे देहरे आवतांजी, दाखवे शोक विशेष;
घरनां कारज सवी करेजी, धर्मनां काज उवेख सौ. ॥१०॥

अज्ञान दशमो काठियोजी, देव तत्व गुरु तत्व;
धर्म तत्व नवी सद्दहेजी, एम आणे मिथ्यात्व सौ. ॥११॥

अव्याक्षेपक अग्यारमेजी, भल वलतो दिन रात;
प्राणी धर्म न ओलखेजी, समजाव्यो बहु भांत सौ. ॥१२॥

बारमें धर्म कथा तजीजी, कौतुक जोवा जाय;
रात दिवस उभो रहेजी, नयणे नींद न भराय सौ. ॥१३॥

विषय तेरमो काठियोजी, विषय शुं राता लोक;
विषय साकर लेखवेजी, अवर सचेजो फोक सौ. ॥१४॥

सिद्ध क्षेत्र जातां थकांजी, काठिया ओ अंतराय;
द्रव्य भावथी टालियेजी, तो मनो वंछित थाय, सौ. ॥१५॥

तेरह काठिया जिने कह्याजी, समजी वरजो ओह;
कुशल सागर वाचक तणोजी, उतम कहे गुण गेह सौ. ॥१६॥

इति

---

(६) ★ जीवको शीखामण की सज्झाय ★

(तर्ज—धारणी मनावे रे मेघ कुमारने रे)

कांई नवी चेतोरे चित्तमाँ जीवडारे, आयु गले दिन रात;
बात विसारी रे गर्भावासनी रे, कुण कुण ताहरी जात,
कांई नवी चेतो रे चितमां जीवडा रे. ॥१॥

दोहीलो दीसे भव मानव तणो रे, श्रावक कुल अवतार;
प्राप्ति दूरीरे गिरुआ गुरु तणीरे, तुझ न मले वारोवार–
कांई नवी चेतो रे. ॥२॥

तू मत जाणेरे ए धन माहरुं रे, कुण माता कुण तात;
आप सवारथे सहु कोई मल्युं रे, मकर पराई तू तांत-
कांई नवी चेतो रे. ॥३॥

पुण्य विहूणा रे दुःख पामे घणारे, दोष दीये करतार;
आप कमाई रे पुरव भव तणी रे, न मिटे तेह लगार-
कांई नवी चेतो रे. ॥४॥

कठिण करमने अहनिशि जे करे रे, तेहनां फलजे विपाक;
हूं नवी जाणुं रे कुण गति ताहरीरे, ते जाणे वीत राग-
कांई नवी चेतो रे. ॥५॥

ते दुःख सह्यांरे बहु दुर्गति तणांरे, अनंत अनंती वार;
लब्धि कहे रे जे जिनने भजे रे, ते पामे मोक्ष द्वार
कांई नवी चेतो रे. ॥६॥

---

(१०) ★ निद्रा की सज्झाय ★

सुई सुई सारी रेन गमाई, वैरन निद्रा तू कहां से आई-सुई टेक।
निद्रा कहे हूं तो बाली रे भोली, बड़े २ मुनिजन के आंखों में-
ढोली सुई. ॥१॥

निद्रा कहे हूं तो जमकी रे दासी, एक हाथ मुक्तिने दूजे हाथ–
फांसी सुई. ॥२॥

निद्रा कहे हूँ तो कपट की काकी, मद मच्छर माँही नित रहूँ
छाकी सुई. ॥३॥

समय सुन्दर कहे सुनो बाई बनिया, आप डूबे सारी डूब गई
दुनिया सुई. ॥४॥

---

(११) ★ इला पुत्र की सज्झाय ★

नामेला पुत्र जाणिये, धन दत्त शेठनो पूत ।
नटवी देखीने मोहियो नवि आव्यो घर सूत. ॥१॥

कर्म न छूटे रे प्राणीया, पूरव स्नेह विकार ।
निजकुल छंडी रे नट थयो, न आणी शरम लगार कर्म. ॥२॥

एक पुर आव्यो रे नाचवा, ऊंचा वंश विशेक ।
तिहाँ राय जोवाने आविया, मलिया लोक अनेक कर्म. ॥३॥

दोय पग पेरी रे पावड़ी, वंश चढ़ियो गजगेल ।
निराधार ऊपर नाचतो करतो नवा २ खेल कर्म. ॥४॥

ढोल बजावे रे नाटवी, गावे किन्नर साद ।
पावतल धू धरा धम धमे, गाजे अम्बर नाद कर्म. ॥५॥

मनमाँही चिन्तेरे भूपति, लुब्धियो नटवीनी साथ ।
जो नट पड़े रे नाचतो तो नटवी मुज हाथ कर्म. ॥६॥

दानन आपरे भूपति, नट जाण्यो नृप बात ।
हुँ धन वाच्छुरे रायनो, राय वाँच्छे मुज घात कर्म. ॥७॥

तिहाँ एक मुनिवर पेखिया, धन धन साधु अणगार ।
धिक धिक भिख्यारी जीवने, इम पाम्यो वैराग्य कर्म. ॥८॥

संवर भावेरे केवली, ततखिण कर्म खपाय ।
केवल महिमारे सुरकरे, समय सुन्दर गुण गाय कर्म. ॥९॥

इति

---

(१२) ★ आतम-हित सज्झाय ★

छोड़ वृथा अभिमान मूरख छोड़ वृथा अभिमान । टेक.
बड़े २ भूप भये पृथ्वी पर. तेजरूप बलवान
कौन बचा इस काल डाल से, उठ गये नाम निशान—
मूरख छोड़. ॥१॥

भटकत फिरत सदा, विषयन में जैसे मरघट स्वान ।
पलभर बैठ समरण नहीं कीना जासे होत कल्याण-मूछो. ॥२॥

दाम धौल गज रथ अरु सैन्या नारी चन्द्र समान ।
अन्त समय सबही को छोडी जा बैठे समसान मूछो. ॥३॥

अहो मन मूढ़ अब सुध लीजे मेरो कह्यो अत्रमान ।
स्थिरता नन्दन अभय नन्दन को अबही तू पहिचान
मूछो. ॥४॥

---

(१३) ★ समकित की सज्झाय ★

समकित नवि लह्यु रे, एतो रुल्यो चतुर्गति मांही—टेक०
त्रस थावर की करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ।
तीन काल सामायिक करतां, सुध उपयोग न साध्यो
समकित. ॥१॥

झूठ बोलवाको व्रत लीनो, चोरी को पण त्यागी ।
व्यवहारादिकमां निपुण भयो पण, अन्तर दृष्टि न जागी—
समकित. ॥२॥

उरध भुजा करि उंधो लटके भसमी लगाय धूम गटके ।
जटा जूठ शिर मूंडे झूठो, विण सरधा भव भटके—
समकित. ॥३॥

निज परनारी त्याग ज करके, ब्रह्मचारी व्रत लीधो ।
स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नवि सीधो—
समकित. ॥४॥

ब्रह्म क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्य लिंग धर लीनो ।
देवचन्द्र कहे या विधतो हम, बहुत वार कर लीनो सम. ॥५॥

---

(१४) ★ वैराग्योत्पादक सज्झाय ★

* चितानन्द जी कृत *

(राग जगला—कापी)

नर देख तु निश्चय जोई, जगमें नहीं तेरा कोई ।
सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथ के हितकारी
विन स्वारथ शत्रु सोई, जगमें नहीं तेरा कोई, नर देख. ॥१॥

तु फिरत महा मंद माता, विषयन संग मूरख राता ।
निज संग की शुद्ध बुद्ध खोई जगमें. ॥२॥

घट ज्ञान कला नही जाकूं, परनिज मानत सुन ताकूं ।
आखर पछतावा होई जगमें नहीं. ॥३॥

नवि अनुपम नर भव हारो, निज शुद्ध स्वरूप निहारो ।
अन्तर ममता मल धोई जगमें नहीं. ॥४॥

प्रभु चिदानन्द की वाणी, धारत निश्चय जग प्राणी ।
जिम सफल होत भव दोई जगमें. ॥५॥

इति

---

(१५) ★ कर्म की सज्झाय ★

* श्री ऋद्धि हर्ष कृत *

देव दानय तीर्थङ्कर गणधर, हरिहर नरवर सबला ।
कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, सबल हुआ महा निबला रे
प्राणी कर्म समो नहीं कोई. ॥१॥

आदिश्वर ने कर्म हटाव्या, वर्ष दिवस रह्या भूख्या ।
वीरने वारे वर्ष दुःख दीधा, उपन्या ब्राह्मणी कूखेरे प्राणी. ॥२॥

साठ सहस सुत मार्या एकण दिन, जोध जुवान रसाला ।
सगर हुओ महा पुत्रनो दुःखियो, कर्म तणा एह चालारे
प्राणी. ॥३॥

बत्तीस सहस देशांरो साहिब, चक्री सनत कुमार ।
सोलह रोग शरीरमें उपन्या, कर्म कियो तनु छाररे प्राणी. ॥४॥

कर्म हवाल किया हरिचंदने, बेची सुतारा राणी ।
बारे वर्ष लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणीरे प्राणी. ॥५॥

दधि वाहन राजानी बेटी, चावी चंदन बाला. ।
चौपद ज्युं चौवटे वेचाणी, कर्म तणा एह चालारे प्राणी. ॥६॥

सुभूम नामे आठगो चक्री, कर्मे सायर नाख्यों ।
सोले सहस यक्ष ऊभा देखे, पिण किणही नवि राख्यो रे
प्राणी. ॥७॥

ब्रह्मदत्त नामें बारमो चक्री, कर्मे कीधो आंधो ।
इम जाणी प्राणी थे कोई, कर्म कोई मति बांधो रे प्राणी. ॥८॥

छप्पन क्रोड यादव नो साहिब, कृष्ण महाबली जाणी ।
अटवीं मांहा मूओ एकलडो, विल विल करतो पाणीरे प्रा. ॥९॥

पांचे पांडव महा जुझारा, हारी द्रौपदी नारी ।
बारे वर्ष लग बन रड वडिया, भमिया जेम भिखारी रे
प्राणी. ॥१०॥

बीस भुजा दस मस्तक हुता, लच्मणे रावण मार्यो ।
एकलड़े नर सहु जग जीत्या, ते पिण कर्मशुं हार्योरे प्रा. ॥११॥

लच्मण राम महा बलवंता, वली सत्यवंती सीता ।
कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, बीतक बहु तस वीतारे प्रा. ॥१२॥

सतीय शिरोमणी द्रोपदी कहिये, जिण सम अवर न कोई ।
पांच पुरुषनी हुई ते नारी, पूर्व कर्म कमाई रे प्राणी. ॥१३॥

समकित धारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मूसका ।
धर्मी नरने कर्म सतावे, कर्मशुं जोर न किसका रे प्रा. ॥१४॥

आभा नगरी नो जे स्वामी, साचो राजा चन्द ।
माता कीधो पंखी कुकडो, कर्म नाख्यो तस फंदेरे प्राणी. ॥१५॥

ईश्वर देव पार्वती नारी, करता पुरुप कहावे ।
अहनिस महिल मसाण में वासो, भिक्षा भोजन खावे रे
प्राणी. ॥१६॥

सहस किरण सूरज प्रतापी, रात दिवस रहे अटतो ।
सोल कला शशिधर जग चावो, दिन दिन जाय घटतो रे
प्राणी. ॥१७॥

इम अनेक खंड्या नर कर्मे, भांज्या ते पिण साजा ।
ऋद्धि हर्ष कर जोडी विनवे, नमो नमो कर्म महाराज रे
प्राणी. ॥१८॥

इति

---

(१६) ★ मान की सज्भाय ★

❋ उदय रत्नजी कृत ❋

रे जीव मान न कीजिये, माने विनय न आवे रे ।
विनय विना विद्या नहीं, ते किम समकित पावेरे रे जीव. ॥१॥
समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्तिरे ।
मुक्तिनां सुख छे शास्वतां, ते किम लहिये जुक्तिरे रे जीव. ॥२॥
विनय वडो संसारमां, गुण मांहे अधिकारी रे ।
माने गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारी रे रेजीव. ॥३॥

मान कयु`' जो रावणे, तेतो रामे मार्यो रे ।
दुर्योधन गरवे करी, ते अन्ते सवि हार्यो रे जीव. ॥४॥

सूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ।
उदय रत्न कहे मानने, देजो तमे देश वटो रे रे जीव. ॥५॥

इति

---

(१७) ★ माया [कपट] की सज्भाय ★

समकितनु' मूल जाणिएजी, सत्य वचन साक्षात ।
साचामां समकित वसेजी, मायामां मिथ्यात्व रे प्राणी
म करीश माया लगार. ॥१॥

मुख मीठो जूठो मनजी, कूड कपटनो रे कोट ।
जींभे तो जी जी करे जी, चित्तमांही ताके चोट रे प्राणी. ॥२॥

आप गरजे आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास ।
जेह मनशु' राखे आंतरोजी, ए मायानो वासरे प्राणी. ॥३॥

जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ।
मैल न छंडे मन तणोजी, ए मायानुं मूल रे प्राणी. ॥४॥

तप कीधो माया करीजी, मित्रशुं राख्यो रे भेद ।
मल्लि जिनेश्वर जाणजोजी, ते पाम्या स्त्री वेद रे प्राणी. ॥५॥

उदय रत्न कहे सांभलोजी, मेलो मायानी बुद्धि ।
मुक्ति पुरीजावा तणोजी, ए मारग छे शुद्ध रे प्राणी. ॥६॥

इति

---

(१८) ❀ वैराग्य की सज्झाय ❀

परदेशिया में कोण चलेगो तेरी लार, परदेशिया में कौन चलेगो,
चलेगी मेरी माता चलेगी मेरी नार ।
नहीं नहीं हो चेतन जावेगी देहली तक लार पर. ॥१॥

चलेगी मेरी माता कि जाई मेरी लार ।
नहीं नहीं हो चेतन, झूठा है सारा परिवार पर. ॥२॥

चलेगा मेरा भाई, चलेगा मेरा यार ।
नहीं नहीं चेतन, फूकेंगे तोय अग्नि मझार पर. ॥३॥

चलेगा मेरा बेटा, चलेगा परिवार ।
नहीं नहीं हो चेतन, मतलब का है संसार पर. ॥४॥

चलेगा मेरा माल, खजाना परिवार ।
नहीं नहीं चेतन, पडा रहेगा घरबार पर. ॥५॥

चलेगी मेरी फोजाँ, चलेगा दरबार ।
नहीं नहीं हो चेतन, जीतेजी का है सरकार पर. ॥६॥

चलेगी मेरी काया, चलेगा मन सार ।
नहीं नहीं हो चेतन, छोडेंगे तोय मझधार
परदेशिया में कौन चलेगा. ॥७॥

---

(१६) ★ नवकारवालीनी सज्झाय ★

※ रूप विजयजी कृत ※

कहेजो चतुर नर ए कुण नारी, धरमी जनने प्यारी रे ।
जेण जाया बेटा सुखकारी, पण छे बाल कुमारीरे कहेजो. ॥१॥

कोई घर रातीने कोई घर लीली, कोई घर दीसे पीलीरे ।
पंच रूपी छे बाल कुमारी, मन रंजन मत वालीरे कहेजो. ॥२॥

हैडा आगल ऊभी राखी, नयणाशुं बंधाणी रे ।
नारी नहीं पण मोहन गारी, योगीश्वर ने प्यारी रे कहेजो. ॥३॥

एक पुरुष तस उपर ठावे, चार सखी शुं खेले रे ।
एक वेर छे तेहने माथे, ते तस केड न मेलेरे कहेजो. ॥४॥

नव नव नामे सहु कोई माने, कहेजो अर्थ विचारी रे ।
विनयविजय उवझायनो सेवक, रूप विजय बुद्धि सारीरे
कहेजो चतुर नर ए कुण. ॥५॥

---

(२०) ☆ विण झारा की सज्झाय ★

※ आनन्द धनजी म. कृत ※

विणजारो धुतारो कामण गारो, सुन्दर वर काया,
छोड चल्यो विणजारो ।

इणरे कायामें प्रभुजी, पांच पणीहारी,
पानी भरे छे न्यारी न्यारी सुन्दरवर काया. ॥१॥

इणरे कायामें प्रभुजी, सात समुद्र ।
एनो छे नीर मीठो खारी सुन्दरवर काया. ॥२॥

इणरे कायामें प्रभुजी, पांच रतन छे ।
परखे छे परखण हारो सुन्दरवर काया. ॥३॥

इणरे काया में प्रभुजी, नवसो नारियाँ ।
तेनो स्वभाव न्यारो न्यारो सुन्दरवर काया. ॥४॥

खुट गयो खेलने, बुझगई बत्तियां ।
मन्दिर में पडगयो अन्धारो सुन्दरवर काया. ॥५॥

खस गयो थंभोने, पड गई देरियां ।
मिट्टी में मिलगयो गारो सुन्दरवर काया. ॥६॥

आनन्दघन कहे, सुन भाई साधु ।
आवा गमन निवारो सुन्दरवर काया. ॥७॥

इति

(२१) ★ उपदेशक सज्भाय ★

※ कायापर ※

(आनन्द घनजी म. कृत)

समझ नर आयु जावे ज्यूं रेलरे, समझ नर आयु जावे
ज्यूं रेल टेर ।
सीधी रे सडक बनी शिवपुर की, जिस पर चालत रेल रे
समझ. ॥१॥
वरस वरस की बनी, स्टेशन मास मास की झीलरे समझ. ॥२॥
नेम प्रेम की लालटेन है, विन बत्ती विन तेल रे समझ. ॥३॥
रात दिवस अंजन खेंचत है, विन घोडा विन वैलरे समझ. ॥४॥
नाडी रे तार खबर देने को, दश दरवाजा पड्या फेलरे
समझ. ॥५॥
रे मन मूर्ख भ्रमत फिरत है, ज्यूं घाणी को बेलरे समझ. ॥६॥
आनन्दघन कहे, रेमन मूरख तृष्णा वढ़े ज्यूं वेलरे समझ. ॥७॥

इति

---

(२२) ★ उपदेशिक पद ★

दुलहन नारी तू बड़ी बावली, पिया जागे तू सोवे रे ।
पिया चतुर तू निपट अज्ञानी, न जाने क्या होवेरे दु. ॥१॥
आनन्दघन प्रिया दरश पियासे, खोल घूँघट मुख जोवेरे दु. ॥२॥

इति

---

(२३) ★ वैराग्य की सज्झाय ★

※ उदय रत्नजी कृत ※

(तर्ज–शेख उतारो राजा भरथरी)

ऊंचा ते मन्दिर मालिया, सोड वालीने सोतो ।
काढो रे काढो एने सहुकहे, जाणे जन्म्यो न होतो
एकरे दिवस एवो आवशे टेर.

एकरे दिवस एवो आवशे, मने सर्वे जी साले ।
मंत्री मल्या सहु कारमां, तेनो कांई नवि चाले एकरे. ॥१॥

साव सोनाना रे सांकला, पेरण नवा नवा वागा ।
धोला ते वस्त्र एनां कर्मनां, तेतो शोधवा लागा एकरे. ॥२॥

चरु काढिया अति घणा, बीजानो नहीं लेखो ।
खोखरी हांडी एनां कर्मनी, ते तो आगेजी देखो एकरे. ॥३॥

कोना छोरा कोना वाच्छरा, कोना मायने बाप ।
अन्त काले जावे जीव एकलो, साथे पुण्य ने पाप एकरे. ॥४॥

सगीरे नारी एनी कामिनी, ऊभी टुगमुग जोवे ।
तेहनो कांई पण चाले नहीं, बैठी ध्रुसके जी रोवे एकरे. ॥५॥

व्हाला ते व्हाला शुं करो, व्हाला वोलावी वलशे ।
व्हाला ते वनना लाकडा, तेतो साथेजी वलशे एकरे. ॥६॥

नहीं त्रापु नहीं तुवडी, नथी तरवानो आरो ।
उदय रत्न प्रभु इम भणे, भवजल पार उतारो एकरे.
दिवस एहवो अखरो ॥७॥

---

[२४] ★ एकत्व भावना सज्झाय ★

※ गणि समय सुन्दर जी कृत ※

आयो एकेलो एकोई जासी, क्यूं करे इतनी उदासीरे जीव० टेर।
कुटुम्ब मिल्यो तरु खगनी वासे, अवधि प्रभाते उड़जासी रे
जीव आयो. ॥१॥

पुद्गल रे पर पंच लुभायो, मिल मिल वीछड जावे रे जीव०।
गलण पडणरो धर्म कहावे, निश्चल केम ठहरावे रे
जीव आयो. ॥२॥

आछा संयोग मिल्यां सुख माने, हुआ वियोग दुःख-
आणेरे जीव०।
सुख दुःख बेहु झूठारे जाणो, जे निज स्वरूप पीछाणो रे
जीव आयो. ॥३॥

भोग संजोग में लुब्धियो रे भाई, आई वियोगनी साईरे जीव०।
तीर्थपती श्री मुख फरमावे, एमां शंका न कांईरे जीव आ. ॥४॥

एकत्व सुधी भावना भावो, नमीराज ऋषि राई रे जीव०।
शक्रेन्द्र शुं चरचा करीने, मुक्तिपुरी तिण पाई रे जीव आ. ॥५॥

मोह सुभट धीरज गढ़ ढावे, ज्ञान वलिष्ट चूणावेरे जीव० ।
आरति कुलटानो संग छुडावे, समता रतिमन भावे रे
जीव आयो. ॥६॥

साता असाता समपरिणामें, भोगवे ते धन कहावे रे जीव० ।
कर्म खपावी मुक्ति में जावे, जेष्ट सदा गुण गावेरे जीव आ. ॥७॥

इति

[२५] ★ कर्म की सज्झाय ★

रे कर्म गति कौन सके टारीरे, कर्म गती कौन सके टारी ।
जैन दीपक प्रभु आदिनाथ जी, हुवे प्रथम अवतारी
बारे मास अन्न जल नहीं पाया, सहे परीषह भारी कर्म. ॥१॥

सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्रने, वेची पुत्र और नारी ।
ऋण चुकायो ब्राह्मण को और, भर्यो नीचघर वारी कर्म. ॥२॥

पांडव महावीर वलधारी, द्रोपदी नारी हारी ।
सहे वरस वारे वनके दुःख, भ्रमत फिरे ज्यूं भिखारी कर्म. ॥३॥

रावण महाशूर अभिमानी, लक्ष्मण गर्दन मारी ।
वासुदेव सारण में योद्धा, नरक गयो वो मुरारी कर्म. ॥४॥

इस जगमें सब स्वार्थ बन्धु और, मोह जाल है भारी ।
'ज्ञान' कहे बचो कर्म भँवर से, मिले मुक्ति वधू प्यारी कर्म. ॥५॥

इति
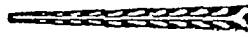
[२६] ★ उपदेशिक पद ★

※ कबीरदास कृत ※

गाडी धीरे धीरे हांक रे सुजाण टेर ।
गाडी म्हारी रंग रंगीली, पांचोई बैल जुताय
बैठण वाली छेल छबीली, हांकण वालो सुजाणरे गाडी. ॥१॥

हाथी छूटो शहरमें रे, पशुवन करीरे पुकार ।
दश दरवाजा जुड्या पड्यारे, निकल गयो असवार रे गा. ॥२॥
गाडी अटकी मध्यमें रे, अटकी मांजल रात ।

आवेला कोई साधु सुज्ञानी, खैंच करेला पार रे गाडी. ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधु, यह पद छे निर्वाण ।
इस पदका जो अर्थ करे छे, वही चतुर सुजाणरे गाडी. ॥४॥

[२७] ☆ वैराग्य पद ☆

इस तन धन की कोन बडाई, देखत नैनो में मिट्टी मिलाई टेर ।
अपने खातिर महल बनाया, आपही जंगल जाकर सोया
इस. ॥१॥
हाड जले जैसे लकडी की मोली, केस जले जैसे घास की पोली
इस. ॥२॥
कहत कबीर सुनो मेरे गुनिया, आप मुहॉ पछे डूब गई दुनिया
इस. ॥३॥

इति

[२८] ★ वैराग्य पद ★

काया लोक सराई रे, तज दिये प्राण । टेर

चलत प्राण काया के साथी, निकल गया निरमोहीं

मैं जाण्यो काया संग चलेगी, वाही कारण काया मल मल धोईरे

तजदिये प्राण. ॥१॥

बैठ सिराणे माता रोवे, बैठ पगांते गोरी ।

भुजा पकड तेरा भाई रोवे, बिछड गई सारस हंस वाकी जोडीरे

तजदिये प्राण. ॥२॥

घरमें तिरियां अपच्छरा छोडी, दोय पुत्र की जोडी ।

माल खजाना यहीं रह गया सब, साथ न चाले तेरे एकभी कोडी रे

तजदिये प्राण. ॥३॥

आठ काठ की बनी गजगजी, बनी काष्ट की घोडी ।

नदी किनारे जाय उतारी, फूंक दीनी जैसे फागुणियां की होलीरे

तजदिये प्राण. ॥४॥

गेली त्रिया रोवण बैठी, बिछड गई मेरी जोडी ।

कहत कबीर सुनो भाई साधु, स्वार्थ की सगाई रे तज. ॥५॥

इति

[२६] ★ वैराग्य पद ★

सुमरन विन गोता खावोगे, खावोगे पछतावोगे टेर–

क्या करनी कर आया जगतमें, क्या करनी कर जावोगे सुन. ॥१॥

गरभावास में कौल किया था, फिर भूल मत–जावोगे सुन. ॥२॥

मुट्ठी बांधकर आया जगतमें, हाथ पसारे जावोगे सुन. ॥३॥

ए देही कागज की पुडिया, खाँड लगे गल जावोगे सुन. ॥४॥

कहत कबीर सुनो साधुजन, प्रभु ध्यानसे तर जावोगे सुन. ॥५॥

इति

---

[३०] ★ काया का पद ★

कायाका पिंजरा डोलेरे, एक श्वांस का पंछी बोलेरे टेर।

आतम नगरी मन मन्दिर, परमातमा जिसके अन्दर

दो नयन है लाल समुन्दर, पापी तू पापको धोले रे काया. ॥१॥

सुत मात तात पतनी का, झगडा है जीते जीका ।
दुनिया में न कोई किसी का, क्यों जन्म को वृथा खोले रे
काया. ॥२॥

यह दुनिया मुसाफिर खाना, जाने से क्या घबराना ।
झूठा है मिलना झुलना, क्यों भेद भँवर को खोले रे
काया. ॥३॥

इति

---

(३१) ★ चेतन की सज्झाय ★

रे चेतन मतकर जोर जवानी को, रे क्षणभर नहींरे भरोसो
जिन्दगानी को रे चेतन । टेर.

खोटी तो दुनिया ने, नाजुक जमानो प्यारे, वखत बडो छे,
बेईमानी को चेतन. ॥१॥

मूँछ मरोड कर बांह संवारे, मुख वचन उच्चारे ।
अभिमानी को रे चेतन. ॥२॥

सुकृत रूपी गहरो संबल लेलो साथे, आगे नहीं छे,
घर नानी को रे चेतन. ॥३॥

वार वार सद्गुरु समझावे नहीं, माने वचन गुरु-
ज्ञानी को रे चेतन. ॥४॥

आनन्दघन कहे सद्गुरु सेवो प्यारे, मारग लेवोनी-
निरवानी को रे चेतन. ॥५॥

इति

---

(३२) ★ काया की रेल का पद ★

(तर्ज—छोड़ छोड़ तू दुःखमय दुनिया.)

इस काया की रेल रेलसे, अजब निराली है—टेर—
नेम धरम की बनाके नाली, अक्कल सड़क उसमें से निकाली ।
मनका कांटा लगा जिधर चाहे, उधर घुमाली है इस काया. ॥१॥

पाप पुराय के पहिए बनाकर, सत्य का लट्ठा खूब चढ़ाकर ।
ज्ञान कमानी खेंच ध्यान की, सांकल डाली है इस काया. ॥२॥

श्वास धुंआ है मुखसे जारी, मोह की लाट बनी हितकारी ।
तनका अंजन लगाकर उसमें, अग्नि जाली है इस काया. ॥३॥

नब्ज का घंटा हरदम हिलता, ये टाइम उस रेल से मिलता ।
बोलकी सीटी लगी, रेल अब आने वाली है इस काया. ॥४॥

अय मुसाफिर क्यों दुःख पाता, प्रभु नामका टिकट न लेता ।
हाथका सिंगल छुटा, रेल अब जाने वाली है इस काया. ॥५॥

तार खबर हिचकी जब आई, काल बदलिया सिरपर छाई ।
रेल "भँवर" गया छूट पड़ा, स्टेशन खाली है इस काया. ॥६॥

(३३) ★ उपदेशक पद ★

(तर्ज—हे वीर वीर तू रटले रे तेरी.)

छोड़ छोड़ तू दुःखमय दुनिया, अंत न रोना होय—टेर—
मेरा मेरा करके म्हाला, पीछे जूता पड़े नहीं भाला ।
आंख उघाड़ी जोने चेतन, अन्त न रोना होय. ॥१॥

कूड़ कपट करी काल गमायो, संसार में आय अड्डो जमायो ।
अब तू करनी ऐसी करले, अन्त न रोना होय. ॥२॥

कुटुम्ब कबीला साथ न जावे, पुण्य पाप दोय लारे जावे ।
ऐसा जानकर धर्म तू करले, अन्त न रोना होय. छो. ॥३॥

मानव केरो जन्म तू पायो, दान पुन्य कछु नाहीं कमायो ।
अवसर पामी करले चेतन, अन्त न रोना होय. छो. ॥४॥

वीर वीर की धुन लगावो, आतम कमल में लब्धि जगावो ।
जयन्त कहे तुम ऐसा करलो, अन्त न रोना होय. ॥५॥

इति

(३४) ★ सज्झाय ★

आ संसार असार रे, जीवडा आ संसार असार—टेर—
मात पिता सुत बैन ने भाई, सहु स्वार्थ की जालरे जीवडा. ॥१॥
धन यौवन घर है दुःखदाई, धर्म तू एक संभाल रे जीवडा. ॥२॥

एक दिवस सब छोड़के जाना, नाहक करे तू धमालरे जीवडा. ॥३॥
तप संयम करो है सुखदाई, छोड़ी सर्व जंजाल रे जीवडा. ॥४॥
आत्म कमल में लब्धि लेवो, रमरोने दीनदयाल रे जीवडा. ॥५॥
जयन्त प्रभु को विनती करत है, भव अटवीसे निकालरे जीव. ॥६॥

इति

---

(३५) ★ सज्झाय ★

तू तो समरण करले मेरे मना, तेरी वीती जाय उमरिया
प्रभु के नाम विना टेर ।
पक्षी पंख विन हस्ति दंत विना, नारी कंत विना ।
वैश्या का पुत्र पिता विहीना, ऐसा पुरुष प्रभु के नाम विना
तू तो. ॥१॥
देह नयण विन रयण चन्द विन, धरती मेघ विना ।
जैसे पण्डित वेद विहीना, ऐसा पुरुष प्रभु नाम विना तू. ॥२॥
कूप नीर विन धेनु क्षीर विन, मन्दिर दीप विना ।
जैसे तरुवर फल विहीना, ऐसे पुरुष प्रभु नाम विना तू. ॥३॥

काम क्रोध मद लोभ जो सारा, छोडी रिषी सन्त जना।
कहे नानक साह सुनो भगवन्ता, यामे नहीं कोई अपना तू. ॥४॥

इति

---

(३६) ★ उपदेशिक सज्झाय ★

※ आनन्दघन जी कृत ※

(तर्ज–धनासरी तीन ताल)

अब हम अमर भये न मरेंगे, अमर भये न मरेंगे अब हम. टेर
या कारण मिथ्यात दियो तज, क्योंकर देह धरेगें अब हम. ॥१॥

राग द्वेष जग बंध करत है, इनका नाश करेंगे।
मर्यो अनन्त कालते प्रानी, सो हम काल हरेंगे अब हम. ॥२॥

देह विनाशी हूं अविनाशी, अपनी गती पकरेंगे।
नासी जासी हम थिरवासी, चोखे हैं निखरेंगे अब हम. ॥३॥

मर्यो अनंतवार विन समज्यो, अब सुख दुःख विसरेंगे।
आनंदघन निपट निकट अक्षर दो, नहीं समरे सो मरेंगे
अब हम. ॥४॥

इति

---

(३७) ★ आत्मनिष्ठात्मक पद ★

(तर्ज—हमीर कल्याण)

राम कहो रहेमान कहो कोऊ, कान कहो महादेव री।
पारसनाथ कहो कोई ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयं मेव री राम. ॥१॥
भाजन भेद कहावत नाना, एक मृतिका रूप री।
तैसे खंड कल्पना रोपित, आप अखंड सरूप री राम. ॥२॥
निजपद रमे रामसो कहिये, रहम करे रहमान री।
हरषे करम कानसो कहिये, महादेव निर्वाण री राम. ॥३॥
परसे रूप पारससो कहिये, ब्रह्म चिहने सो ब्रह्म री।
इह विध साधो आप आनंदघन, चेतनमय निपकर्म री राम. ॥४॥

इति

---

(३८) ★ उपदेशिक पद ★

तर्ज—

आटलो संदेशो मारो, प्रभुजीनो कहेजो । टेर

कायानो देवल मुझने लागे छे काचो, तेनी मालवणी हमने
देजो संदेशो. ॥१॥

काया पड़सेने हंसो क्या जई समासे, ते घर बतलावी ।
अमने कहेजो संदेशो. ॥२॥

तुमारे अमारे ने हमारे तुमारे, जन्मोजन्म प्रीत होजो
संदेशो. ॥३॥

धर्मनी शोभा भूमि सिरपर करता, धन धन तेवा मुनि राजरे
संदेशो मारो प्रभुजी ने. ॥४॥

इति

———

(३६) ★ उपदेशिक सज्झाय ★

(तर्ज—रे पंछी बावरिया.)

भज भज भज भगवाना, कि अब तो मूढ़ मना ।
जाना देश पराया कि, अब तो चेत जरा टेर
दुनिया तो है आनी जानी, दो दिन की है यह महमानी ।
अरे न बन अनजाना, कि अब तो मूढ़ मना–भज. ॥१॥

है ममता का झूठा झगड़ा, छोड़ जगत का सारा रगड़ा ।
लगा प्रभुसे ध्यान, कि अबतो मूढ़ मना भज. ॥२॥

मात पिता भाई सुत नारी, स्वार्थ के हैं सब संसारी ।
सीख गुरु की मान, कि अब तो मूढ़ मना भज. ॥३॥

नेकी के कुछ कर्म कमाले, अपना जीवन सफल बनाले ।
चाहे जो निर्वाण, कि अबतो मूढ़ मना भज. ॥४॥

अमृत जो सच्चा सुख पाना, सत्य धर्म को नित अपनाना ।
कर्म करे कल्याण, कि अबतो मूढ़ मना भज. ॥५॥

इति

---

(४०) ★ उपदेशिक पद ★

(तर्ज—काँई रे गुमान करे जीवडा.)

कहो चेतनजी थाने कुण भरमाया, सुमति रे जावंता कुमति-
भरमाया काँई रे जंजाल करे जीवडा काँई प्रमाद करे जीवडा. ।
जाल किया जीव जमपुर जावे, हाथ पकड़ जम खेंचले जावे
काँई रे जंजाल. ॥१॥

जाल किया जीव धर्म न पावे, लाख चौरासी में गोता खावे ।
काँई रे जंजाल. ॥२॥

आजग है सुपने की कहानी, सुकृत सदा करले रे प्राणी
काँई रे जंजाल. ॥३॥

दिन दिन तेरी घटत आवडदा, प्रभु भजन तू करले रे बन्दा
काँई रे जंजाल. ॥४॥

मुक्ति गयाभव सुधरेला थारो, अंत समय थारो होवेला सुधारो
काँई रे जंजाल. ॥५॥

चिन्दानन्द दास की अर्जी, चरणोमें चित्त राखो प्रभुजी
काई रे जंजाल. ॥६॥

इति

---

(४१) ★ कर्म पर पद ★

(तर्ज—गज़ल)

कर्म तारी कला न्यारी, हजरोने नचावे छे।
चढ़ेजे चकरे तारे, सदा तेने भमावे छे टेर
होय जे काल भिखारी, आज धनवान है भाई
अरे धनवान ने पलमां, झूड़ी भित्ता मंगावे छे कर्म. ॥१॥
हजारो मौज जे करतां, राज महाराज कहवातां।
तजावी राज तू तेने, बुरा बावा बनावे छे कर्म. ॥२॥
करे बलवान ने रोगी, करे तू साधुने भोगी।
ऊंचाथी नीचनी पासे, नीच कार्यो करावे छे कर्म. ॥३॥
घड़ीमां तू रडावे छे, घड़ीमां तू हसावे छे।
कहे शंकर सकल जनने, फंदापां तू फंसावे छ कर्म. ॥४॥

इति

---

(४२) ★ उपदेशिक सज्झाय ★

* बुद्धि सागरजी कृत *

(तर्ज–गुजराती गरवा–चादनी शी खिली)

अरे आ जिन्दगानी मनु भवनी, एले जाय छेरे ।
घड़ी क्षण बीत्यो ते तो, पाछो कबुह न आय छेरे टेर
मन चिन्ता तू कबहुन थातो, पापे भरियो जीव तरसातो
मायामां मस्तानो थई, मकलाय छेरे चेतन मायामां. ॥१॥

जन्म सरणासी नदियां वहती, खर खर चालती एम कहती ।
अस्थिर चंचल सता आयु, धनवय राय छेरे चेतन अथिर. ॥२॥

प्रभु भजन पलवार न कीधो, साधु संतने दान न दीधो ।
विपया रस विष पीने मन, हरखाय छे रे चेतन विपया. ॥३॥

सफल करीले मनुष जन्मारो, आतमराम भजिले तारो ।
भावे बुद्धि सागर चेते तो, सुख थाय छे रे चेतन–
बुद्धि सागर. ॥४॥

———

(४३) उपदेशिक सज्झाय ★

(तर्ज—ऊपर की)

खरेखर सत्य सुं छे, अन्तरमां अवधारजो रे ।
साचुं समभी व्हाला, विषय विकारो बारजो रे टेर
मांट्टीनी मानी जे ऋद्धि, थाशे नहीं तेथी कई सिद्धि
व्हाला समजे वेगे, अन्तर्धन ने धारजो रे खरेखर. ॥१॥
बाह्य विषयमां सुखनी आशा, मोह बुद्धिना जाण तमासा ।
व्हालम समजी साचुं, जीवन व्यर्थ न हारजो रे खरेखर. ॥२॥
जे जे अंशे स्थिरता धारे, तेते अंशे धर्म वधारे ।
तारक भव जल ऋद्धि, पोताने भट तारजो रे खरेखर. ॥३॥
सामग्री पामीने चेतो, चेते ते शिव सुखने लेतो ।
व्हालम शुद्ध स्वरूप तारु ते, दिल विचारजो रे खरेखर. ॥४॥
प्रगटे छे उद्यमथी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगटे व्यक्ति ।
व्हालम बुद्धि सागर, पोताने संभारजो रे खरेखर. ॥५॥

इति

---

(४४) ★ उपदेशिक पद ★

(तर्ज--भजले भजले भजन करले० भा.)

चेतीले झट चेतीले जीव, धार जिनवर धर्म रे।
मायामां मस्तान थातां, लहे न शाश्वत धर्म रे चेती. ॥१॥

अस्तिनास्ति धर्म चेतन, भेदाभेद विचार रे।
अनेकान्त छे आत्मानुं रूप, समजी आतम साररे चेती. ॥२॥

शुद्धरूपी साहिबो छे, अनन्तगुण आधार रे।
शुद्ध ध्याने ध्याववाथी, आवे भवनो पार रे चेती. ॥३॥

आनन्दालय आतमा तू, जाग झटपट जागरे।
बुद्धिसागर आत्मध्याने, धरजे दिलमां रागरे चेती. ॥४॥

इति

---

(४५) ★ अपर सज्झाय ★

(वही देशी)

जाग जीवडा जाग जीवडा, जाणी लेजे धर्म रे ।
भ्रान्तिथी जंजाल राची, शीद्ने बांधे कर्म रे टेर-
भाई भगिनी पुत्र दारा, जूठो सहु परिवार रे
जूठा सगपण दुनियानां, सांच चेतन धाररे जाग जीवडा. ॥१॥

स्वारथिया संसार मांहि, मोहे वनीने अंधरे ।
कर्म बांधे अभिनवां तू, पर रमणता बन्धरे जाग जीवडा. ॥२॥

अनन्त शक्ति साहिबा तू, चेत चेतन रामरे ।
शुद्ध भावे सुख अनंतु, भोगवे गुण धामरे जाग जीवडा. ॥३॥

ज्ञान, दर्शन, चरण भोक्ता, चेतन शुद्ध स्वरूपरे ।
बुद्धि सागर आत्म ध्याने, विघटे भवभय भूपरे जाग जीव. ॥४॥

इति

---

(४६) ★ उपदेशिक पद ★

(तर्ज–व्हाला वीर जिनेश्वर.)

चेतन चतुर थईने मोहे, शुं मुझाय छे रे । टेर
खरेखर धन दाराथी, कहीं न शान्ति थाय छे रे टेर
माया ममताथी शुं फूले, बाह्य दृष्टिथी भवमां भूले
समज थोड़े दहाडे शुं, चउटे लुटाय छे रे चेतन. ॥१॥

अवसर मलीयो शीदने चूके, गद्धानी पेठे शुं तू भूंके ।
अरे जीव मलियो टाणुं, शीदने हारी ज.य छे रे चेतन. ॥२॥

अर्क तणा वाकुला जेवा, तन धन यौवन मन छे तेवां ।
हीरो हाथे चढ़ियो चूकी, क्या भटकाय छे रे चेतन. ॥३॥

चेत चेत आतम तू चटपट, दूर करी दुनियानी खटपट ।
प्रेमे बुद्धि सागर सुन्दरु, संगत सुहाय छे रे चेनत,
पामी अन्तर्धनने, आतमतो हरखाय छे रे चेतन. ॥४॥

इति

———

(४७) ★ सज्झाय ★

(वही देशी)

प्यारा चिद्घन चेतन, शुद्ध स्वरूप तव धारजो रे ।
पामी हीरो हाथे अलबेला, नहीं हारजो रे टेर
निराकार नि.संगी ज्ञानी, अनन्त दानादिकनो दानी
दिल आदर्शे चिदानन्द, अवधार जो रे प्यारा. ॥१॥
उपशम क्षायोपशमनी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगटे व्यक्ति ।
निश्चल ध्याने पोताने, झट तारजोरे प्यारा. ॥२॥
अलख खलकमां साचो समजो, सुरताथी स्हेजेत्यां रमजो ।
विषय विकारो वेगे दिलथी, वारजो रे प्यारा. ॥३॥
कर पोतानी प्रेमे भक्ति,खीलवजे तू निजगुण शक्ति ।
चेतन चेती झटपट कर्म, कलंक विदार जोरे प्यारा. ॥४॥
अलबेलो साहिब तू प्यारो, पोताने पोते ध्यानारो ।
बुद्धि सागर परम प्रभु, संभारजो रे प्यारा. ॥५॥

इति

---

(४८) ☆ आत्मास्वरूप पद ★

(तर्ज–गजल)

समझले चित्तमां हरखी, खरेखर धर्मने परखी ।
मल्युं आ धर्मनुं टाणुं, मल्युं आ धर्मनुं नाणुं. ॥१॥

भणीने जीव शुं भूले, भणीने जीव शूं झूले ।
विचारी वात ले वीरा, धरीले धर्मने धीरा. ॥२॥

जगतमां मोहनी वाजी, रह्यो शुं तेहमां राजी ।
कायर रे मन केम कंपे, कायरनां वेण शुं जंपे. ॥३॥

जगतमां चेताजे व्हेलो, समयतो जाय छे छेलो ।
धरीने जन्म शुं धायुं, धरीने जन्म शुं वायुं. ॥४॥

विवेके वात परखाशे, तदातो सत्य सुख थासे ।
बुद्ध्यब्धि धर्मनी वाटे, चलोने भव्य शिर साटे. ॥५॥

इति

———

(४६) ★ सज्झाय ★

मायामां मनडुं मोह्यु रे, नर भवनो जीवन खोह्युं रे।
जागीने जोतो प्राणीयारे टेरे
मातानी कुखें आवि नवमास ऊधो रह्यो, त्यां दुःख अनन्तो
सह्युं रे जागीने. ॥१॥

बाल पणामां समज्युं न देव गुरु सेवा, रमवाने मीठा मेवा रे।
जागीने. ॥२॥

जुवानीमां जुवतीनो संग बहु खेल्युं, ते धर्मने पड़तु मेल्यु रे।
जागीने. ॥३॥

पैसाने माटे पाप कीधा बहु भारी, ते आत्मने विसारी रे।
जागीने. ॥४॥

सुखे के दुःखे प्राणीने एक वार मरवुं, न कोईने कांई देवु रे।
जागीने. ॥५॥

करीस जेवु पामीस भाई तेवु, न कोई न कांई लेवुरे जागीने. ॥६॥
सुपनानी जूठी बाजीमां रह्युं, शुं माची न कोईने कांई
जाचीने. ॥७॥

बुद्धि सागर भव्यो चेतजो विचारी, समजो नरने नारीरे जागी. ॥८॥

इति

(५०) ★ उपदेशिक सज्झाय ★

(तर्ज—गजल)

जपेंगे ईश की माला, वही नर पार होवेंगे ।
फँसेगे मोह ममता में, वही नर जन्म खोवेंगे टेर
जो करता है तेरा मेरा, नहीं कुछ भान उनको है ।
बांधकर पापकी गठ्ठडी, धर्म से हाथ धोवेंगे जपेंगे. ॥१॥
सुत मात तात और भ्राता, कि जिन्हों को सुख नजर आता ।
सोयेगा मृत्यु सैया पर, नहीं कोई साथ सोवेगे जपेंगे. ॥२॥
यही है रीति दुनिया की, चेतलो हे मेरे भाई ।
नहीं जो अभी चेतेंगे, वही कर्मों को रोवेंगे जपेंगे. ॥३॥
कहत है ज्ञान ईश्वर को, भजे जो प्रेम से इनको ।
मिलेंगे फल उन्हें ऐसा कि, जैसा बीज बोवेंगे. ॥४॥

इति

---

(५१) ★ जीवके ऊपर पद ★

(तर्ज—ओ माणी रे भारी नाडोना छबकारा)

ओ जीवडा रे त्हारी मती तू, केम बगाडे ।
नहीं धर्म प्रेम लगाडे, त्हारी काल घुघरी वागे
ओ जीवडा रे तू नर्क निगोदे फंसियो, तने क्रोध सांपे डसियो
नहीं धर्म ध्यानमां वसीयो त्हारी काल. ॥१॥

ओ जीवडा रे तू विषया रसने पीतो, प्रभु आगलथी नहीं बीतो ।
तने लागशे कर्म पलीतो त्हारी. ॥२॥

ओ जीवडा रे केम मोह निदमां सुता, दुःख रूप पडे शिर जुत्ता ।
तू बने विषयना कुत्ता त्हारी. ॥३॥

ओ जीवडा रे त्हारा श्वास आवेने जावे, परलोकनी वाट बतावे ।
धन कण कंचन रही जावे त्हारी. ॥४॥

ओ जीवडा रे ए देह मुसाफिर खाना, एक दिन थवुं रवाना ।
तू समझी लेने शाणा त्हारी. ॥५॥

ओ जीवडा रे तू मारू मारू माने, त्हारू भान नहीं ठेकाणे ।
गफलतमां राचे शाने त्हारी. ॥६॥

ओ जीवडा रे तने कर्म नाच नचाया, छे नश्वर काची काया।
तू छोड जगतनी माया त्हारी. ॥७॥

ओ जीवडा रे त्हारू चण चण आयु टुटे, त्हारू आत्मधन-
मोह लूटे। अणधार्या प्राणते छूटे त्हारो. ॥८॥

ओ जीवडा रे तू जाग लाग प्रभु धर्मे, न पड तू खोटा कर्मे।
कूटाता नाहक भर्मे त्हारी. ॥६॥

ओ जीवडा रे जोता जोता केई चलिया, जई मसाण मांही मलीया।
थया राख आगथी वलीया त्हारी. ॥१०॥

ओ जीवडा रे जो आतम कमलमां रमशो, तो चौराशी नहीं भमशो।
लब्धि शिव सुखडा वरशो त्हारी. ॥११॥

इति

श्री चन्दराजा अने गुणावली राणीना पत्र

(प्रथम चन्दराजा लिखित पत्र)

(मेतारज मुनिवर धन धन तुम अवतार)

स्वस्ति श्री मरुदेवीना जी, पुत्रने करू प्रणाम,
जेहथी मन वंछित फल्यांजी, उपकारी गुण धाम ।
गुणवंती राणी वांचज्यो लेख उदार टेर ॥१॥

स्वस्ति श्री आभापुरे जी, सर्व उपमा धीर ।
पटराणी गुणावलीजी, सज्जन गुण गम्भीर गुण. ॥२॥

श्री विमलापुर नयर थीजी, लिखित चन्द नरिन्द ।
हित आशीर्वाद वांचजो जी, मनमा धरिय आनन्द गुण. ॥३॥

अहींया कुशलक्षेम छे जी, नाभिनन्दन सुपसाय ।
जगमॉ यश कीर्ति घणीजी, सुरनर सेवे छे पाय गुण. ॥४॥

तुम क्षेम कुशल तणोजी, कागल लखजो सदाय ।
मलवु जे परदेशमॉ जी, तेतो कागलथी रे थाय गुण ॥५॥

समाचार एक प्रीछजो जी, मोहन गुणमणिमाल ।
इहॉ तो सूरजकुण्ड थी जी, प्रगटी छे मंगलमाल गुण. ॥६॥

तेहनी हर्ष वधाईनो जी, राणी ए जाणजो लेख ।
जो मनमाँ प्रेम ज हुवे तो, हर्षज्यो कागल देख गुण. ॥७॥

तुम सज्जन गुण सांभरे जी, क्षण क्षणमाँ सो वार ।
पणते दिन नवि वीसरे जी, कओरनी काँव बेचार गुण ॥८॥

जाणी नहीं मुझ प्रीतडीजी, थइ तू सासुने आधीन ।
ते वातो संभारता जी, शुं कहिये मन थाये छे दीन गुण. ॥९॥

पण तू शुं करे कामिनी जी, शुं कहिये तुझ नार ।
स्त्री होवे नहीं केहनीजी, इम बोले छे संसार गुण. ॥१०॥

सुता वेचे बापने जी, हणे बाघ अने चोर ।
वीहे बिलाड़ी नी आँखथी जी, एहवी नारी निठोर गुण. ॥११॥

चाले बांकी दृष्टि थी जी, मनमाँ नव नवा संच ।
ए लक्षण व्यभिचारी ना जी, पंडित बोले प्रपंच गुण. ॥१२॥

एक समझावे नयणथी जी, एक समझावे रे हाथ ।
एह चरित्र नारी तणाजी, जाणे छे श्री जगनाथ गुण. ॥१३॥

आकाशना तारा गणेजी, तोले सायर नीर ।
पण स्त्री चरित्र न कही सकेजी, सुरगुरु सरिखो रे धीर
गुण. ॥१४॥

कपटी निःस्नेही कहीजी, वलि ते नारी सर्व ।
इन्द्र चन्द्रने भोलव्याजी, आपण करिये शो गर्व गुण. ॥१५॥

नदी नीर गुजवलि तरेजी, कहेवाये छे रे अनाथ ।
एक विषयने कारणेजी, हणे कन्तने निज हाथ गुण. ॥१६॥

गाममाँ बीहे श्वान थी जी, वनमाँ झाले छे वाघ ।
नासे दोरडूँ देखिनेजी, पकड़े फणिधर नाग गुण. ॥१७॥

भर्तृहरि राजा वलिजी, विक्रमराय महाभाग ।
तिण सरखा नारी तणाजी, कदियन पाम्या ताग ॥१८॥

तो राणी तुज शुं कहूंजी, ए छे संसारनी रीत ।
पण हूँ एम नथी जाणतो जी, तुझने एहवी अविनीत गुण. ॥१९॥

तुझने न घटे कामिनी जी, करवो अन्तर एम ।
माहरी प्रीत खरी हतीजी, तू पलटाणी केम गुण. ॥२०॥

मुझथी छानी गोठड़ीजी, सासूथी करी जेह ।
जिम वाव्या तिमते लव्याजी, फल पामी तू एह गुण. ॥२१॥

हूँ व्हालो नथी ताहरे जी, व्हाली सासू छे एक ।
तो वहुने सासू मली जी, मोकले म्हालजो छेक गुण. ॥२२॥

दोष किस्यो तुझ दीजिये जी, जोतां हियड़े विमास ।
भावी भाव मिटे नहीं जी, लखिया कर्म तमास गुण. ॥२३॥

भावी भाव मटे नहीं जी, मनमाँ आवे छे रोष ।
प्रीति दशा संभारतां जी, बहु उपजे छे सन्तोष गुण. ॥२४॥

कागल थोड़ो हित घणो जी, मुझथी लख्युं नवि जाय ।
सागरमाँ पाणी घणुं जी, गागरमाँ न समाय गुण. ॥२५॥

वेऊँनी[1] पेलां नीपजे जी, पीलूं तरुवर तास ।
पहले चौथी मातरा जी, ते छे तू म्हारी पास गुण. ॥२६॥

दो[2] नारी अति सामलीजी, पाणी मांहे वसन्त ।
ते तुझ सजनी देखवाजी, अलजो अति ही धरन्त गुण. ॥२७॥

मठ[3] मांहे तापस वसेजी, विचमां दीजे जीकार ।
तुम अम एहवी प्रीतड़ी जी, जाणे छे किरतार गुण. ॥२८॥

सात[4] पांचने तेरमां जी, मेलवजो दोय चार ।
तेहनी पासे तुम वस्या जी, स्नेह नहीं य लगार गुण. ॥२९॥

ए चारे समस्या तणोजी, करज्यो अर्थ विचार ।
प्रीति दशा जिम उल्लसेजी, प्रगटे हर्ष अपार गुण. ॥३०॥

---

१ जीव २ आंखे ३ मजीठ ४ नर्गीग दाता को पास जीम, ।

कागल वांची एहनोजी, लखजो तुरत जवाब ।
सामुने न जणाव शो जी, जो होय डहापण आप गुण. ॥३१॥

वली हलकारा मुखथकी जी, सहु जाणजो अवदात ।
कागल थी अधिकी घणीजी, कहेशे मुखथी वात गुण. ॥३२॥

इणिपरे चन्द नरे सरे जी, लखियो लेख श्रीकार ।
दीप विजय कहे सांभलोजी, आगल वात रसाल गु . ॥३३॥

★ द्वितीय गुणावन्ती का लिखित पत्र ★

दोहा

श्री वरदा जग वंदीका, शारदा मात दयाल ।
सुरनर जस सेवा करे, जाणी जास रसाल ॥१॥

त्रिभुवन में कीर्ति सदा, वाहन हंस सुहाय ।
जड बुद्धि पल्लव किया, बहु पण्डित कविराय ॥२॥

पुस्तक वीणा कर धरे, श्री अंजारो खास ।
कासमीर भरूं अच्छमें, तेहनो ठाम निवास ॥३॥

ए जगदम्बा पद नमी, वरणवुं बीजो लेख ।
श्रोता ने सुणता थका, प्रगटे हर्ष अशेष ॥४॥

चन्द लेख वांची करी, गुणावली निजनार ।
उत्तर पाछो कंतने, लेख लखे श्री कार ॥५॥

(तर्ज—रे जीव मान न कीजिये)

स्वस्ति श्री विमलापुरे, वीरसेन कुल चन्द रे ।
राज राजेश्वर राजिया, साहिब चन्द नरीन्द रे
वांचजो लेख मुझ वालहा ॥१॥

श्री आभापुर नयर थी, हुकमी दासी सकाम रे ।
लिखित राणी गुणावली, वांचजो म्हारी सलाम रे वांच. ॥२॥

साहिब पुण्य पसाय थी, इहां छे कुशल कल्याण रे ।
व्हालाना खेम कुशल तणा, कागल लखजो सुजाण रे
वांचजो. ॥३॥

समाचार एक प्रीछजो, चन्द्रावंश वजीर रे ।
मुझ दासीनी ऊपरे, कृपा करी वड धीर रे वांचजो. ॥४॥

व्हाला ए लेख जे मोकल्यो, सेवक गिरधर साथे रे ।
खेम कुशले आवियो, पहोंत्यो छे हाथो हाथ रे वांचजो. ॥५॥

व्हालानो कागल देखीने, टलिया दुःखना वृन्द रे ।
पियुने मलवा जेटलो, उपन्यो छे आणन्द रे वांचजो. ॥६॥

सूरज कुंडनी महेरथी, सफल थयो अवतार रे ।
ते सहु कुशल कल्याणना, आव्या छे समाचार रे वांचजो. ॥७॥

सोल वरसना वियोगनुं, प्रगट्युं दुःख अपार रे ।
कागल वांचता वांचता, चाली छे आंसुनी धार रे वांचजो. ॥८॥

जे व्हाला ए लेखमां, लखिया ओलंभा जेहरे ।
मुझ अवगुण जोतां थका, थोड़ा लखिया छे एहरे वांच. ॥९॥

साहिव लखवा जोग छो, हूं सांभलवा जोगरे ।
जेहवा देव तेवी पातरी, साची कहे वात लोभ रे वांचजो. ॥१०॥

समस्या चार लखि तुमे, ते समझी छु स्वाम रे ।
मनमां अर्थ विचारतां, हरखे छे आतम राम रे वांचजो. ॥११॥

ते माटे सावधानी थी, रहजो धरिय उल्लासरे ।
जेहवा तेहवा लोकनो, करशो नहीं विश्वास रे वांचजो. ॥३०॥

सासुने कहेवरावजो, इहां आव्यानो भावरे ।
पछे तेहवा पासा पड़े, तेहवा खेलजो दाव रे वांचजो. ॥३१॥

मुझ अवगुणनी गांठड़ी, नांखजो खारे नीर रे ।
निज दासी करी जाणजो, मुझ नणदीना वीररे वांचजो. ॥३२॥

कागल लखजो फरी फरी, कृपा करी एक मनरे ।
वहेला दरसण आपज्यो, शरीरना करजो जतनरे वांच. ॥३३॥

मुझ वहेनी व्हाली घणी, प्रेमलालच्छी जेहरे ।
तेहने बहु हेते करी, बोलावजो धरी नेह रे वांचजो. ॥३४॥

राधापतिने[१] कर वसे, पंच ज अक्षर लेजोरे ।
प्रथम अक्षर दूरे करी, बचते मुझने देजो वांचजो. ॥३५॥

जो हवे सूरज कुंडथी, विचन थया विशराल रे ।
तो सहु पुण्य पसाय थी, फलशे मंगलमाल रे वांचजो. ॥३६॥

इम लेख लखी गुणावली, प्रेष्यो प्रीतम पासरे ।
दीप विजय कहे चन्दनी, हवे फलशे सहु आसरे वांच. ॥३७॥

१ सुदर्शन